00044379

BOMBAY BRANCH
OF THE
ROYAL ASIATIC SOCIETY.
TOWN HALL, BOMBAY.

Digitized with financial assistance from the
Government of Maharashtra
on 23 January, 2019

00044379

# सत्तमं अङ्गं ।

## उवासगदसाओ ।

### पढमं अज्झयणं ।

तेणं कालेणं तेणं समएणं चम्पा नामं नयरी होत्था[१] । वण्णओ* । पुण्णभद्दे चेइए । वण्णओ† ॥ १ ॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं अज्जसुहम्मे समोसरिए जाव‡ जम्बू पज्जुवासमाणे एवं वयासी । "जइ णं[२], भन्ते, समणेणं भगवया[३] महावीरेणं[४] जाव§ सम्पत्तेणं छट्ठस्स अङ्गस्स नायाधम्मकहाणं अयमट्ठे पण्णत्ते, सत्तमस्स णं, भन्ते, अङ्गस्स उवासगदसाणं समणेणं जाव§ सम्पत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?" ।

---

* See the description in Ov. § 1.
† See the description in Ov. §§ 2—10, also Nir. §§ 1, 2.
‡ See the rest in Nāy. §§ 4—7.
§ See the rest in Ov. § 16, and abbreviated in Nāy. § 8.

---

१ B ऊत्था । २ D णं । ३ B om. ४ B C om.

एवं खलु, जम्बू, समणेणं[१] जाव* सम्पत्तेणं सत्त-
मस्स अङ्गस्स उवासगदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता।
तं जहा। आणन्दे।१। कामदेवे य।२। गाहावइ[२]-
चुलणीपिया[३]।३। सुरादेवे।४। चुल्लसयए।५। गा-
हावइ[२]-कुण्डकोलिए।६। सद्दालपुत्ते।७। महासयए[४]
।८। नन्दिणीपिया[५]।९। सालिहीपिया[६]।१०।

"जइ णं, भन्ते, समणेणं जाव* सम्पत्तेणं सत्त-
मस्स अङ्गस्स उवासगदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता,
पढमस्स णं, भन्ते, समणेणं[७] जाव* सम्पत्तेणं के अट्ठे
पण्णत्ते?" ॥२॥

एवं खलु, जम्बू, तेणं कालेणं तेणं समएणं वा-
णियगामे नामं नयरे[८] होत्था[९]। वण्णओ† ॥ तस्स[१०]
वाणियगामस्स नयरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे[११] दि-
सीभाए दूइपलासए[१२] नामं[१३] चेइए ॥ तत्थ णं वा-

---

* See footnote § on the preceding page.
† See footnote * on the preceding page.

---

१ So A C; B om.; D E समणस्स भगवओ महावीरस्स। २ So A B C D E। ३ B चुलणी०। ४ B महासए। ५ B सालहीपिया, C लक्षितांकपिया, D E सालेइणीपिया। ६ D E नंदणीपिया। ७ D E om. ८ B ...गरे। ९ B ऊत्था। १० B तत्थ। ११ C D E ०पुरच्छिमे। १२ D दूइपलासे, E दूयपलासए। १३ B C D E om.।

णियगामे नयरे[1] जियसत्तू राया होत्था[2]। वण्णओ* ॥ तत्थ णं वाणियगामे[3] आणन्दे नामं गाहावई परिवसइ, अड्ढे[4] जाव† अपरिभूए ॥ ३ ॥

तस्स णं आणन्दस्स गाहावइस्स[5] चत्तारि हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ[6], चत्तारि हिरण्णकोडीओ वड्ढिपउत्ताओ[7], चत्तारि हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ[8], चत्तारि वया[9] दसगोसाहस्सिएणं[10] वएणं होत्था[11] ॥ ४ ॥

से णं[12] आणन्दे गाहावई[13] बहूणं राईसर[14] जाव‡ सत्थवाहाणं बहूसु[15] कज्जेसु य कारणेसु य मन्तेसु[16] य कुडुम्बेसु[17] य गुज्झेसु य रहस्सेसु य निच्छएसु[18]

---

* See the description in Ov. § 11.
† See the rest in Ov. §§ 11 and 102.
‡ See the rest below in § 12, also in Nāy. § 35, Ov. § 15, Kap. § 61.

---

१ A नगरे, B C D E om. २ B C D E om. ३ A om. ४ B इड्ढे। ५ A गाहावयस्स। ६ A B E ०पत्ताओ। ७ B वुड्ढि०, C वुड्ढि०; cf. Marāṭhī वाढ or वाढी and Hindī बाढ़ or बाढ़ी, while बूढ़ी means *'an old woman'*; A B C E ०पत्ताओ। ८ A D ०पत्ताओ। ९ B D E व्वया। १० A D E ०साहस्सीणं। ११ A ऊत्था। १२ D E om. १३ A गाहावइ। १४ B C D E om. रा। १५ A बहूसुं। १६ C om. १७ A कुटंबेसु, B C कुडंबेसु, D E कुटुंबेसु। १८ A निच्छेसु, B नित्यएसु।

य ववहारेसु[1] य आपुच्छणिज्जे[2] पडिपुच्छणिज्जे, स-यस्स[3] वि य णं[4] कुडुम्बस्स[5] मेढी पमाणं[6] आहारे आलम्बणं[7] चक्खू[8], मेढीभूए जाव*[9], सव्वकज्जवड्ढा-वए[10] यावि[11] होत्था ॥ ५ ॥

तस्स णं आणन्दस्स गाहावइस्स[12] सिवनन्दा[13] नाम भारिया होत्था, अहीण जाव† सुरूवा। आणन्दस्स गाहावइस्स इट्ठा, आणन्देणं गाहावइणा सद्धिं अणु-रत्ता अविरत्ता इट्ठा[14], सद्द[15] जाव‡ पञ्चविहे माणु-स्सए कामभोए पच्चणुभवमाणी[16] विहरइ ॥ ६ ॥

तस्स णं वाणियगामस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे[17] दिसीभाए एत्थ[18] णं कोल्लाए[19] नामं सन्निवेसे[20]

---

* See the rest in Nāy. § 18.

† See the rest in Ov. § 12.

‡ See the rest in Ov. § 12, and Nāy. § 126.

---

१ C विव०। २ B D आपुच्छिणिज्जे। ३ D E सायस्स। ४ C विसाणं, D sec. m. वयणं। ५ A कुटंबस्स, D E कुटुंबस्स, C कुडंवस्स। ६ D मेढिभूते, E मेढिभूए for मेढी प्रमाणं। ७ B D E आलंबणे। ८ A C D E चक्खु। ९ A B C D E om. १० A ०वढावए। ११ E आवि०। १२ E om. १३ D E सिवाणंदा। १४ A इट्ठे सद्दे। १५ A B C D E पच्चणुभ०। १६ C D E ०च्छि०। १७ A तत्थ। १८ E कोल्लागए। १९ B C संणिवेसे।

त्था, रिद्धत्थिमिय[1] जाव*[2] पासादीए[3] ४[4] ॥ ७ ॥ तत्थ णं कोल्लाए सन्निवेसे[5] आणन्दस्स गाहावइस्स बहुए[6] मित्तनाइनियगसयणसम्बन्धिपरिजणे[7] परिवसइ, अड्ढे जाव† अपरिभूए ॥ ८ ॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं[8] महावीरे[9] जाव‡ समोसरिए। परिसा निग्गया। कूणिए[10] राया जहा तहा[11]§ जियसत्तू[12] निग्गच्छइ, २त्ता जाव‖ पज्जुवासइ[13] ॥ ९ ॥

तए णं से आणन्दे गाहावई[14] इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे, "एवं खलु समणे[15] जाव¶ विहरइ, तं

---

* See the rest in Ov. § 1.

† See footnote † on p. २.

‡ See the rest in Ov. § 38, also in Nāy. § 129, and Nir. § 3. For another, fuller complement, see Bhag. pp. 306, 307.

§ Supply the whole account, *mutatis mutandis*, from Ov. §§ 39-54.

‖ See the rest in Nāy. § 131, Bhag. p. 259, Nir. § 4.

¶ See above, footnote § on p. १.

---

१ C रिद्धत्थमिइय, D E रिद्धिस्थमिए। २ C D E om. ३ C पासादिया, A B पासादिए। ४ B D E om. ५ B C संणिवेसे। ६ C वहवे, D वहवे। ७ A °णाय°, B D C E °णाइ°; B C D E °णियग°; A °संबंध°; A C °परियणे। ८ A om. ९ A कुणिए, E कोणिए। १० E om. ११ E adds राया। १२ A पज्जवासइ। १३ A D E गाहावइ। १४ D E add भगवं।

महाफलं[1], गच्छामि णं जाव* पज्जुवासामि[2]" सम्पेहेइ, २त्ता ण्हाए[3] सुद्धप्पावेसाइं[4] जाव[5]† अप्प हग्घाभरणालङ्कियसरीरे[6] सयाओ[7] गिहाओ पडि- णिक्खमइ[8], २त्ता सकोरेण्टमल्लदामेणं[9] छत्तेणं धरिज्ज- माणेणं[10] मणुस्सवग्गुरापरिक्खित्ते[11] पायविहारचारे- णं[12] वाणियगामं[13] नयरं[14] मज्झं मज्झेणं निग्गच्छइ, २त्ता जेणामेव[15] दूइपलासे[16] चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, २त्ता तिक्खुत्तो आयाहिणं[17] पयाहिणं करेइ, २त्ता वन्दइ नमंसइ जाव* पज्जुवासइ[18] ॥ १० ॥

तए णं समणे भगवं महावीरे आणन्दस्स गाहा

---

* See footnote ‖ on the preceding page.
† See the rest in Kap. §§ 66, 104, Ov. § 17.

---

१ A B add जाव। २ A पज्जवासामि। ३ E गहाये। ४ A सुधपवे०, C ०प्पवेसा। ५ A B C D E om. ६ B om. भरणालङ्कियसरीरे, D E om. लङ्कियसरीरे। ७ B सहातो, D सातो, E साओ। ८ C पडिणिगमइ, E ०डिनि०। ९ C कोरिं- टिक०, A D E कोरंट०। १० C धारि०। ११ C D E माणु०। १२ A ०विहारे चा०। B पाद०, D पाइ०। १३ E ०गामं। १४ B णगरं। १५ C जेणेव। १६ A E दूय०। १७ B D E om. आयाहिणं पयाहिणं करेइ २त्ता। १८ A पज्जवासइ।

...स्स[1] तीसे य महइमहालियाए[2] परिसाए[3] जाव[*]। ...कहा[†]। परिसा पडिगया राया य[4] गए[5] ॥ ...॥

तए णं से आणन्दे गाहावई[6] समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तिए धम्मं सोच्चा[7] निसम्म हट्ठतुट्ठ[8] जाव[‡] एवं वयासी[11]। "सद्दहामि णं, भन्ते, निग्गन्थं[12] पावयणं, पत्तियामि णं, भन्ते, निग्गन्थं पावयणं, रोएमि णं, भन्ते, निग्गन्थं पावयणं[13], एवमेयं भन्ते, तहमेयं भन्ते, अवितहमेयं भन्ते, इच्छियमेयं[14] भन्ते, पडिच्छियमेयं भन्ते, इच्छियपडिच्छियमेयं[15] भन्ते, से जहेयं[16] तुब्भे वयह[17], त्ति कट्टु जहा णं देवाणुप्पियाणं

---

* See the rest in Ov. § 56, and Nāy. § 132.

† See the rest in Nir. § 4, and Bhag. p. 271. § 50.

‡ See the rest in Nāy. § 23, Ov. § 17, Kap. § 5, Bhag. p. 260.

---

१ A गाहावयस्स। २ A has only महाय, B om. whole, C om. महइ, D E om. महालियाए। ३ A B D E om. ४ C D E om. ५ D E ०कहाए। ६ A B om., E pref. वि। ७ A गया (plur.), D E गओ। ८ D E ०वइ। ९ A सुच्चा। १० A D E om. तुट्ठ। ११ C वदासी। १२ C निग्गंथे पावयणे। १३ B C have इ instead of पत्तियामि, etc.; D E om. entirely. १४ C om. इच्छियमेयं भन्ते, पडिच्छियमेयं भन्ते। १५ D E om., B C D E add जाव। १६ D जहेहं। १७ B C D वदह।

अन्तिए बहवे राईसरतलवरमाडम्बियकोडुम्बियसे
सत्थवाहप्पभिइया[१] मुण्डा[२] भवित्ता आगाराओ
णगारियं पव्वइया[३], नो खलु अहं तहा संचाए
मुण्डे जाव* पव्वइत्तए। अहणं[४] देवाणुप्पियाणं अ-
न्तिए पञ्चाणुव्वइयं[५] सत्तसिक्खावइयं[६] दुवालसविह
गिहिधम्मं[७] पडिवज्जिस्सामि। अहासुहं[८], देवाणुप्पि-
या[९], मा पडिबन्धं करेह[१०] ॥ १२ ॥

तए णं से आणन्दे गाहावई[११] समणस्स भगवओ
महावीरस्स अन्तिए तप्पढमयाए थूलगं[१२] पाणाइवा-
यं[१३] पच्चक्खाइ[१४]। "जावज्जीवाए दुविहं तिविहेणं न
करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा" ॥ १३ ॥

तयाणन्तरं[१५] च णं थूलगं[१६] मूसावायं पच्चक्खाइ
"जावज्जीवाए दुविहं तिविहेणं न करेमि न कार-
वेमि मणसा वयसा कायसा" ॥ १४ ॥

---

* Supply the rest from the immediately preceding sentence.

---

१ A राइस्र०; B E ०कोडंबिय०, D ०कोटुंबिय०; B ०सिट्ठि०, C ०सिट्ठासेणावइसत्थ०, D ०सेट्ठिय०; B ०भिईयो। २ A B C मुंडे, D E om. मु० भ०। ३ D adds जाव पव्वतिता, E जाव पव्वेइत्ता। ४ B अहं नं, A C अहन्नं। ५ D पंचाणुव्वयं। ६ C E ०सिक्खवयं। ७ A गिह०। ८ E जहा०। ९ E om. १० A करेहि। ११ A D E ०इ। १२ So A E a c e, B थूलं, C D थूलयं। १३ C पा-णायवायं। १४ D E ०क्खामि। १५ B D तदा०। १६ So A E; B C D थूलयं।

तयाणन्तरं[1] च णं थूलगं[2] अदिन्नादाणं[3] प
क्खाइ[4]। "जावज्जीवाए[5] दुविहं तिविहेणं न करे
न कारवेमि[6] मणसा वयसा कायसा" ॥ १५ ॥

तयाणन्तरं[7] च णं सदारसन्तोसीए[8] परि
करेइ[9]। "नन्नत्थ एक्काए[10] सिवनन्दाए[11] भारि
अवसेसं सव्वं मेहुणविहिं[12] पच्चक्खामि[13] ३* "

तयाणन्तरं[14] च णं इच्छाविहिपरिमाणं[15]
णे[16], हिरण्णसुवण्णविहिपरिमाणं[17] करेइ। "
उहिं[18] हिरण्णकोडीहिं[19] निहाणपउत्ताहिं[20]

---

* Supply मणसा वयसा कायसा here and in the followi

---

१ C D E तदा० । २ B D थूलयं । ३ C
०क्खामि । ५ C D E om. ६ B ०ति ।
८ B C ०संतोसिते, A D E ०संतोसिए,
word in § 48, as gen. sing. ; the c
the two Sanskrit equivalents सन्
सन्तोषिः = सन्तुष्टः, apparently point
readings: सन्तोसियस्स and सन्तोसीए ।
B एकाए, C इक्काए, D E णस्सत्थेक्का
सिवाणंदाए । १२ A ०विहं, C मैथुण०
१४ B तदा० । १५ A ०विह०, E
१६ A C करेइ । १७ A ०विध०, D ०
१९ A om. हिरण्ण । २० A निहाणे,
adds कोडीहिं after it.

पउत्ताहिं[1], चउहिं पवित्थरपउत्ताहिं[2], अवसेसं
हिरण्णसुवण्णविहिं[3] पच्चक्खामि[4] ३" ॥ १७ ॥
याणन्तरं[5] च णं चउप्पयविहिपरिमाणं[6] करेइ,
त्थ चउहिं वएहिं दसगोसाहस्सिएणं[7] वएणं,
सं सव्वं[8] चउप्पयविहिं[9] पच्चक्खामि[10] ३" ॥ १८ ॥
णन्तरं[11] च णं खेत्तवत्थुविहिपरिमाणं[12] करेइ।
पञ्चहिं हलसएहिं नियत्तणसइएणं[13] हलेणं,
व्वं खेत्तवत्थुविहिं[14] पच्चक्खामि[4] ३" ॥ १९ ॥
न्तरं[5] च णं सगडविहिपरिमाणं[15] करेइ।
ञ्चहिं सगडसएहिं दिसायत्तिएहिं[16], पञ्चहिं
संवाहणिएहिं[17], अवसेसं सव्वं[18] सगड-
ामि[4] ३" ॥ २० ॥
च णं वाहणविहिपरिमाणं[15] करेइ।
ाहणेहिं[19] दिसायत्तिएहिं[16], चउहिं

---

E om. पउत्ताहिं। २ D E insert माण
°पत्ताहिं। ३ A C D °विहं। ४ A °इ,
६ D °प्पद°। ७ A °हस्सीणं। ८ A
° A B C °इ। ११ B C तदा°। १२ A
D E om. विहि। १३ A °सएणं। १४
हं। १५ A °विह°। १६ A दिसाइत्ति°,
D E सगडी°। १८ D E a c e संवह-
२० A B °विहं। २१ A B read
णेहिं, चउहिं संवाहणिएहिं, C चउहिं
he rest.

वाहणेहिं संवाहणिएहिं[1], अवसेसं सव्वं[2] वाह
विहिं[3] पच्चक्खामि[4] ३[5] ” ॥ २१ ॥

तयाणन्तरं च णं उवभोगपरिभोगविहिं[6] पच्चक्
एमाणे[7], उल्लणियाविहिपरिमाणं[8] करेइ । “न
एगाए[9] गन्धकासाईए[10], अवसेसं सव्वं उल्लणिया
पच्चक्खामि[11] ३ ” ॥ २२ ॥

तयाणन्तरं[12] च णं दन्तवणविहिपरिमाणं[13]
“नन्नत्थ एगेणं अल्लहट्ठीमहुएणं[14], अवसेसं[15]
विहिं[16] पच्चक्खामि[17] ३ ” ॥ २३ ॥

तयाणन्तरं[12] च णं फलविहिपरिमा
“नन्नत्थ[18] एगेणं खीरामलएणं[19], अव
हिं[20] पच्चक्खामि[17] ३ ” ॥ २४ ॥

---

१ A संवह०। २ A om. ३ A वहणवि
०क्खाइ, B ०क्खाति। ५ A B give it i
कायसा। ६ A ०विहं, D विधिं। ७ A B
क्खामि तया० णं माणे उल्ल०, E पच्चक्खामि तय
८ A B उल्लणिगा, also a c e; A ०वि
९ E एगेणं। १० A ०कसाइए। ११ A I
तदा०। १३ A B दंतण०। A ०विहं पच्च
पच्चक्खाइ। १४ A ०लट्ठं०। १५ C adds
D दंतण०। १७ A B C ०क्खाइ। १८
adds णं। २० B D क्षीर०, a c e hav
have खीर; A ०मल्लेणं। २१ E add

तयाणन्तरं च णं अब्भङ्गणविहिपरिमाणं[1] करेइ।
न्नत्थ सयपागसहस्सपागेहिं तेल्लेहिं[2], अवसेसं
भङ्गणविहिं[3] पच्चक्खामि[4] ३" ॥ २५ ॥
तयाणन्तरं च णं उव्वट्टणविहिपरिमाणं[5] करेइ।
त्थ एगेणं सुरहिणा[6] गन्धट्टएणं[7], अवसेसं उव्व-
हिं[8] पच्चक्खामि[9] ३" ॥ २६ ॥
णन्तरं च णं मज्जणविहिपरिमाणं[10] करेइ।
अट्ठहिं उट्टिएहिं[11] उदगस्स घडएहिं[12], अवसेसं
हिं[13] पच्चक्खामि[14] ३" ॥ २७ ॥
त्तरं[15] च णं वत्थविहिपरिमाणं करेइ।
[16] खोमजुयलेणं[17], अवसेसं वत्थविहिं[18]
३" ॥ २८ ॥
च णं विलेवणविहिपरिमाणं[19] करेइ।

---

; A °विहं। २ B om., A C तिल्लेहिं।
४ A D E उवटणा°, C उव्वट्टणा°; A
सुरभिणा। ६ So A B a; but C c e
णं, D गंधरूएणं; all Gaudians have
*flour, meal*, especially of wheat.
ट्टिएहिं। ९ A B C घडेहिं, but D E a c
ns have घड़ा or घड़ो, not घड़। १० A
ख्खाति, C °क्खाइ। १२ B तदा°। १३
णं। १४ D E खोमयजुयलेणं। १५ A
ह°, B E °विहिं परि°।

"नन्नत्थ अगरुकुङ्कुमचन्दणमादिएहिं[१], अवसेसं वि
वणविहिं पच्चक्खामि[२] ३" ॥ २९ ॥

तयाणन्तरं[३] च णं पुप्फविहिपरिमाणं[४] करे
"नन्नत्थ एगेणं सुद्धपउमेणं मालइकुसुमदामेणं[५]
अवसेसं पुप्फविहिं[६] पच्चक्खामि[२] ३" ॥ ३० ॥

तयाणन्तरं[७] च णं आभरणविहिपरिमाणं[८]
"नन्नत्थ मट्ठकणेज्जएहिं[९] नाममुद्दाए[१०] य,
आभरणविहिं[११] पच्चक्खामि[१२] ३" ॥ ३१ ॥

तयाणन्तरं[३] च णं धूवणविहिपरिमाणं
"नन्नत्थ अगरुतुरुक्कधूवमादिएहिं[१४], अव
विहिं[१५] पच्चक्खामि[१२] ३" ॥ ३२ ॥

तयाणन्तरं[३] च णं भोयणविहिप
माणे[१७], पेज्जविहिपरिमाणं[१८] करेइ।

---

१ A अगरुचंदणकुंकुम०, a c e अगुरु०। आदि is always used as a tatsama
२ A B ०क्खाति, C ०क्खाइ। ३ B D तदा
B ०विहिं परि०। ५ A मालइं०, C मा
D E ०दामगेण। ६ A B C ०विहं, D
८ A C ०विह०, D ०विधि०। ९ D E
१० So A B C a c e, D E ०मुद्दोएहिं।
१२ A B C ०क्खाइ। १३ A ०विहं, D
इएहिं। १५ A ०विहं। १६ A B ०विह
करेइ माणे, C करेइ। १८ So also a c
C om.; A ०विहं परि०। १९ C एगे

पेज्जाए[१], अवसेसं पेज्जविहिं[२] पच्चक्खामि[३] ३"

३॥

तयाणन्तरं[४] च णं भक्खविहिपरिमाणं[५] करेइ।

न्नत्थ एगेहिं घयपुण्णेहिं[६] खण्डखज्जएहिं वा[७], अव-

भक्खविहिं[८] पच्चक्खामि[९] ३"॥ ३४॥

ाणन्तरं[४] च णं ओदणविहिपरिमाणं[१०] करेइ।

कलमसालिओदणेणं[११], अवसेसं ओदणवि-

क्खामि[९] ३"॥ ३५॥

त्तरं[४] च णं सूयविहिपरिमाणं[१२] करेइ।

लायसूयेण[१४] वा मुग्गमासस्सूयेण[१५] वा,

हिं[१३] पच्चक्खामि[१६] ३"॥ ३६॥

च णं घयविहिपरिमाणं करेइ। "न-

[१७] गोघयमण्डेणं, अवसेसं घयविहिं

"॥ ३७॥

---

२ A पिज्जिविहिं, B पिज्जिविहं। ३ A B
तदा०। ५ So A B C a c e, but D E
पुन्नेहिं। ७ A या। ८ E भक्खणविहिं।
१० C E and a c e ओयण०। ११
A उद्दणविहिं, D °विधिं। १३ A B C
४ A कलय०। १५ A C °सूएणं। १६
७ C सारदिएण, D E सारएणं। १८ A

तयाणन्तरं[१] च णं सागविहिपरिमाणं[२] करेइ। "
न्नत्थ वत्थुसाएण[३] वा सुत्थियसाएण[४] वा मण्डुक्कियर
एण वा, अवसेसं सागविहिं[५] पच्चक्खामि[६] ३" ॥ ३
तयाणन्तरं[७] च णं माहुरयविहिपरिमाणं[८] करे
"नन्नत्थ एगेणं पालङ्गामाहुरएणं[९], अवसेसं माह
विहिं[१०] पच्चक्खामि[६] ३" ॥ ३९ ॥
तयाणन्तरं[११] च णं जेमणविहिपरिमाणं[११]
"नन्नत्थ सेहंवदालियंवेहिं[१२], अवसेसं जेम
पच्चक्खामि[६] ३" ॥ ४० ॥
तयाणन्तरं[७] च णं पाणियविहिपरिमा
"नन्नत्थ एगेणं अन्तलिक्खोदएणं[१५], अव
विहिं[१६] पच्चक्खामि[६] ३" ॥ ४१ ॥

---

१ B D तदा०। २ D ०विधि०। ३ So
B भचु०, C चुचु०, a चूचु०, c भूभु०, e चूचू०, par
वत्थआ or बाथू; c e add तुम्बसाए त्ति (see
त्थिय०, D E सोतत्थिय०, paraph. अगथीये
B D ०क्खाति। ७ A B D तदा०। ८ A
९ A पालका, B C पालंका०; see footnote
A B ०मधुरतेणं। १० B ०विहं, D ०
A B ०विहिं परि०। १२ So also comm
A B जिमण०; D ०विधिं। १४ B ०वि
१६ D ०विधिं।

तयाणन्तरं[1] च णं मुहवासविहिपरिमाणं करेइ। न्नत्थ पञ्चसोगन्धिएणं[2] तम्बोलेणं, अवसेसं मुह-सविहिं[3] पच्चक्खामि[4] ३" ॥ ४२ ॥

तयाणन्तरं[1] च णं चउव्विहिं[5] अणट्ठा दण्डं[6] पच-ाइ। तं जहा। अवज्झाणायरियं[7], पमायाय-हिंसप्पयाणं[8], पावकम्मोवएसे[9] ॥ ४३ ॥

खलु[11] "आणन्दा" इ[12] समणे भगवं महावीरे [13] समणोवासगं एवं वयासी। "एवं खलु, आ-णोवासएणं अभिगयजीवाजीवेणं[14] जाव[15] णज्जेणं[16] सम्मत्तस्स[17] पञ्च अइयारा पेयाला न समायरियव्वा। तं जहा[18]। सङ्का,

---

। २ C °सेागंधणं। ३ B मुहवासकविधिं। । ५ A चउविहिं, E चउविहं, C वयविहं। , D E अणत्थ°। ७ C अवज्झाया°। ८ D दाणं। १० A B °वदेसं, C °वएसं। ११ A १२ A हि, B C D ई, a c e इ। १३ B A °जीवे, om. णं। १५ D E om. जाव, formula उवलद्धपुण्णपावेणं आसवसंवरनि-मुक्खकुसलेणं असहिज्ज[sic]देवासुरनागसुवण्ण-जक्खरक्खसकिन्नरकिंपुरिसगरुलगंधव्वमहोरगाइएहिं देवगणेहिं निग्गं-Dv. §124. १६ A B अणतिक्कमणिज्जेणं, अणतिक्कमणिज्जेणं। १७ A सम्मत्तस्स।

कङ्खा, विइगिच्छा[1], परपासण्डपसंसा[2], परपासण्ड
संथवे ॥ ४४ ॥

तयाणन्तरं[3] च णं थूलगस्स[4] पाणाइवायवेरमण
समणोवासएणं पञ्च अइयारा[5] पेयाला[6] जाणियव्व
न समायरियव्वा । तं जहा[7] । बन्धे[8], वहे, छविच्छे
अइभारे, भत्तपाणवोच्छेए । १ ॥ ४५ ॥

तयाणन्तरं[10] च णं[11] थूलगस्स[12] मुसावाय
स्स[13] पञ्च अइयारा[14] जाणियव्वा, न समाय
तं जहा[7] । सहसाभक्खाणे[14], रहसाभक्ख
दारमन्तभेए, मोसोवएसे[15], कूडलेहकर
४६ ॥

---

१ B विगंछा, C वितिगंछा । २ A °पासंडी° ।
तदा° । ४ A थूलवस्स, B थूलस्स, C D E थू
दि° । ६ A इतियारा, B C तियारा om. अ,
पियाला । ७ B om. ८ So also a c e, but A
छविच्छेदे, E वहबंधच्छविच्छेए; see however
on the passage. १० A B D तदा° । १
E insert थूलगमुसावायवेरमणस्स पंचविहे प
लिअं, गोवालिअं, भोमालिअं, नासावहारे, कूड
संधिकरणे । the comm. gives this pas
१२ A B C D E थूलग, om. स्स । १३
१४ A D c सहस्सा°, a e सहसा अब्भक्खाणे
रहस्स°; a c रहसा अब्भक्खाणे । १६ D

तयाणन्तरं[1] च णं थूलगस्स[2] अदिण्णादाणवेर-
णस्स[3] पञ्च अइयारा[4] जाणियव्वा, न समायरि-
व्वा। तं जहा[5]। तेणाहडे, तक्करप्पओगे[6], विरुद्ध-
रज्जाइक्कमे[7], कूडतुल्लकूडमाणे[8], तप्पडिरूवगववहारे[9]
॥ ४७ ॥

[1]णन्तरं[1] च णं सदारसन्तोसीए[10] पञ्च अइ-
जाणियव्वा, न समायरियव्वा। तं जहा[11]।
[1]रिग्गहियागमणे[12], अपरिग्गहियागमणे, अ-
[13], परविवाहकरणे[14], कामभोगा तिव्वा-
। ४ ॥ ४८ ॥

च णं इच्छापरिमाणस्स समणोवास-
[15] जाणियव्वा, न समायरियव्वा।

---

। २ A B C D E थूलग, om. स्स। ३ D
m. °वेरमण°। ४ A B इयारा, D अतिचारा।
C a c e °पओगे। ७ B °क्कमणे। ८ So E
°तुल°। ९ A °रूयववहारे, B °विवहारे।
a c e संतोसिय त्ति, perhaps pointing to
स्स, see footnote to § 16. ११ B C D
य°। १३ C a c e अनंग°। १४ A C
१५ So A B (abl. for loc.), C °भोए
a c e °भोगति°। १६ A B C D तदा°।
तिचारा।

तं जहा[१]। खेत्तवत्थुपमाणाइक्कमे[२], हिरण्णसुवण्णपमा
णाइक्कमे[३], दुपयचउप्पयपमाणाइक्कमे[४], धणधन्नपम
णाइक्कमे[५], कुवियपमाणाइक्कमे[५]। ५ ॥ ४९ ॥

तयाणन्तरं[६] च णं दिसिवयस्स[७] पञ्च अइयार
जाणियव्वा, न समायरियव्वा। तं जहा[१]। उड्ढदि
पमाणाइक्कमे[९], अहोदिसिपमाणाइक्कमे[१०], तिरिय
सिपमाणाइक्कमे[१०], खेत्तवुड्ढी[११], सइअन्तरद्धा[१२]
५० ॥

तयाणन्तरं[१३] च णं उवभोगपरिभोगे दुवि
तं जहा[१३]। भोयणओ य[१४] कम्मओ य। तत्थ[१५]
णओ समणोवासएणं पञ्च अइयारा[१६] जा

---

१ B C D E om. २ The above is the
five offences in A and B; it agrees on
§§ 17-19; but C a c e place No. 4
दुपय०, and D E place No. 4 धण० be
A B C खित्त०, e °परि०। ३ D E °परिमा
also A in all five cases. ५ A कुव्वइपम
६ A B D तदा०। ७ C D E दिसिविदिसि
८ D अतिचारा। ९ A उड्ढंदिसि०, C D
माण०; B E °इक्कमे, A throughout
माण०। ११ A B C D E खेत्तवुड्ढि; bef
दिसिपमाणाइक्कमे, E चउदिसिपरिमाणाइ
सइअन्तरद्धा as a compound word.
A B C D E om. १४ C D E om
तत्थ णं। १६ A B C इयारा om. अ,

मायरियव्वा। तं जहा[१]। सचित्ताहारे[२], सचित्त-
डबद्धाहारे[३], अप्पउलिओसहिभक्खणया[४], दुप्पउ-
ओसहिभक्खणया[५], तुच्छोसहिभक्खणया। कम्मओ
समणोवासएणं पण्णरस कम्मादाणाइं जाणियव्वाइं,
नमायरियव्वाइं। तं जहा[६]। इङ्गालकम्मे, वणकम्मे,
ीकम्मे[७], भाडीकम्मे[८], फोडीकम्मे, दन्तवाणिज्जे, ल-
णिज्जे[९], रसवाणिज्जे, विसवाणिज्जे, केसवाणिज्जे,
णकम्मे, निल्लञ्छणकम्मे, दवग्गिदावणया[१०], स-
सोसणया[११], असईजणपोसणया। ७॥५१॥

---

om. २ A E and c e सचित्त०। ३ C अप्प-
०, D E अप्पओलिओसहि०, c अप्पओसहि०, e
e last form appears to be a conjectural
m Skr. अपक्वौषधि०; the real Skr. equi-
bly अप्रज्वलितौषधि०, Pr. अप्पवलिओसहि०,
सहि०; cf. Hemachandra's Grammar,
उलइ (Skr. प्रज्वलति) is given as an
(Skr. पचति); cf. Marāṭhī पोळणें *to be*
ा। ४ D E दुप्पोलि०, c दुप्पओलि०, e दुप्प-
धि० for दुःप्रज्वलितौषधि०)। ५ A B C D
डियकम्मे। ७ D E भाडियकम्मे। ८ A B
above is the order in a c e; C D E
, विस०; A B place रस०, केस०, विस०,
ं। १० D °तडाय०, and e °तडाग०
which appears to be a mere in-
the Skr. equivalent सरोह्रदतडाग-
y a and c (see comm.)।

तयाणन्तरं[1] च णं[2] अणट्ठा दण्डवेरमणस्स समणोवासएणं[3] पञ्च अइयारा[4] जाणियव्वा, न समायरियव्वा। तं जहा[5]। कन्दप्पे, कुक्कुए[6], मोहरिए, सञ्जुत्ताहिगरणे[7], उवभोगपरिभोगाइरित्ते[8]। ८॥ ५२॥

तयाणन्तरं[9] च णं सामाइयस्स समणोवासएणं[10] पञ्च अइयारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा। तं जहा। मणदुप्पडिहाणे[11], वयदुप्पडिहाणे[12], कायदुप्पडिहाणे[13], सामाइयस्स सइअकरणया[14], सामाइयस्स अणवट्ठियस्स करणया। ९॥ ५३॥

तयाणन्तरं[9] च णं देसावगासियस्स[15] समणोवासएणं पञ्च अइयारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा।

---

१ A B D तदा०। २ After णं D E insert अनत्थदंडे चउविहे पन्नत्ते। तं। अवज्झाणायरिए, पमायायरिए, हिंसप्पयाणे, पावकम्मोवएसे। तस्स णं। All three commentaries omit the passage. ३ C om., D E ०वासगस्स। ४ A D अतिचारा। ५ A B C D E om.; E inserts गहाणदट्ठणवसागविलेवणे, सद्धूवरसगंधे, वत्थासणआभरणे, पडिक्कमणे, देवसियं (Skr. दैवसिकं) सव्वं॥ ६ C E a कुक्कुइए, D c e कुकुइए (Skr. कुत्कुच, कौत्कुच्य)। ७ So a c e; but A B C D E ०हिकरणे। ८ A B C D E a c e ०गातिरित्ते। ९ A B C D तदा०। १० D E place this after पञ्च अइयारा। ११ B C a c e ०प्पणिहाणे। १२ A B a दुप्प०; B C a c e ०प्पणिहाणे। १३ C a c e ०प्पणिहाणे। १४ सविय०। १५ C दिसा०।

तं जहा[1]। आणवणप्पओगे[2], पेसवणप्पओगे[3], सद्दाणुवाए[4], रूवाणुवाए[5], बहिया पोग्गलपक्खेवे[6]।१०॥५४॥

तयाणन्तरं[7] च णं पोसहोववासस्स समणोवासएणं पञ्च अइयारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा। तं जहा[8]। अप्पडिलेहियदुप्पडिलेहियसिज्जासंथारे, अप्पमज्जियदुप्पमज्जियसिज्जासंथारे, अप्पडिलेहियदुप्पडिलेहियउच्चारपासवणभूमी, अप्पमज्जियदुप्पमज्जियउच्चारपासवणभूमी पोसहोववासस्स सम्मं अणणुपालणया। ११॥५५॥

तयाणन्तरं[9] च णं अहासंविभागस्स समणोवासएणं[10] पञ्च अइयारा[10] जाणियव्वा, न समायरियव्वा। तं जहा[11]। सचित्तनिक्खेवणया[12], सचित्तपेहणया[12], कालाइक्कमे[13], परववदेसे[14], मच्छरिया[15]।१२॥५६॥

तयाणन्तरं[16] च णं अपच्छिममारणन्तियसंलेहणाझूसणाराहणाए[17] पञ्च अइयारा[10] जाणियव्वा, न

---

१ A B C om. २ A B ०पओए, D E ०पओगे। ३ C D E a c e ०पओगे or ०प्पओगे। ४ D ०वातिए। ५ A ०परिखेवे। ६ A B तदा०। ७ A B C D om. ८ A B D तदा०। ९ C D om. १० A B तियारा, D अतिचारा। ११ B D om. १२ E a c e सचित्त०। १३ A B ०कम्मे, C ०क्कामेक्कामे, D ०क्कम्मदाणे, ०क्कामदाणे। १४ A परउववेसे, B परउवदेसे, E परवदेसे, a c e Skr. परव्यपदेशः। १५ D E मच्छरया। १६ C ०झूसिया०।

समायरियव्वा। तं जहा[1]। इहलोगासंसप्पओगे[2], परलोगासंसप्पओगे, जीवियासंसप्पओगे, मरणासंसप्पओगे, कामभोगासंसप्पओगे। १३ ॥ ५७ ॥

तए णं से आणन्दे गाहावई[3] समणस्स भगवओ महावीरस्स[4] अन्तिए पञ्चाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं सावयधम्मं[5] पडिवज्जइ, २त्ता समणं भगवं महावीरं वन्दइ नमंसइ, २त्ता एवं वयासी[6]। "नो खलु मे[7], भन्ते, कप्पइ अज्जप्पभिइं[8] अन्नउत्थिए[9] वा अन्नउत्थियदेवयाणि वा अन्नउत्थियपरिग्गहियाणि वा[10] वन्दित्तए वा[11] नमंसित्तए वा[11], पुव्विं अणालत्तेणं[12] आलवित्तए वा संलवित्तए वा, तेसिं असणं[13] वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा दाउं वा अणुप्पदाउं[14] वा, नन्नत्थ रायाभिओगेणं[15] गणाभिओगेणं बलाभिओगेणं देवयाभिओगेणं गुरुनिग्गहेणं

---

१ A B D om. २ A B ॰प्पयोगे। ३ D ॰वति, E ॰वइ। ४ D E om. ५ C D E सावग॰। ६ A B वदासी। ७ A D E om. ८ A B C D E ॰भिई, a c e ॰भिति। ९ So a c (see Ov. § 99); A B ॰उत्थिय, C D E ॰उत्थिया। १० A D interpolate चेइयाइं, C E अरिहंतचेइयाइं। ११ A य १२ C अणालित्तेणं। १३ C असिणं; A B D E omit the only adding the numeral ४। १४ B ॰ताउं, D E ॰ १५ A ॰ओएणं।

वित्तिकन्तारेणं[1]। कप्पइ मे समणे निग्गन्थे फासुएणं[2] एसणिज्जेणं असणपाणखाइमसाइमेणं वत्थपडिग्गहकम्बलपायपुञ्छणेणं[3] पीढफलगसिज्जासंथारएणं[4] ओसहभेसज्जेण य पडिलाभेमाणस्स विहरित्तए[5]"। त्ति कट्टु इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिह्णइ, २त्ता पसिणाइं पुच्छइ, २त्ता अट्ठाइं[6] आदियइ, २त्ता[7] समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो वन्दइ, २त्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तियाओ दूइपलासाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ[8], २त्ता जेणेव वाणियगामे नयरे[9], जेणेव सए गिहे[10], तेणेव उवागच्छइ, २त्ता सिवनन्दं भारियं एवं वयासी। "एवं खलु, देवाणुप्पिए[11], मए[12] समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तिए[13] धम्मे निसन्ते, से वि य[14] धम्मे मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए, तं गच्छ[15] णं तुमं, देवाणुप्पिए, समणं

---

१ A वित्ती०, B ०क्तारेणं। २ A C फासुएसणिज्जेणं। ३ C D E place कंबल after पडिग्गह; A B ०पाद०। ४ C D E सेज्जा०; B ०संथारेणं। ५ A D E विहरत्तए। ६ A अट्ठाइमायति, C ०इमादियइ। ७ D E om. ८ B C पडिनि०, A B D E ०खम०। ९ A B D नगरे। १० B C गेहे। ११ A C या। १२ B D E om. १३ D E अंतियं धम्मं णिसंत। १४ D E ए मे धम्मे। १५ B C गच्छह।

भगवं महावीरं वन्दाहि जाव* पज्जुवासाहि[१], समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तिए[२] पञ्चाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं[३] गिहिधम्मं पडिवज्जाहि ॥ ५८ ॥

तए णं सा सिवनन्दा भारिया आणन्देणं समणोवासएणं एवं वुत्ता[४] समाणा[५] हट्ठतुट्ठा कोडुम्बियपुरिसे[६] सद्दावेइ, २त्ता एवं वयासी[७]। "खिप्पामेव लहुकरण[८]" जाव* पज्जुवासइ[९] ॥ ५९ ॥

तए[१०] णं समणे भगवं महावीरे सिवनन्दाए[११] तीसे य महइ जाव[१२]† धम्मं[१३] कहेइ ॥ ६० ॥

तए णं सा सिवनन्दा समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तिए[१४] धम्मं सोच्चा[१५] निसम्म[१६] हट्ठ जाव‡ गिहिधम्मं पडिवज्जइ, २त्ता तमेव धम्मियं जाणप्पवरं[१७]

---

* See lecture vii, § 24, and footnote § on p. ५.

† See footnote * on p. ७.

‡ See footnote ‡ on p. ७.

---

१ B पजवासाहि। २ D E अतियं। ३ A °विहिं। ४ B खलु वत्ता समाणा। ५ C adds जाव after it. ६ D कोडम्बि°। ७ B वदासी। ८ A C D E °करणं। ९ B पज्जवासइ। १० B C D तओ समणे। ११ D E add भारियाए। १२ A B C E om. १३ A धम्मकहेति, C धम्मकहाए, D E धम्मकहा। C D E अतियं। १५ E सुचा। १६ B C D E om. १७ I °पवरं।

दुरुहइ[1], २त्ता जामेव दिसं[2] पाउब्भूया, तामेव दिसं[3] पडिगया ॥ ६१ ॥

"भन्ते" त्ति[4] भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वन्दइ नमंसइ[5], २त्ता एवं वयासी[6]। "पहू[7] णं, भन्ते, आणन्दे समणोवासए देवाणुप्पियाणं अन्तिए मुण्डे जाव* पव्वइत्तए[8] ?"।

"नो तिणट्ठे[9] समट्ठे, गोयमा। आणन्दे[10] णं[11] समणोवासए[12] बहूइं[13] वासाइं समणोवासगपरियागं[14] पाउणिहिइ[15], २त्ता जाव† सोहम्मे कप्पे अरुणाभे विमाणे देवत्ताए उववज्जिहिइ"।

तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई[16] पण्णत्ता। तत्थ णं आणन्दस्स वि[17] समणोवासगस्स[18] चत्तारि पलिओवमाइं ठिई[19] पण्णत्ता ॥ ६२ ॥

---

* Supply the rest from § 12 on p. ८.
† Supply the rest from § 89 below.

---

१ C D दुरूहइ। २ C D E दिसिं। ३ A ते, B ति। ४ A B D E om. ५ B वदासी। ६ A पभू; D E om. पहू णं। ७ A पवतित्ते, C पव्वत्तए, E पवत्तए। ८ A तेणट्ठे, C E इणट्ठे। D E insert तए णं before आणन्दे। १० A om. ११ D E add णं after समणो०। १२ D E बहू णं। १३ C E °यायं। D पाउणीहि, E पाउणी। १५ A ट्ठिती, B ट्ठिति, E ठिइ। D E णं। १७ D E om.

तए णं समणे भगवं महावीरे अन्नया कयाइ[१] बहिया जाव* विहरइ[२] ॥ ६३ ॥

तए णं से आणन्दे समणोवासए जाए अभिगय-जीवाजीवे जाव† पडिलाभेमाणे विहरइ[२] ॥ ६४ ॥

तए णं सा सिवनन्दा भारिया समणोवासिया जाया जाव† पडिलाभेमाणी विहरइ[२] ॥ ६५ ॥

तए णं तस्स आणन्दस्स समणोवासगस्स[३] उच्चावए-हिं[४] सीलव्वयगुणवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासेहिं[५] अप्पाणं भावेमाणस्स चोद्दस[६] संवच्छराइं वइक्कन्ताइं[७]। पण्णरसमस्स संवच्छरस्स अन्तरा[८] वट्टमाणस्स अन्नया[९] कयाइ[१०] पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि[११] धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए[१२] चिन्तिए मणो-गए सङ्कप्पे समुप्पज्जित्था[१३]। "एवं खलु अहं[१४] वाणिय-

---

* Supply the rest from § 88; see also Bhag. p. 196.

† Compare §§ 44 and 58. See the rest in Ov. § 124, also Bhag., p. 189.

‡ See above footnote †.

---

१ C D कयाइं। २ A विहरंति। ३ A B °सयस्स। ४ A उच्चवएहिं। ५ A B ° पच्चक्खाणं पोस°। ६ C चउदस। ७ B विइक्कंताइं, D E वीइक्कंताइं। ८ A B अंतरे। ९ A B D अण्णदा। १० A B D कदाइ, B C E कयाइं। ११ D E abbreviate thus पुव्वरत्ता°। १२ A B D E insert इ after अज्झत्थिए and omit चि°, मणो°, सङ्क°। १३ D समुपन्ने। १४ D अन्हं।

गामे[1] नयरे[2] बहुणं राईसर[3] जाव* सयस्स वि य[4] णं[5] कुडुम्बस्स[6] जाव† आधारे। तं एएणं[7] वक्खेवेणं[8] अहं नो संचाएमि समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तियं[9] धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जित्ताणं विहरित्तए[10]। तं सेयं खलु ममं[11] कल्लं जाव‡ जलन्ते विउलं[12] असणं ४§, जहा पूरणो[13]‖, जाव¶ जेट्ठपुत्तं[14] कुडुम्बे[15] ठवेत्ता[16], तं मित्त जाव[17]** जेट्ठपुत्तं च आपुच्छित्ता, कोल्लाए[18] सन्निवेसे[19] नायकुलंसि पोसहसालं पडिलेहित्ता, समणस्स भगवओ अन्तियं[20] धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जि-

---

* See footnote ‡ on p. २.

† See the rest in § 5, pp. २, ३.

‡ See the rest in Nāy. § 34, Bhag. pp. 292, 293, Kap. § 59.

§ Supply the rest from § 58; cf. Ov. § 87, Kap. § 104, Nāy. § 55, Bhag. p. 299.

‖ See Bhag. p. 216.

¶ See the rest in the comm.; also in Kap. § 104, Nāy. § 114; also footnote १ on p. २९.

** Supply the rest from § 8, p. ५.

---

१ C वाणिज्ज°, D °गामे। २ D नगरे। ३ A B D E ईसर°। ४ A B om. ५ E om. ६ D कुडं°, E कुटुं°। ७ A B C D E एतेणं। ८ E वक्खेणं। ९ A D E अंतिए। १० A B D विहरित्तए। ११ C मम। १२ A B C D E विपुलं। १३ A B °णो। १४ A जेट्ठं, B जेट्ठे। १५ E कुटुंबे। १६ B ठावेत्ता, C ठाविता, D E ठवित्ता। १७ A B C D E om. १८ B कोल्लागसं°। १९ A B संणिवेसे। २० C D E अंतिए।

त्ताणं विहरित्तए[1]"। एवं सम्पेहेइ[2], २त्ता कल्लं विउलं तहेव[3]* जिमियभुत्तुत्तरागए तं[4] मित्त जाव[5]† विउलेणं पुप्फ ५[6]† सक्कारेइ सम्माणेइ, २त्ता तस्सेव मित्त जाव[5]† पुरओ जेट्ठपुत्तं सद्दावेइ, २त्ता एवं वयासी। "एवं खलु, पुत्ता, अहं वाणियगामे बहूणं राईसर[7], जहा चिन्तियं[8], जाव[9] विहरित्तए। तं सेयं[10] खलु मम[11] इदाणिं[12] तुमं सयस्स[13] कुडुम्बस्स आलम्बणं ४[14]‖ ठवेत्ता[15] जाव‖ विहरित्तए[16]" ॥ ईई ॥

---

* Supply as above ; see footnote ¶ on the preceding page.
† Supply the rest from § 8, p. § ५.
‡ Supply वत्थगन्धमल्लालङ्कारेणं from Ov. § 108 ; see also comm.
§ Supply the rest from the preceding sentence.
‖ Supply पमाणं, आहारे, चक्खू from § 5, p. ४.

---

१ A C विहरत्तए। २ B संपेहि, C संपेहिइ। ३ In addition to तहेव, A B C insert असणं उवक्खडावेइ २ [C only त्ता मित्तनाइ० आमंतित्ता] तओ पच्छा ण्हाए जाव* अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे भोयणमंडवंसि सुहासणवरगए तेणं [B तिणं] मित्तनाइनियगसयणसंबंधिपरियणेणं [A B तं] सद्धिं तं विउलं असणं [C only पाणं खाइमं साइमं] आसाएमाणे विसाएमाणे [A वी०] विहरइ जिमियभुत्तुत्तरागए वि य [A अ] णं समाणे आयंते चोक्खे परमसुइभूए। तहेव जिमि० etc. as in the text above. ४ C om. ५ A B C D E om. ६ C D E om. ७ A B D E ईसर०। ८ E चिंतिइं। ९ A सेयं। १० A ममं। ११ E इयाणिं। १२ D E सायस्स, A B add बज्झयस्स। १३ E ठावित्ता। १४ D E विहरइ।

---

* See the rest in Kap. §§ 66, 104, Ov. § 17.

तए णं जेट्ठपुत्ते आणन्दस्स समणोवासगस्स[1] "तह" त्ति एयमट्ठं[2] विणएणं पडिसुणेइ ॥ ६७ ॥

तए णं से आणन्दे समणोवासए तस्सेव मित्त जाव[10] पुरओ जेट्ठपुत्तं कुडुम्बे[4] ठवेइ, २त्ता एवं वयासी। "मा[5] णं तुमं[6], देवाणुप्पिया, तुब्भे[7] अज्जप्पभिइं[8] केइ मम[9] बहूसु कज्जेसु[10] जाव[11]† पुच्छहो[12] वा, पडिपुच्छहो[13] वा, ममं[14] अट्ठाए असणं वा ‡ उवक्खडेहो[15] उवकरेहो[16] वा ॥ ६८ ॥

तए[17] णं से आणन्दे समणोवासए जेट्ठपुत्तं[18] मित्तनाइं[19] आपुच्छइ[20], २त्ता सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ[21], २त्ता वाणियगामं नयरं[22] मज्झं मज्झेणं

---

* Supply the rest from § 8, p. ५.

† Supply the rest from § 5 on pp. ३ and ४.

‡ See footnote § on p. २८.

---

१ C inserts तं after समणो०। २ B अयमट्ठं। ३ A B C D E om. ४ E कुडंबे। ५ B मां। ६ B C D E om. ७ B तुम्हे। ८ A C ०भिई, D ०भिति। ९ B C E ममं। १० B C add य after कज्जेसु। ११ C D E om. १२ B C आपुच्छओ; D E आपुच्छतं, A पुच्छउ। १३ E ०पुच्छतं A ०पुच्छउ। १४ C D E मम। १५ A B D a c e ०क्खडेउ, C ०क्खडईओ, E ०क्खड। १६ C ओवक०, D E उदक०, A B C D E a c e ०करेउ। १७ C D E om. तए णं से आ० सम०। १८ B D E ०पुत्तमित्त०। १९ A B ०नाइ। २० A आपुच्छंति (3 pers. plur.) २१ A B ०नि०, A ०मंति। २२ A B C नगरं, E णयरे।

निग्गच्छइ, २त्ता जेणेव कोल्लाए सन्निवेसे[1], जेणेव नायकुले[2], जेणेव पोसहसाला[3], तेणेव उवागच्छइ[4], २त्ता पोसहसालं[5] पमज्जइ, २त्ता उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेइ[6], २त्ता दब्भसंथारयं[7] संथरइ, दब्भसंथारयं दुरुहइ[8], २त्ता पोसहसालाए पोसहिए दब्भसंथारोवगए समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तियं[9] धम्मपन्नत्तिं उवसम्पज्जित्ताणं विहरइ॥ ६९॥

तए णं से आणन्दे समणोवासए उवासगपडिमाओ[10] उवसम्पज्जित्ताणं विहरइ। पढमं उवासगपडिमं[11] अहासुत्तं[12] अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं[13] काएणं फासेइ, पालेइ, सोहेइ, तीरेइ, कित्तेइ, आराहेइ[14]॥ ७०॥

तए णं से आणन्दे समणोवासए दोच्चं उवासगपडिमं[15], एवं तच्चं, चउत्थं, पञ्चमं, छट्ठं, सत्तमं, अट्ठमं,

---

१ A B सन्नि०। २ A B मित्तनाय०। ३ A पोसहस्साला। ४ A ०च्छंति। ५ A पोसहस्साला। ६ D E पडिलेहइ। ७ E ०संथारं। ८ D दुरूहइ, E दूरूहइ। ९ A अंतिए। १० A C D E पढमं ०पडिमं, B only पडिमं; see §89. ११ B om., C पडिमा। १२ So comm., A B C D E have only अ after अहासुत्तं। १३ A B समं। १४ So comm., A B C D E have only जाव before आराहेइ; Bhag., p. 283, has किट्टेइ। १५ C adds उवसंपज्जित्ताणं विहरइ।

नवमं, दसमं, एक्कारसमं[1], जाव[*] आराहेइ[2] ॥ ७१ ॥

तए णं से आणन्दे समणोवासए इमेणं[3] एयारूवेणं उरालेणं विउलेणं पयत्तेणं[4] पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के जाव[†] किसे[5] धमणिसन्तए[6] जाए ॥ ७२ ॥

तए णं तस्स आणन्दस्स समणोवासगस्स[7] अन्नया[8] कयाइ[9] पुव्वरत्ता जाव[10][‡] धम्मजागरियं[11] जागरमाणस्स[12] अयं अज्झत्थिए[§][13] । "एवं खलु अहं इमेणं जाव[‖] धमणिसन्तए[14] जाए । तं[15] अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे[16] बले वीरिए पुरिसक्कारपरक्कमे[17] सद्धाधिइसं-

---

* Supply the rest from § 70, commencing with चइत्ता. See also Bhag. p. 283, Kap. (Sam.) § 63.

† See the rest in Bhag. pp. 288, 289.

‡ Supply the rest from § 66 on p. २७. See also Bhag. p. 291.

§ Supply चिन्तिए पत्थिए मणोगए सङ्कप्पे from Kap. § 90, Bhag. p. 253; sometimes one term is omitted, so that the whole formula consists only of four terms, as in § 66, p. २७, and in Kap. § 93.

‖ Supply the rest from § 72; see also Bhag., p. 288.

---

१ C इक्कारसमं। २ D आराधेति। ३ B इमेतारूवेणं, C एमेणं। ४ A एयतेणं। ५ C किसिणे। ६ A °संते, D E °संसत्ते। ७ E om. ८ A D अण्णदा। ९ A D कदाइ। १० C D E om. ११ A adds जाव after it. १२ D E °माणे। १३ A has the numeral letter ङ्ग=५; B C have the numeral figure ४; D E om. १४ A °संतिते, C °संति, D °संपत्ते। १५ C D E om. १६ E कम्मवलवीरिए, A वलवीरिए। १७ A B °परिक्कमे।

वेगे[1]। तं जाव ता[2] मे अत्थि उट्ठाणे सद्धाधिइसंवेगे[3], जाव य[4] मे धम्मायरिए धम्मोवएसए[5] समणे भगवं[6] महावीरे[7] जिणे सुहत्थी[8] विहरइ[9], ताव ता मे सेयं कल्लं जाव* जलन्ते अपच्छिममारणन्तियसंलेहणाझूसणाझूसियस्स[10], भत्तपाणपडियाइक्खियस्स, कालं अणवकङ्खमाणस्स विहरित्तए[11]"। एवं सम्पेहेइ, २त्ता कल्लं पाउ जाव[12]* अपच्छिममारणन्तिय जाव† कालं अणवकङ्खमाणे विहरइ ॥७३॥

तए णं तस्स आणन्दस्स समणोवासगस्स[13] अन्नया[14] कयाइ सुभेणं[15] अज्झवसाणेणं, सुभेणं[16] परिणामेणं, लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं[17] तदावरणिज्जाणं[18] कम्माणं खओवसमेणं ओहिनाणे[19] समुप्पन्ने[20]।

---

* See footnote ‡ on page २८

† Supply the rest from the preceding sentence.

---

१ E सद्दाठिईसंवेगे। २ B तमेव for ता मे। ३ A B सद्धातिसंवेगे, C सद्धावेइसंवेगे, E सद्दाठिइसंवेगे। ४ E om. ५ D E० वएसए। ६ D E om. ७ A B सुहत्थि, C सुह, D E सावत्थी, Bhag. p. 291 has सुहट्ठी। ८ A विहरंति। ९ A ०झूसतितस्स। १० C विहरइ। ११ A B C D E om. १२ A B C om. १३ A B अस्सदा। १४ A सुब्भेणं। १५ B सोभणेणं, C सोहणेणं। १६ D E सुज्झ०। १७ A तदा णं वर०, D णावावर०। १८ A B C D ओहिणाणे। १९ A B C D E ससुप०, B C E ०न्ने।

पुरत्थिमेणं[1] लवणसमुद्दे पञ्चजोयणसयाइं[2] खेत्तं जाणइ पासइ, एवं दक्खिणेणं पच्चत्थिमेणं[3] य[4]। उत्तरेणं जाव चुल्लहिमवन्तं[5] वासधरपव्वयं जाणइ पासइ। उड्ढं जाव सोहम्मं[6] कप्पं[7] जाणइ पासइ। अहे जाव इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए लोलुयच्चुयं[8] नरयं चउरासीइवाससहस्सट्ठिइयं[9] जाणइ[10] पासइ[10] ॥ ७४ ॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसरिए। परिसा निग्गया जाव[11]* पडिगया[12] ॥ ७५ ॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अन्तेवासी इन्दभूई[13] नामं अणगारे गोयमगोत्ते[14] णं सत्तुस्सेहे[15], समचउरंससंठाणसंठिए, वज्जरिसहनारायसङ्घयणे, कणगपुलगनिघसपम्ह-

---

* Supply धम्मो कहिओ from Nir. § 1, Bhag. p. 244; or a fuller account from §§ 9-11.

---

१ C D E °च्छि°। २ A सयइं, B D E सइयं। ३ A पव्वत्थिमेणं, C D E पच्छिमेणं। ४ B C D E om. ५ B D E वंतवास°। ६ A B सोहम्मे। ७ B कप्पे। ८ D E लोलुयं अच्चुतं। ९ C चोरासीइ°। १० A जाणंति पासंति। ११ A C om. १२ C om. १३ E °भइ। १४ A B C °गुत्ते। १५ A सत्तसेहे, B C सत्तुसेहे।

गोरे[1], उग्गतवे, दित्ततवे, तत्ततवे, घोरतवे[2], महातवे, उराले, घोरगुणे[3], घोरतवस्सी, घोरबम्भचेरवासी, उच्छूढसरीरे, सङ्खित्तविउलतेउलेसे[4], छट्ठं[5] छट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ ७६ ॥

तए णं से भगवं गोयमे छट्ठक्खमणपारणगंसि[6] पढमाए पोरिसीए[7] सज्झायं करेइ, बिइयाए[8] पोरिसीए[9] झाणं झियाइ, तइयाए पोरिसीए[10] अतुरियं[11] अचवलं असम्भन्ते मुहपत्तिं[12] पडिलेहेइ, २त्ता[13] भायणवत्थाइं[14] पडिलेहेइ, २त्ता[15] भायणवत्थाइं[16] पमज्जइ, २त्ता[17] भायणाइं[18] उग्गाहेइ, २त्ता[19] जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, २त्ता[20] समणं

---

१ E ०पउम० for ०पन्ह०। २ D E om. ३ C ०विउले तेउ०; after this epithet D E insert the following: जियकोहे, जियमाणे, जियमाए, जियलोभे, जाइसंपन्ने, कुलसंपन्ने, बलसंपन्ने, रूवसंपन्ने जाव तेयंसी। ४ A छट्ठुक्खेणं। ५ C ०पारणयंसि। ६ C पोरसीए। ७ C D E बीयाए। ८ D E पोरसीए। ९ C D पोरसीए। १० A अतुरियं अचलिमसंभवे, B C अतुरियं अचवलमसंभंते, D E अतुरियमचवलमसंभंताए। ११ D E ०पत्तियं। १२ A B D E om. १३ A भाइणं व०, B भाइणव०। १४ B C D E om. १५ B D E only भायणं, A C only भायण। १६ A भाइणाइं। १७ A in full भाइणाइं उग्गाहेत्ता, B C D E om. १८ A D om.

भगवं महावीरं वन्दइ नमंसइ[1], २त्ता[2] एवं वयासी। "इच्छामि णं, भन्ते, तुब्भेहिं अब्भणुस्साए[3] छट्ठक्खमणस्स[4] पारणगंसि वाणियगामे नयरे उच्चनीयमज्झिमाइं[5] कुलाइं घरसमुदाणस्स[6] भिक्खायरियाए अडित्तए। अहासुहं, देवाणुप्पिया, मा पडिबन्धं करेह" ॥ ७७ ॥

तए णं भगवं गोयमे समणेणं भगवया महावीरेण अब्भणुस्साए[7] समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तियाओ दूइपलासाओ[8] चेइयाओ पडिणिक्खमइ[9], २त्ता अतुरियमचवलमसम्भन्ते[10] जुगन्तरपरिलोयणाए[11] दिट्ठीए पुरओ इरियं[12] सोहेमाणे[13], जेणेव वाणियगामे नयरे[14], तेणेव[15] उवागच्छइ, २त्ता वाणियगामे नयरे[16] उच्चनीयमज्झिमाइं[17] कुलाइं घरसमुदाणस्स[18] भिक्खायरियाए अडइ ॥ ७८ ॥

तए णं से भगवं गोयमे वाणियगामे नयरे[19],

---

१ A om. २ B C D E om. ३ A C अब्भणु०। ४ C D E ०क्खमणपारणगंसि। ५ C ०मज्झिमयाइं। ६ So C; A B D E समुदा०। ७ C अब्भणु०। ८ B C D E ०पलासचेइ०। ९ C D E पडिनि०। १० C ०संभंताए। ११ A C ०पलोय०। १२ D E इरिया। १३ A E सोहमाणे, D साहमाणे। १४ A B नगरे। १५ A om. from तेणेव to नयरे। १६ B C D E नगरे। १७ C ०नीच०। १८ A B C D E समुदा०। १९ D E नगरे।

जहा पण्णत्तीए तहा*, जाव भिक्खायरियाए अडमाणे[1] अहापज्जत्तं भत्तपाणं सम्मं[2] पडिग्गाहेइ[3], २त्ता वाणियगामाओ पडिणिग्गच्छइ, २त्ता कोल्लायस्स[4] सन्निवेसस्स अदूरसामन्तेणं[5] वईवयमाणे[6], बहुजणसद्दं निसामेइ[7]। बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ ४[8]। "एवं खलु, देवाणुप्पिया, समणस्स भगवओ अन्ते-

---

* Apparently a reference to the Vivāha-pannattī, another name of the Bhagavatī; see footnote to the Translation.

† Supply एवं भासइ, एवं पण्णवेइ, एवं परूवेइ from Kap. (Sām.) § 64.

---

१ D E omit जहा पण्णत्तीए तहा and read जाव भिक्खायरिय जाव अडमाणे; the second जाव is not intelligible; there is nothing to which it could refer; the technical phrase, as shown by §§ 77 and 78, is भिक्खायरियाए अडमाणे, without any intermediate words. Before भि०, however, a large portion of the current passage of §§ 77 and 78 (*viz.*, उच्चनीयमज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स) is omitted and the omission is indicated by the first जाव of D E. The same omission is indicated by the single जाव of A B C. The second जाव of D E probably arose from an erroneous repetition of the जाव of the original rubric, intended to take the place of the omitted phrase जहा पण्णत्तीए तहा। २ A B C om., D समं। ३ A B D E पडिगाहेइ। ४ E कोल्लायसन्निवेसस्स। ५ A °समेतेणं। ६ A वतीवय०, B वीतीवतीयमाणे, C वोइवय०, E D वीतीवय०। ७ A om. ८ C om., D E २।

वासी[1], आणन्दे नामं समणोवासए पोसहसालाए[2] अपच्छिम जाव* अणवकङ्खमाणे विहरइ" ॥ ७९ ॥

तए णं तस्स गोयमस्स बहुजणस्स अन्तिए एयं[3] सोच्चा निसम्म अयमेयारूवे[4] अज्झत्थिए ४[5]† । "तं गच्छामि णं, आणन्दं समणोवासयं पासामि" । एवं सम्पेहेइ, २त्ता जेणेव कोल्लाए सन्निवेसे, जेणेव आणन्दे समणोवासए, जेणेव पोसहसाला, तेणेव उवागच्छइ ॥ ८० ॥

तए णं से आणन्दे समणोवासए भगवं गोयमं एज्जमाणं पासइ, २त्ता हट्ठ जाव‡ हियए भगवं गोयमं वन्दइ[6] नमंसइ, २त्ता[7] एवं वयासी । "एवं खलु, भन्ते, अहं इमेणं उरालेणं जाव§ धमणिसन्तए जाए[8], न संचाएमि देवाणुप्पियस्स अन्तियं पाउब्भ-

---

* Supply the rest from §§ 57 and 73.

† See above § 66 on p. २७, and footnote § on p. ३१.

‡ See above, footnote ‡ on p. ७.

§ Supply the rest from § 72.

---

१ B °वासि । २ A पोसहसालाए । ३ A एयमट्ठं, B एवं, D E एतं । ४ D E अयं इमेयारूवे । ५ A gives the numeral letter ङ्ग = ५ । ६ C om. व० न० २त्ता । ७ A B C D E om. ८ E om.

वित्ताणं तिक्खुत्तो मुद्धाणेणं पाए अभिवन्दित्तए। तुब्भे णं, भन्ते, इत्थक्कारेणं[1] अभिओएणं[2] इओ[3] चेव एह, जा णं देवाणुप्पियाणं तिक्खुत्तो मुद्धाणेणं पाएसु[4] वन्दामि नमंसामि" ॥ ८१ ॥

तए णं से भगवं गोयमे, जेणेव आणन्दे समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ[5] ॥ ८२ ॥

तए[6] णं से[7] आणन्दे समणोवासए भगवओ[8] गोयमस्स[9] तिक्खुत्तो मुद्धाणेणं[10] पाएसु[11] वन्दइ नमंसइ, २त्ता[12] एवं वयासी। "अत्थि णं, भन्ते, गिहिणो[13] गिहिमज्झा[14] वसन्तस्स ओहिनाणे[15] णं समुप्पज्जइ[16]?"।

"हन्ता, अत्थि"।

"जइ णं, भन्ते, गिहिणो जाव* समुप्पज्जइ, एवं खलु, भन्ते[17], मम[18] वि गिहिणो गिहिमज्झा[14] वस-

---

* Supply the rest from the preceding passage.

---

१ A इच्छुक्कारेणं, B इच्छुकारेणं, C इच्छाकारेणं, D E इत्थकारेणं। २ A C D अणाभिओएणं। ३ C इओ व चेव एह जहा णं, D E इतो चेव एव जा णं। ४ A पादेसु, B पावेसु। ५ C D E add २त्ता। ६ E om. तए णं से आ० स०। ७ A B C D E om. ८ A भगवं। ९ A B D E om. १० A B मुद्धाणं। ११ A B पादेसु। १२ A B C D E om. १३ E om. १४ A B ०मज्झे; a c e also मज्झा। १५ B ओहिणाणे। १६ A B C D E समुपज्जइ, and so as a rule throughout. १७ A om. १८ A ममं।

न्तस्स ओहिनाणे[1] समुप्पन्ने। पुरत्थिमेणं[2] लवणसमुद्दे[3] पञ्चजोयणसयाइं जाव* लोलुयच्चुयं[4] नरयं जाणामि पासामि" ॥ ८३ ॥

तए णं से भगवं गोयमे आणन्दं समणोवासयं एवं वयासी[5]। "अत्थि णं, आणन्दा, गिहिणो जाव† समुप्पज्जइ। नो चेव णं एमहालए[6]। तं णं[7] तुमं, आणन्दा, एयस्स[8] ठाणस्स[9] आलोएहि जाव‡ तवोकम्मं पडिवज्जाहि" ॥ ८४ ॥

तए[10] णं से आणन्दे भगवं गोयमं एवं वयासी। "अत्थि णं, भन्ते, जिणवयणे सन्ताणं[11] तच्चाणं तहियाणं सब्भूयाणं भावाणं[12] आलोइज्जइ जाव‡ पडिवज्जिज्जइ?"।

"नो तिणट्ठे[13] समट्ठे"।

---

* Supply the rest from § 74.
† Supply the rest from § 83.
‡ Supply पडिक्कमाहि and पडिक्कमिज्जइ respectively.

---

१ B ओहिसाणे। २ A पुरत्थिमं, C पुरेच्छिमेणं, D पुरच्छिमेणं, E पुरिच्छिमेणं। ३ C °समुद्देणं। ४ D E लोलुयं अच्चुयं। ५ A B वदासी। ६ D E एवमहालए; C णो चेव महालए ए तन्नं। ७ A D C तन्नं, E तणं। ८ E तस्स। ९ E C D ट्ठाणस्स। १० A तं। ११ D संभासे। १२ E om. १३ C E इणट्ठे।

"जइ णं, भन्ते, जिणवयणे सन्ताणं[१] जाव* भावाणं नो आलोइज्जइ[२] जाव† तवोकम्मं[३] नो पडिवज्जिज्जइ। तं[४] णं, भन्ते, तुब्भे चेव एयस्स ठाणस्स[५] आलोएह[६] जाव† पडिवज्जह" ॥ ८५ ॥

तए[७] णं से भगवं गोयमे आणन्देणं समणोवासएणं एवं वुत्ते समाणे, सङ्किए कङ्खिए विइगिच्छासमावन्ने[८], आणन्दस्स अन्तियाओ[९] पडिणिक्खमइ, २त्ता जेणेव दूइपलासे चेइये, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, २त्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामन्ते गमणागमणाए[१०] पडिक्कमइ, २त्ता एसणमणेसणं[११] आलोएइ, २त्ता[१२] भत्तपाणं[१३] पडिदंसेइ[१४], २त्ता समणं भगवं वन्दइ नमंसइ, २त्ता एवं[१५] वयासी। "एवं खलु, भन्ते, अहं तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए।

---

* Supply the rest from the preceding passage.

† Supply the rest from footnote ‡ on p. ४०, *mutatis mutandis*.

---

१ E सत्ताणं। २ D E आलोएज्जइ। ३ A C D E तवो, B तवे। ४ E तए। ५ A B D ट्ठाणस्स। ६ A अलोएहि। ७ A तं। ८ A वितिगच्छस०, B विगच्छस०, D E वितिगिच्छस०। ९ C क्खंतिए। १० B गमणागमणे। ११ A एसणंमन्नेसणं, B एसणमन्नेसणं, C एसणमाणेसणो, D एसणंसणेसणं, E एसणंसणे। १२ C जाव, A B D E om. १३ E भत्तपाणी। १४ A पडिदंसेति, B पडिदंसते, D पडिदंसंसेति, E पडिदंसे। १५ D E om. एवं वयासी।

तं चेव सव्वं कहेइ जाव*। तए णं[1] अहं सङ्किए ३†
आणन्दस्स समणोवासगस्स अन्तियाओ[2] पडिणिक्ख-
मामि[3], २त्ता जेणेव इहं[4] तेणेव हव्वमागए। तं[5] णं,
भन्ते, किं आणन्देणं समणोवासएणं तस्स ठाणस्स[6]
आलोएयव्वं[7] जाव‡ पडिवज्जेयव्वं[8], उदाहु मए?" ॥

"गोयमा" इ समणे भगवं महावीरे[10] भगवं गो-
यमं[11] एवं वयासी। "गोयमा, तुमं[12] चेव णं तस्स
ठाणस्स[13] आलोएहि[14] जाव‡ पडिवज्जाहि[15], आणन्दं
च[16] समणोवासयं एयमट्ठं खामेहि" ॥ ८६ ॥

तए[17] णं से भगवं गोयमे समणस्स भगवओ

---

* Supply the rest from §§ 78—85.

† Supply the rest from the preceding sentence.

‡ Supply the rest from footnote ‡ on p. ४०, *mutatis mutandis*.

---

१ D E insert पडिसंदेसेति (D) and पडिदंसेइ (E) after णं + २ A B om. ३ D E अंतिए। ४ A B C D E पडि २। ५ B तुहं। ६ A B C ते, D E तए। ७ A D ट्ठाणस्स। ८ D आलोएह तचं, E आलोएहतव्वं, C आलोएव्वं। ९ A पडिकमते, B C merely पडि, D E पडि २। १० A B C D E om. भगवं महावीरे। ११ A गोयम, C D merely गो, E गोयमा। १२ A तुम्मे, B तुमे। १३ A B C D E ट्ठाणस्स। १४ D आलोएह। १५ A पडिक्कंतेह, B C merely पडि, D E पडिवज्जेइ। १६ C E om. १७ A ते, D तं।

महावीरस्स "तह" त्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ, २त्ता तस्स ठाणस्स[1] आलोएइ जाव* पडिवज्जइ[2], आणन्दं च[3] समणोवासयं[4] एयमट्ठं खामेइ ॥ ८७ ॥

तए[5] णं समणे भगवं महावीरे अन्नया[6] कयाइ बहिया जणवयविहारं[7] विहरइ ॥ ८८ ॥

तए[8] णं से आणन्दे समणोवासए बहूहिं सीलव्वएहिं जाव† अप्पाणं भावेत्ता, वीसं वासाइं समणोवासगपरियागं[10] पाउणित्ता, एक्कारस[11] य उवासगपडिमाओ सम्मं काएणं फासित्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं[12] झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए[13] छेदेत्ता, आलोइयपडिक्कन्ते[14], समाहिपत्ते, कालमासे[15] कालं किच्चा, सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडिंसगस्स[16] महा-

---

* Supply the rest from footnote ‡ on p. ४०, *mutatis mutandis*.

† Supply the rest from § 66 on p. २७.

---

१ A B C D E ट्ठाणस्स। २ A B C पडिव, D E पडिक्कमेइ। ३ C E om. ४ A °वासए। ५ C तं, A B D E om. तए णं। ६ D E transpose बहिया अन्नया क°। ७ B D E om. विहारं। ८ B D E तं, om. णं। ९ C om. जाव अप्पाणं भावेत्ता। १० E समणोवासयं परियायं। ११ A एक्कारस, E एक्कारस। १२ C अप्पाणं। १३ C अणसणाइं। १४ C अलोइए°। १५ A कालंमासे, B काले मासे। १६ B °वडंसगस्स, E °वडिंसयस्स।

विमाणस्स उत्तरपुरत्थिमेणं[१] अरुणे[२] विमाणे देवत्ताए उववन्ने। तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। तत्थ णं आणन्दस्स वि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥ ८९ ॥

"आणन्दे णं, भन्ते, देवे ताओ देवलोगाओ[३] आउक्खएणं [४]* अणन्तरं चयं[५] चइत्ता, कहिं गच्छिहिइ[६], कहिं उववज्जिहिइ[७] ?"।

"गोयमा, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ[८]" ॥ ९१ ॥

॥ निक्खेवो ॥

सत्तमस्स अङ्गस्स उवासगदसाणं पढमं अज्झयणं समत्तं ॥

---

* Supply भवक्खएणं ठिइक्खएणं from Āy. II, 15, § 2, Bhag. p. 303.

---

१ A B °पुत्थिमेणं, C °परिच्छिमेणं, D E °पच्छिमेणं। २ D E अरुणेहिं विमाणेहिं। ३ C देवलोयाओ, D E simply लोगाओ। ४ A B C om. ५ E चइ। ६ A गच्छति, C D गच्छिहिति, E गच्छिहिंति। ७ A B उववज्जहिति, C उववन्नई, E उववज्झिहिंति। ८ C सिज्झहिति, E सिज्झिहिंति।

जइ णं, भन्ते, समणेणं भगवया[1] महावीरेणं जाव* सम्पत्तेणं सत्तमस्स अङ्गस्स उवासगदसाणं पढमस्स[2] अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, दोच्चस्स णं[3], भन्ते, अज्झयणस्स के अट्ठे[4] पण्णत्ते॥ ९१॥

एवं खलु, जम्बू, तेणं कालेणं तेणं समएणं चम्पा नामं नयरी होत्था। पुण्णभद्दे चेइए। जियसत्तू राया। कामदेवे गाहावई[5]। भद्दा भारिया। छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ[6], छ° वड्ढिपउत्ताओ[7], छ°

---

* See footnote § on page १.

---

१ So F, but A B D E om. २ F पढमज्झायणस्स। ३ A B om. णं भ० अज्झ०, F om. णं भ०। ४ F केयट्ठे। ५। F adds परिवसइ। ६ D E °पत्ताओ। ७ A adds हिरण्णकोडीओ। ८ D E om. पउत्ताओ।

पवित्थरपउत्ताओ[1], छ वया[2] दसगोसाहस्सिएणं[3] वएणं। समोसरणं[4]। जहा आणन्दो तहा निग्गओ। तहेव सावयधम्मं पडिवज्जइ। सा[5] चेव वत्तव्वया जाव[*]। जेट्ठपुत्तं[6] मित्तनाइं[7] आपुच्छित्ता, जेणेव पोसहसाला, तेणेव उवागच्छइ, २त्ता[8] जहा आणन्दो[9] जाव[†] समणस्स भगवओ महावीरस्स[10] अन्तियं[11] धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जित्ताणं विहरइ ॥ ९२ ॥

तए णं तस्स कामदेवस्स समणोवासगस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि एगे[12] देवे मायी[13] मिच्छद्दिट्ठी[14] अन्तियं पाउब्भूए ॥ ९३ ॥

तए णं से देवे एगं महं[15] पिसायरूवं विउव्वइ ॥ तस्स णं देवस्स[16] पिसायरूवस्स इमे[17] एयारूवे[18] वण्ण-

---

* Here supply the whole account from the first lecture, §§ 10-68, pp. २५-३०.

† Supply the rest from § 69, on page ३१.

---

१ D E om. पउत्ताओ। २ A B D E व्वया। ३ B E °साहस्सीएणं, D °साहस्सीयं एणं। ४ F has सामी समोसरिए। ५ A F सव्वे वत्तव्वया, B सव्वेव वत्तया। ६ D E add कुटुंबे य ठवेत्ता। ७ A B om. नाइं, D E F °नाइ। ८ A B om. २त्ता। ९ A B D E F आणंदे। १० A B om. ११ D E अन्तिए। १२ A एक्के, B एके। १३ B माया, D E माई, F माइ। १४ So G; but A B D F मिच्छदिट्ठी। १५ F महंतं। १६ A दिव्वस्स। १७ F एमे। १८ F इयारूवे।

वासे पण्णत्ते। सीसं से गोकिलञ्जसंठाणसंठियं[1], सालिभसेल्लसरिसा से केसा कविलतेएणं[2] दिप्पमाणा, महल्लउट्टियाकभल्लसंठाणसंठियं[3] निडालं[4], मुंगुंसपुंछं[5] व[6] तस्स भुमगाओ[7] फुग्गफुग्गाओ विगयबीभच्छदंसणाओ[8], सीसघडिविणिग्गयाइं[9] अच्छीणि विगयबीभच्छदंसणाइं[8], कण्णा जह सुप्पकत्तरं[10] चेव विगयबीभच्छदंसणिज्जा[8], उरब्भपुडसन्निभा[11] से नासा, झुसिराजमलचुल्लीसंठाणसंठिया[12] दो[13] वि तस्स नासापुडया, घोडयपुंछं[14] व[15] तस्स मंसूइं[16] कविलकविलाइं[17] विगयबीभच्छदंसणाइं, उट्ठा उट्टस्स चेव लम्बा, फालसरिसा से दन्ता[18], जिब्भा जह[19] सुप्पकत्तरं चेव वि-

---

१ F गोकिलंज्ज०। २ So B a e f; but A D E कविला तेएणं, F कविल्ला तेएणं। ३ A ०उट्टिय०; F ०केभल्ल०। ४ B निडाणं। ५ A मुगुस०, E मुगंस०, F मुंगुंस०, e मगुंस० and मुंगुंसा, f मुंगुंस० and मुगुंसा; B a f पुंछं, A F पुक्कं, D E e पुच्छं (see Hem. I, 26)। ६ B च, F च। ७ So a e f; A भुमहाओ (see Nām. 251), B D भुमकाओ, E भुमुकाओ, F भुमंगाओ (see Hem. II, 167). ८ A B here and elsewhere बीभत्स०। ९ A णिग्गयाइं om. वि, F ०विणिग्गयाणि। १० D E ०कत्तरे। ११ B F उरब्भडपुड०, A B ०सन्निभा। १२ F झूसिरा०; A ०चुल्ला०। १३ A दोवे for दोवि। १४ A B F पुक्कं, D E पुच्छं। १५ A D F च। १६ F समंसूइं (see Hem. II, 86). १७ D E om. the first कविल। १८ A दंदा, F दत्ता। १९ F जहा (see Hem. I, 67).

गयबीभच्छदंसणिज्जा, हलकुडालसंठिया[1] से हणुया, गल्लकडिल्लं च[2] तस्स खड्डं[3] फुट्टं[4] कविलं फरुसं[5] महल्लं, मुइङ्गाकारोवमे[6] से खन्धे, पुरवरकवाडोवमे से वच्छे, कोट्ठियासंठाणसंठिया दो वि तस्स बाहा, निसापाहाणसंठाणसंठिया[7] दो वि तस्स[8] अग्गहत्था[9], निसालोढसंठाणसंठियाओ हत्थेसु अङ्गुलीओ, सिप्पिपुडगसंठिया[10] से नक्खा[11], एहावियपसेवओ[12] व्व[13] उरंसि लम्बन्ति दो वि तस्स थणया, पोट्टं[14] अयकोट्ठओ[15] व्व[16] वट्टं[17], पाणकलन्दसरिसा[18] से नाही[19],

---

१ So A; but B ॰कूडा॰, D ॰कुद्दा॰, E e ॰कुद्दाल॰, F ॰कुडा॰, a f ॰कुड्डा॰; B ॰संठिते, D E ॰संठिय। २ D E व। ३ So a f, B खडं, A खंडं, E e खटं (cf. Marāṭhī खड्डा or खाड or खाडा 'a rough hole' or 'pit'). ४ A फडं, B फडुं, E फुट्टं। ५ A फरूसं, D परिसं, E फरिसं। ६ F मुयंगा॰, (see Hem. I, 46 and Nām. 266). ७ A B F ॰पट्टाग॰, D E ॰पाट्टग॰ (see Hem. I, 262). ८ D E place तस्स दो वि। ९ E om. अग्ग। १० A inserts संठाण। ११ D e नट्ठा (see Hem. II, 99). १२ F नाविय॰ (see Hem. I, 230); A D E ॰पसेवउ, B ॰पसव, F ॰पसिवउ। १३ So C, [illegible] A B D E F च (see Hem. II, 182). १४ A पेट्टं, Hindī and Gujarātī have पेट, but Marāṭhī पोट। १५ A B D E F ॰कोट्ठउ। १६ So B, but A ब, D E F व। १७ D E वत्तं (see Hem. II, 29). १८ A पाणलंद॰, B F पाणालंद॰, E पाणाकलंद॰। १९ D E नाभी।

सिक्कगसंठाणसंठिए से नेत्ते[1], किण्हपुडसंठाणसंठिया[2] दो वि तस्स वसणा, जमलकोट्ठियासंठाणसंठिया दो वि तस्स[3] ऊरू, अज्जुणगुट्ठं[4] व[5] तस्स जाणूइं कुडिल-कुडिलाइं विगयबीभच्छदंसणाइं[6], जङ्घाओ करकडीओ लोमेहिं[7] उवचियाओ[8], अहरीसंठाणसंठिया[9] दो वि तस्स पाया[10], अहरीलोढसंठाणसंठियाओ पाएसु[11] अङ्गुलीओ, सिप्पिपुडसंठिया[12] से नक्खा[13] ॥ ९४ ॥

लडहमडहजाणुए[14] विगयभग्गभुग्गभुमए[15] अवदालियवयणविवरनिल्लालियग्गजीहे[16] सरडकयमालियाए उन्दुरमालापरिणद्धसुकयचिंधे[17], नउलकयकण्णपूरे[18], सप्पकयवेगच्छे[19], अप्फोडन्ते[20], अभिगज्जन्ते[21],

---

१ E reads पोत्ते, Hindī पोता 'scrotum'. २ F किण्ह०। ३ D E place तस्स दो वि। ४ A अज्जुणगुट्ठ। ५ A F च, D ब। ६ A om. विगय। ७ F लोम्मेहिं। ८ A उववियाओ। ९ D E अधरी०। १० D पादा। ११ A B D पएसु। १२ F सिप्प०; A inserts संठाण। १३ D E णहा, F नहा। १४ A D जंघाए, a f जन्नुए (see Nām. 251, जगहुया). १५ A भगुभुमए, B भुगुभमीते, F भुग्गुभुमए, E ०भमुए। १६ A B ०वदण०; D F ०निद्दालियग्ग०। १७ So A D; but B E F उंदर०; F ०परिणिट्ठ०, E ०परिणट्ठ०; E ०विहे। १८ So A F; but B णउणकय०, D E णउण० om. कय; F ०कणहपूरे। १९ A B F ०विगच्छे। २० A आफेडेंति, B D F अफोडंते। २१ A B अभिगच्छंति।

भीममुक्कट्टहासे[१], नाणाविहपञ्चवण्णेहिं लोमेहिं उवचिए एगं महं नीलुप्पलगवलगुलियअयसिकुसुमप्पगासं[२] असिं खुरधारं गहाय, जेणेव पोसहसाला, जेणेव कामदेवे समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ, २त्ता आसुरत्ते[३] रुट्ठे[४] कुविए चण्डिक्किए[५] मिसिमिसीयमाणे[६] कामदेवं[७] समणोवासयं एवं वयासी। "हो भो कामदेवा समणोवासया, अप्पत्थियपत्थिया[८], दुरन्तपन्तलक्खणा[९], होणपुण्णचाउद्दसिया[१०], हिरिसिरि-

---

१ B E °मुक्काट्टहासे, D मुक्काअट्टहासे। २ D E नीलोप्पल° (see Hem I, 8+). ३ So A B D E; but F आसुरुत्ते। ४ A B om. from रुट्ठे up to मिसि° incl., F reads आसुरुत्ते मिसिमिसे तिव्वे चंडे कोविए। ५ So a e f; D चंडिकीए, E चंडिक्कीए, F चंडे (see Bhag., p. 214). ६ So D e; but E मिसिमिसियमाणे, F मिसिमिसे (probably abbreviated for मिसिमिसेमाणे, see Bhag., p. 214, Nir. 5, 12, 22), a f मिसिमिसीमाणे। ७ E has कामदेवस्स which is a misprint for कामदेवं स°। ८ A B °पत्थया। ९ A abbreviates the following thus: दुरंत ५ जाव परिवज्जिया, where the numeral stands for पन्तलक्खणा होणपुण्णचाउद्दसिया, and जाव for हिरिसिरिधिइकित्ति; B has the same, only omitting the numeral ५। १० So D; but E °चाउदिसया, F चउद्दसजाया, A B om.

धिइकित्तिपरिवज्जिया[1], धम्मपुण्णसग्गमोक्खकामया[2],

---

१ E सिरिहरिधिकित्ति ४ जाव पडिवज्जिया, F हरिसिरिपरिवज्जिया; A B F परिवज्जिया (see note २० on p. ५०). । २ The proper reading of the phrases down to नो खलु is somewhat uncertain. The reading adopted in the text is founded on that of MS. A which has धम्मकामया पुण्णसग्गमोक्ख धम्मकंखिया ५ धम्मपिवासिया ५, the numeral being expressed by the letter ङ्ग. The numeral 5 shows that each phrase धम्मकामया, धम्मकंखिया, धम्मपिवासिया, must be expanded to a compound consisting of five members, by the insertion of the three-membered phrase पुण्णसग्गमोक्ख. There is however, another possible way of interpretation, which is adopted in MS. F, and reads thus: धम्मकामया, पुण्णकामया, सग्गकामया, मोक्खकामया, धम्मकंखिया, पुण्णकंखिया, सग्गकंखिया, मोक्खकंखिया, धम्मपिवासिया, पुण्णपिवासिया, सग्गपिवासिया, मोक्खपिवासिया. This interpretation is also found in the MSS. D and E, which give the reading of MS. F in the following abbreviated form: धम्मकामया पुण्णसग्गमोख धम्मकंखिया ४ धम्मपिवासिया ४. Here the numeral 4 would indicate that कामया, कंखिया and पिवासिया should each be repeated with each of the four terms धम्म पुण्ण सग्ग मोक्ख. It will be observed that the reading of MS. A differs from that of MSS. D and E only with regard to the indicatory numeral; but the difference points to two quite distinct arrangements of the text. I have adopted the form of the text indicated by the reading of MS. A, as being the simpler and more appropriate one. The form of the text, however, as indicated by MSS. D and E, and as set out in MS. F, appears to be the one preferred by the

धम्मकङ्खिया ५, धम्मपिवासिया ५, नो खलु कप्पइ तव, देवाणुप्पिया, जं[१] सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं[२] चालित्तए[३] वा खोभित्तए[४] वा खण्डित्तए वा भञ्जित्तए वा उज्झित्तए[५] वा परिचइत्तए[६] वा, तं जइ[७] णं तुमं अज्ज सीलाइं[८] जाव* पोसहोववासाइं[९] न छड्डसि[१०] न भञ्जेसि[११], तो ते[१२] अहं अज्ज इमेणं नीलुप्पल[१३] जाव* असिणा खण्डाखण्डिं[१४] करेमि, जहा णं तुमं, देवाणुप्पिया[१५], अट्टदुहट्टवसट्टे अकाले चेव जीवियाओ[१६] ववरोविज्जसि[१७]" ॥ ९५ ॥

---

* Supply the rest from the earlier portion of the paragraph.

---

Jain schools, as it is adopted in the commentary of Abhayadeva. MS. B has no numeral whatever.

१ D E om. २ A पोसहे ववासाइं। ३ D E चालंतए। ४ D खोभंतए, E खोभंतस्स, a misprint. ५ A B उज्झत्तए, F उज्झियत्तए। ६ A परिचयित्तए, B परिचत्तए, E F परिचइत्तए। ७ F जया। ८ D E सीलव्वयाइं, F सीलाइं वयाइं वेरमणाइं। ९ A पोसहवववासाइं। १० A छडेसि, B छड्डेसि, D छंडेसि, E छंडसि, F छडसि ( Skr. छर्द्, See Hem. IV, 91 ). ११ A भजेसि, B भुंजेसि। १२ B F तता, D E तो। १३ D E नीलुप्पलेण जाव, F in full नीलुप्पलगवलगुलियअयसिकुसुमपगासेहिं (sic) खुरधारेहिं असिणा। १४ So A F a f; but B D E e खंडाखंडं। १५ A B D E om. १६ D E जीवयाओ। १७ B ववरोज्जसि, D E ववरोविइज्जसि, F ववरोवज्जसि।

तए णं से कामदेवे समणोवासए तेणं देवेणं[१] पिसायरूवेणं एवं वुत्ते समाणे, अभीए अतत्थे अणुव्विग्गे[२] अक्खुभिए[३] अचलिए असम्भन्ते तुसिणीए[४] धम्मज्झाणोवगए विहरइ[५] ॥ ९६ ॥

तए णं से देवे[६] पिसायरूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं[७] जाव* धम्मज्झाणोवगयं विहरमाणं पासइ, २ त्ता दोच्चं[८] पि तच्चं पि कामदेवं एवं वयासी। "हं भो कामदेवा समणोवासया अपत्थियपत्थिया[९], जइ णं तुमं अज्ज जाव† ववरोविज्जसि[१०]" ॥ ९७ ॥

तए णं से कामदेवे समणोवासए तेणं देवेणं[११] दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे, अभीए जाव* धम्मज्झाणोवगए विहरइ ॥ ९८ ॥

---

* Supply the rest from § 96.

† Supply the rest from § 95.

---

१ D E दिव्वेणं। २ So F; but A B D E अणुविग्गे। ३ F अक्खुभीए, D E अणुक्खुभिए, B अभिक्खुते। ४ D E तुसणीए, after which they add चिट्ठइ। ५ A विहरन्ति। ६ A B D E दिव्वे। ७ After अभीयं D E add अतत्थं। ८ F दुच्चं। ९ A अपत्थिया, B अपत्थियपत्थया। १० D वरोविज्जसि, B वरोवज्ज (sic), the initial व omitted by oversight, owing to the preceding final व of जाव; F विवरोविज्जसि। ११ A D E दिव्वेणं।

तए णं से देवे[1] पिसायरूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं जाव* विहरमाणं पासइ, २ त्ता आसुरत्ते[2] ५[3]‡ तिवलियं[4] भिउडिं निडाले[5] सहट्टु, कामदेवं समणोवासयं नीलुप्पल जाव† असिणा खण्डाखण्डिं[6] करेइ ॥ ९९ ॥

तए णं से कामदेवे समणोवासए तं उज्जलं जाव† दुरहियासं[7] वेयणं सम्मं[8] सहइ जाव§ अहियासेइ[9] ॥ १०० ॥

तए णं से देवे[10] पिसायरूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं जाव* विहरमाणं पासइ, २ त्ता जाहे[11] नो संचाएइ कामदेवं समणोवासयं निग्गन्थाओ पावयणाओ चालित्तए[12] वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए[13]

---

* Supply the rest from § 96.
† Supply the rest from § 95.
‡ See the supplement in the commentary to § 111.
§ Supply खमइ तितिक्खइ from Kap. § 117.

---

१ A B दिव्वे। २ A B F आसुरुत्ते, D आसुत्ते। ३ D E ४, F in full मिसिमिसे तिव्वे चंडे कोविए। ४ A B तिवलिउं। ५ F निलाडे। ६ B D E खंडाखंडं। ७ F दुरूहियासं। ८ B समं। ९ D E अहिवासेइ, E in errata list अहियासेइ। १० A B D E दिव्वे। ११ So C F; but A B D E जाव। १२ D चालेत्तए। १३ A विप्परिणामत्तए, B F विप्परिणामेत्तए, D E विपरिणामतए।

वा, ताहे सन्ते तन्ते[1] परितन्ते[2] सणियं सणियं पच्चो-सक्कइ[3], २ त्ता पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ[4], २ त्ता दिव्वं पिसायरूवं विप्पजहइ, २ त्ता एगं महं[5] दिव्वं[6] हत्थिरूवं विउव्वइ,[7] सत्तङ्गपइट्ठियं[8] सम्मं[9] संठियं सुजायं, पुरओ उद्गं पिट्ठओ वाराहं[10] अयाकुच्छिं अलम्बकुच्छिं[11] पलम्बलम्बोदरा[12]घरकरं अब्भुग्गयम-उलमल्लियाविमलधवलदन्तं कञ्चणकोसीपविट्ठदन्तं[13] आणामियचावललियसंवल्लियग्गसोण्डं[14] कुम्मपडि-पुण्णचलणं[15] वीसइनक्खं अल्लीणपमाणजुत्तपुच्छं[15] ॥ १०१ ॥

मत्तं मेहमिव[16] गुलगुलेन्तं[17] मणपवणजइणवेगं[18] दिव्वं हत्थिरूवं विउव्वइ, २त्ता[19] जेणेव पोसहसाला-

---

१ E om. २ B परिसंते (see Kap. § 60, Nir. § 12). ३ B पच्चोरुहति। ४ A B F पडिनिक्खमइ। ५ F महंतं। ६ D E place दिव्वं एगं महं। ७ A विउवंति। ८ A B D °पतिट्ठियं, E °पयिट्ठियं। ९ So D E F; but A B a e f समं; A समसंठिया। १० A D E and comm. वराहं। ११ B अयाकुच्छियं लंबकुच्छिय पलं°, F अयाकुच्छिं अलंबऊकुच्छिं। १२ A °कोसए विट्ठदंतं, B °कोसीए विट्ठदंतं। १३ D E F अणामिय°; D E °संवेल्लितं अग्गसोंडं। १४ F °पडि-पुडि°; D °चलवणं। १५ F अलीणयपमाण°। १६ F मेहमेव। १७ B गुलगुलंतं, D E गुलुगुलेंतं, F गुलगुलिंतं। १८ A °जयणि°, D E °जणिय°। १९ A B D E om.

जेणेव कामदेवे समणोवासए तेणेव उवागच्छइ, २त्ता कामदेवं समणोवासयं[१] एवं वयासी। "हं भो कामदेवा समणोवासया[२], तहेव भणइ जाव* न भञ्जेसि[३], तो ते अज्ज[४] अहं सोणडाए[५] गिण्हामि[६], २त्ता पोसहसालाओ नीणेमि, २त्ता उड्ढं वेहासं[७] उव्विहामि, २त्ता तिक्खेहिं दन्तमुसलेहिं पडिच्छामि, २त्ता अहे धरणितलंसि तिक्खुत्तो पाएसु लोलेमि, जहा[८] णं तुमं अट्टदुहट्टवसट्टे[९] अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि[१०]" ॥ १०२ ॥

तए[११] णं से कामदेवे समणोवासए तेणं देवेणं[१२] हत्थिरूवेणं एवं वुत्ते समाणे, अभीए जाव† विहरइ ॥ १०३ ॥

तए णं से देवे[१३] हत्थिरूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं जाव† विहरमाणं पासइ, २ त्ता दोच्चं[१४] पि

---

* See the rest in § 95.

† Supply the rest from § 96.

---

१ A D E om. २ A B D E om. ३ A B भंजसि। ४ F अज्जे for अज्जेव। ५ F सुंडाए। ६ D E गेण्हामि। ७ F विहासि। ८ D E जया। ९ F ० विसट्टे। १० A ववरोविज्जसे, D E विवरोविज्जसि। ११ D E तं for तए णं; see Errata list in E। १२ A D E दिव्वेणं, B देव्वेणं, F दिवेणं। १३ A D E F दिव्वे, B देव्व। १४ F दुच्चं।

तच्चं पि कामदेवं समणोवासयं[1] एवं वयासी । "हं भो कामदेवा" तहेव[2] जाव* सो[3] वि विहरइ ॥ १०४॥

तए[4] णं से देवे[5] हत्थिरूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं जाव[6]† विहरमाणं पासइ, २ त्ता आसुरत्ते[7] ४[8]‡, कामदेवं समणोवासयं सोण्डाए गिण्हेइ,[9] २ त्ता उड्ढं वेहासं[10] उव्विहइ, २ त्ता तिक्खेहिं दन्तमुसलेहिं[11] पडिच्छइ, २ त्ता अहे धरणितलंसि तिक्खुत्तो पाएसु लोलेइ ॥ १०५ ॥

तए णं से कामदेवे समणोवासए[1] तं उज्जलं जाव[2] अहियासेइ ॥ १०६ ॥

तए णं से देवे[5] हत्थिरूवे कामदेवं समणोवासयं[1] जाहे[12] नो संचाएइ जाव§ सणियं सणियं पच्चोसक्कइ,

---

* Supply the rest from §§ 97, 98.
† Supply the rest from § 95.
‡ Supply the rest from § 95.
§ See the rest in the commentary to § 111.
‖ Supply the rest from § 101.

---

१ A B D E om. २ E गो for तहेव जाव सो वि। ३ D om. सो वि। ४ D E तं for तए णं। ५ A B D E F दिव्वे। ६ E om. ७ A B आसुरुत्ते। ८ B om., F in full मिसिमिसे तिव्वे चंडे कोविए। ९ F गिण्हइ। १० E F विहासं। ११ A °मूसलेण। १२ So F; but A B D E जाव।

२ त्ता पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ,[1] २ त्ता दिव्वं हत्थिरूवं विप्पजहइ, २ त्ता एगं महं दिव्वं सप्परूवं विउव्वइ, उग्गविसं चण्डविसं[2] घोरविसं महाकायं मसीमूसाकालगं[3] नयणविसरोसपुण्णं अञ्जणपुञ्जनिगरप्पगासं[4] रत्तच्छं लोहियलोयणं[5] जमलजुयलचञ्चलजीहं[6] धरणीयलवेणिभूयं[7] उक्कडफुडकुडिलजडिलकक्कसवियडफुडाडोवकरणदच्छं[8] ॥ १०७ ॥

लोहागरधम्ममाणधमधमेन्तघोसं[9] अणागलियतिव्वचण्डरोसं सप्परूवं विउव्वइ,[10] २ त्ता जेणेव पोसहसाला जेणेव कामदेवे समणोवासए[11], तेणेव उवागच्छइ, २ त्ता कामदेवं समणोवासयं एवं वयासी। "हं भो कामदेवा समणोवासया[11], जाव* न भञ्जेसि,[12]

* Supply the rest from § 95.

१ A B F °निक्खमइ। २ So C and comm.; but A B D E F दिट्ठीविसं instead of चंडविसं घोरविसं। ३ So D E; but A B कालगयं, F कालगतं। ४ F °निग्गर°। ५ D E रत्तत्थं, A B F रत्तच्छलो°। ६ D E जमलजयलं चं°। ७ D E धरणि°; D E °भूयं। ८ D E F °जटिल°; D E °विच्चव° for °वियड°; D °वच्छं; E °दत्थं। ९ A °धमधमित°, B °धमिमिंत°, D E °धम्मित°, F °धम्मधमिंत°। १० D E om. ११ A B D E om. १२ A B D F भंजसि।

तो[1] ते अज्जेव अहं सरसरस्स[2] कायं दुरुहामि,[3] २ त्ता पच्छिमेणं भाएणं तिक्खुत्तो गीवं वेढेमि, २ त्ता तिक्खाहिं[4] विसपरिगयाहिं दाढाहिं उरंसि[5] चेव निकुट्टेमि, जहा णं तुमं अट्टदुहट्टवसट्टे[6] अकाले चेव[7] जीवियाओ ववरोविज्जसि" ॥ १०८॥

तए[8] णं से कामदेवे समणोवासए[9] तेणं देवेणं[10] सप्परूवेणं एवं वुत्ते समाणे, अभीए जाव* विहरइ॥ सो वि दोच्चं पि तच्चं पि भणइ, कामदेवो[11] वि[12] जाव† विहरइ ॥ १०९॥

तए[13] णं से देवे[14] सप्परूवे कामदेवं समणोवासयं[15] अभीयं जाव* पासइ, २ त्ता आसुरत्ते[15] ४[16] ‡ काम-

* Supply the rest from § 96.
† See §§ 97, 98.
‡ Supply the rest from § 95.

१ D ततो, E तओ for तो ते। २ A सरस्स रस्स, B सरस्स सरस्स। ३ B D दुरूहामि, E दूरूहामि। ४ A B तिक्खाइं। ५ A B E उरसि। ६ A B D E om. वसट्टे, F °विसट्टे। ७ A B om. the rest चेव जी० वव०। ८ A B D तं for तए णं। ९ A B om. १० A D E F दिव्वेणं, B om. ११ A B कामदेवे; F reads कामदेवा समणोवासया for कामदेवो वि। १२ E om. १३ D तं for तए णं। १४ A D E दिव्वे, B F देवे। १५ A B आसुरुत्ते। १६ D E om., F in full मिसिमिसे तिव्वे चंडे कोविए।

देवस्स सरसरस्स[1] कायं दुरुहइ[2], २ त्ता पच्छिमभएणं तिक्खुत्तो गीवं वेढेइ, २ त्ता तिक्खाहिं विसपरिगयाहिं दाढाहिं उरंसि चेव निकुट्टेइ ॥ ११० ॥

तए[3] णं से कामदेवे समणोवासए[4] तं उज्जलं जाव* अहियासेइ ॥ १११ ॥

तए[5] णं से देवे[6] सप्परूवे कामदेवं समणोवासयं[7] अभीयं जाव† पासइ, २ त्ता जाहे न संचाएइ कामदेवं समणोवासयं निग्गन्थाओ पावयणाओ[8] चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए[9] वा, ताहे सन्ते ३ ‡[10] सणियं सणियं पच्चोसक्कइ, २ त्ता पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ,[11] २ त्ता दिव्वं सप्परूवं विप्पजहइ, २ त्ता एगं महं दिव्वं देवरूवं विउव्वइ हारविराइयवच्छं[12] जाव§ दसदिसाओ उज्जोवे-

---

* See the rest in the commentary to § 111.

† Supply the rest from § 96.

‡ Supply the rest from § 101.

§ See the supplement in the commentary; also in Ov., § 33.

---

१ A सरसर, E सरस्स। २ D दुरूहइ, E दूरूहइ। ३ A B D तं for तए णं। ४ A B D E om. ५ A B D E दिव्वे। ६ D E om. ७ E पवयणाओ। ८ A B D E विप्परित्तए। ९ F in full तंते परितंते। १० A B F °निक्खमइ। ११ A D E °वत्थं।

माणं पभासेमाणं[१] पासाईयं[२] दरिसणिज्जं[३] अभिरूवं पडिरूवं ॥ ११२ ॥

दिव्वं देवरूवं विउव्वइ,[४] २ त्ता कामदेवस्स समणोवासयस्स[५] पोसहसालं अणुप्पविसइ,[६] २ त्ता अन्तलिक्खपडिवन्ने[७] सखिङ्खिणियाइं पञ्चवण्णाइं वत्थाइं पवरपरिहिए[८] कामदेवं समणोवासयं[९] एवं वयासी । "हं भो कामदेवा समणोवासया, धन्ने सि णं तुमं,[१०] देवाणुप्पिया,[११] सम्पुण्णे[१२] कयत्थे[१३] कयलक्खणे, सुलद्धे णं तव, देवाणुप्पिया, माणुस्सए[१४] जम्मजीवियफले, जस्स णं[१५] तव निग्गन्थे[१६] पावयणे इमेयारूवे पडिवत्ती लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया । एवं खलु, देवाणुप्पिया, सक्के देविन्दे[१७] देवराया[१८] जाव* सक्कंसि सीहासणंसि

* See the supplement in the commentary ; also in Kap. § 14.

१ B om. २ So A B C ; but F पासाइयं, D E पासइ. ३ So C F in full ; but A B only ४, D E om. ४ A B F om. ५ D E om. ६ F अणुपविसइ । ७ E अंतरिक्ख० । ८ E om. पवर० । ९ B D E om. १० F तुमे । ११ F देवाणुप्पिये । १२ A B सपुन्ने for सपुण्णे (Skr. सपुण्णः), C सप्पुरिसे (Skr. सत्पुरुषः), F से पुण्णे सि णं तुमं देवाणुप्पिये । १३ D E कयट्ठे । १४ D E माणुस्सजम्म० । १५ D E add देवाणुप्पिया ।। १६ D E read निग्गंथाओ पावयणाओ मेरु व्व for नि० पा० इमेयारूवे । १७ A B F देवेंदे । १८ After देवराया, A B F add सयक्कउ, D E add सयक्कउ सहस्सक्खे, which additions are inconsistent with जाव and with the commentary.

चउरासीईए[1] सामाणियसाहस्सीणं[2] जाव* अन्नेसिं च बहूणं देवाण य देवीण य मज्झगए एवमाइक्खइ[3] ४ †[4]। ""एवं खलु, देवा[5], जम्बुद्दीवे[6] दीवे[7] भारहे वासे चम्पाए नयरीए कामदेवे समणोवासये पोसहसालाए पोसहिए बम्भचारी[8] जाव‡ दब्भसंथारोवगए समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तियं धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जित्ताणं विहरइ। नो खलु से सक्का[9] केणइ देवेण वा दाणवेण वा जाव§ गन्धव्वेण[10] वा निग्गन्थाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा""। तए णं अहं सक्कस्स देविन्दस्स देवरण्णो एयमट्ठं असद्दहमाणे ३ ॥[11] इहं[12]

* See the footnote on the preceding page.

† See the supplement in the commentary, also footnote † on page ३०.

‡ Supply the rest from Nāy. § 87.

§ See the supplement in the commentary; and a similar formula on page १६, footnote १५, and Ov. § 124, Bhag., p. 238.

‖ Supply अपत्तियमाणे अरोएमाणे अणब्भट्ठेमाणे from Nāy. § 132, Bhag., p. 272.

१ F चउरासीए। २ F °सहस्सीए। ३ E आहिक्खइ। ४ F in full एवं भासइ एवं पन्नवेइ एवं परूवेइ। ५ So A B D, but E देव°, F देवाणुप्पिया। ६ A B D E जंबूद्दीवे incorrect; but F जंबूदीवे correct. ७ A B D E F only २ for दीवे। ८ F बंभयारी। ९ A सक्को। १० D E place गंधव्वेण वा जाव, and B adds रक्खसेण वा किंपुरिसेण वा। ११ F in full अपत्तिएमाणे अरोयमाणे। १२ A इह।

हव्वमागए[1]। तं[2] अहो णं[3], देवाणुप्पिया, इड्ढी ई* लद्धा इ†, तं दिट्ठा णं, देवाणुप्पिया, इड्ढी जाव‡ अभिसमन्नागया[4]। तं खामेमि[5] णं, देवाणुप्पिया, खमं[6] तुमं रुहन्ति णं, देवाणुप्पिया, नाइं[7] भुज्जो करणयाए" त्ति कट्टु पायवडिए[10] पञ्जलिउडे[11] एयमट्ठं भुज्जो भुज्जो खामेइ,[12] २ त्ता जामेव दिसं पाउब्भूए,[13] तामेव दिसं पडिगए ॥ ११३ ॥

तए[14] णं से कामदेवे समणोवासए "निरुवसग्गम्"[15] इति कट्टु पडिमं पारेइ[16] ॥ ११४ ॥

---

* See the supplement in the commentary; also in Ov. § 69, and Bhag., p. 223.

† Supply from above पत्ता अभिसमन्नागया. See also Bhag., p. 223.

‡ Supply the rest from the immediately preceding sentence; see also Bhag., p. 223.

---

१ D E आगओ। २ F om. ३ A D E om. ४ B reads इड्ढीफलल्लद्धा। ५ F in full पत्ता अभिसमन्नागया। ६ F अभिसमन्नागया। ७ F खामिमि (see Hem. III, 155). ८ So E; A खमं तुम रुहति, B खमं तु तिक्खं तुमं रूहंति, D खमं तुमं स रुहंति, F खमं तु खमं तुम रुहंते। ९ A B D E F णाइ, comm. नाइ (cf. Hem. II, 190). १० A B ०पडिए। ११ A पंजलियडे। १२ D खामेमि। १३ A पाओभूए, B पाउ, D E पाउब्भुए, F पाउभया। १४ B omits paragraph 114 entirely. १५ F निरुवसग्गंमिति। १६ D पारिइ, E पारइ।

तेणं[१] कालेणं तेणं समएणं समणे[२] भगवं[३] महावीरे जाव*[४] विहरइ ॥ ११५ ॥

तए णं से कामदेवे समणोवासए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे "एवं खलु समणे भगवं[५] महावीरे जाव* विहरइ, तं सेयं खलु मम[६] समणं भगवं महावीरं वन्दित्ता[७] नमंसित्ता तओ पडिणियत्तस्स[८] पोसहं पारित्तए"[९] त्ति कट्टु एवं सम्पेहेइ,[१०] २ त्ता सुद्धप्पावेसाइं वत्थाइं जाव†[११] अप्पमहग्घ[१२] जाव †[११] मणुस्सवग्गुरापरिक्खित्ते[१२] सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ,[१३] २ त्ता च चम्पं[१४] नगरिं[१५] मज्झं मज्झेणं निग्ग-

---

* Supply the rest from Ov. § 38, from आइगरे up to भावेमाणे; but if the reading of MSS. D E be accepted (see footnote ४), only from इह चम्पाए up to भावेमाणे. See also Nāy. §§ 4, 127, 129.

† Supply the rest from Ov. § 17. See also § 10, on page ९.

---

१ B omits paragraph 115 entirely. २ F om. ३ A om. भगवं महावीरं। ४ Before जाव D E insert समोसरिए समणे। ५ A B D E om. भगवं महावीरे। ६ D E F मम। ७ B वंदेत्ता। ८ A B F °नियत्तस्स। ९ A B D पारेत्तए। १० F संपेहइ। ११ A B D E F om. १२ A B om. महग्घ। १२ A B om. परिक्खित्ते। १३ A B F °निक्खमइ। १४ A B चंपानगरिं। १५ F नगरं।

च्छइ, २ त्ता[1] जेणेव पुण्णभद्दे चेइए जहा सङ्खो[*] जाव[*] पज्जुवासइ ॥ ११६ ॥

तए णं समणे भगवं महावीरे कामदेवस्स समणोवासयस्स[3] तीसे य जाव[†] धम्मकहा सम्मत्ता ॥ ११७ ॥

"कामदेवा"[4] इ समणे भगवं महावीरे कामदेवं समणोवासयं[5] एवं वयासी। "से नूणं, कामदेवा, तुब्भं[6] पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि एगे देवे अन्तिए[7] पाउब्भूए। तए णं से देवे एगं महं दिव्वं[8] पिसायरूवं विउव्वइ, २ त्ता आसुरत्ते[9] ४ [‡10] एगं महं नीलुप्पल जाव [‡11] असिं गहाय तुमं एवं वयासी[12]।

---

* The reference, according to the commentary, is to the story of the Shrāvaka Sankha in the Bhagavatī. The rest of the formula is given in the commentary. See also footnote § on page ५

† See the supplement in the commentary; also footnote * on page ७.

‡ See the supplement in § 95.

---

१ A B om. २ त्ता। २ So comm., but A F संक्खे, B D F संखे। ३ B D E om.; F has कामदेवं समणोवासएणं। ४ A कामदेवा ति, B कामदेवा दि, D कामदेव दुइ, E कामदेवे इ, F कामदेवा य। ५ D E om. ६ E तुम्मं। ७ B om., D E अंतियं। ८ E om. ९ A आसुरूत्ते, B आसुरुत्ते। १० F in full मिसिमिसे तिव्वे चंडे कोविए। ११ A B D E om. १२ A वदासी।

""हं भो कामदेवा जाव* जीवियाओ[1] ववरोविज्जसि""। तं[3] तुमं तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे[4] अभीए जाव† विहरसि[5]""॥ एवं वस्सगरहिया[6] तिन्नि वि उवसग्गा तहेव[9] पडिउच्चारेयव्वा[8] जाव† देवो पडिगओ[9]॥ "से नूनं कामदेवा[10] अट्ठे[11] समट्ठे"?।

"हन्ता, अत्थि"॥ ११८॥

"अज्जो" इ समणे भगवं महावीरे बहवे समणे निग्गन्थे य[12] निग्गन्थीओ य आमन्तेत्ता[13] एवं वयासी। "जइ ताव, अज्जो,[14] समणोवासगा गिहिणो[15] गिहिमज्झा[16] वसन्ता दिव्वमाणुसतिरिक्खजोणिए उवसग्गे सम्मं[17] सहन्ति[18] जाव‡ अहियासेन्ति,[19] सक्का

* See the supplement in § 95.
† See the supplement in § 96.
‡ The reference is to §§ 97, 98, etc.
§ See footnote § on page ५४

१ D E जीवाओ। २ A B abbreviate ववरो, D ववरोविज्जासि, E ववरोविज्जामि, F ववरोवेति। ३ A B F om. ४ A B om. ५ A B विहरति। ६ B °रहिता, F °सहिता। ७ A B तं चेव। ८ F °उच्चारियव्वा (see Hem. III, 157). ९ E F पडिगया। १० F कामदेवे। ११ A B F अत्थे समत्थे। १२ A om., B वि। १३ F आमंतित्ता। १४ B अज्जा। १५ B om. १६ E गिह°; A B F °मज्झे। १७ B E समं। १८ A सहसि, B D सहति, E F सहइ। १९ A अहियासेत्ति, B अहियासित्ति, D अहियासेति, E F अहियासेइ।

पुणाइं, अज्जो, समणेहिं निग्गन्थेहिं दुवालसङ्गं गणिपिडगं[१] अहिज्जमाणेहिं दिव्वमाणुसतिरिक्खजोणिए[२] सम्मं[३] सहित्तए[४] जाव* अहियासित्तए[४]"॥ ११९॥

तओ[५] ते बहवे समणा निग्गन्था य[६] निग्गन्थीओ य[७] समणस्स भगवओ महावीरस्स[८] "तह" त्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणन्ति[९]॥ १२०॥

तए णं से कामदेवे समनोवासए हट्ठ[१०] जाव† [११] समणं भगवं महावीरं[८] पसिणाइं पुच्छइ,[१२] अट्ठमादियइ, समणं भगवं महावीरं[८] तिक्खुत्तो वन्दइ[१३] नमंसइ, २ त्ता[१४] जामेव दिसं[१५] पाउब्भूए,[१६] तामेव दिसं[१७] पडिगए[१८]॥ १२१॥

---

* See footnote § on page ५४.

† For the supplement see § 12.

---

१ So E, but A B D D F पडिगं। २ A देव०; F देवमणुस०; A B °माणुसे तिरिक्ख०; E °जोणिएहिं। ३ A B E समं। ४ E सहित्तए, अहियासंतए। ५ D E तए णं से for तओ ते। ६ B om. ७ F om. ८ A B om. भगव० महावीर०। ९ B पडिसुणेंति, D पडिसुणे, E पडिसुणेइ। १० D E हट्ठतुट्ठ, F हट्ठतुट्ठे। ११ A B D E F om. १२ F पुच्छित्तए। १३ A वंदंति नमंसंति plur. १४ B F om., D E in full वंदित्ता नमंसित्ता। १५ D E दिसिं। १६ A B D E F पाउब्भूया nom. plur. (compare footnote १३). १७ D E F दिसिं। १८ So B; but A D E F पडिगया nom. plur.

तए[1] णं समणे भगवं महावीरे[2] अन्नया कयाइ[3] चम्पाओ पडिणिक्खमइ,[4] २ त्ता बहिया जणवय-विहारं[5] विहरइ[6] ॥ १२२ ॥

तए[7] णं से कामदेवे समणोवासए[8] पढमं उवासगपडिमं उवसम्पज्जित्ताणं[9] विहरइ ॥ १२३ ॥

तए णं से कामदेवे समणोवासए बहूहिं[10] जाव* भावेत्ता[11] वीसं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणित्ता, एक्कारस[12] उवासगपडिमाओ[13] सम्मं काएणं फासेत्ता,[14] मासियाए[15] संलेहणाए अप्पाणं[16] झूसित्ता,[17] सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए[18] छेदेत्ता,[19] आलोइयपडिक्कन्ते,[20] समाहिपत्ते,[21] कालमासे[22] कालं[23] किच्चा,

* See the supplement in §§ 66 and 89.

१ A B D तओ for तए णं। २ A B om. भगवं महावीरे। ३ A D E F om. ४ So A; but B D E F abbreviate पडि०। ५ B abbreviates जण० विहरइ, D E T जणवय जाव विहरइ। ६ A विहरंति plur. ७ B तं for तए णं। ८ B om. ९ A B D abbreviate उव०, E inserts जाव after it. १० So B, but A D E F बहूहिं। ११ F भावित्ता। १२ B om., F एकारस। १३ D E °पडिमं। १४ F फासित्ता। १५ E दुमासियाए। १६ D E अत्ताणं। १७ F झुसित्ता। १८ F अणसणाइं। १९ E छेएत्ता, F छेदित्ता। २० A B D E abbreviate आलोइय०। २१ B समाधि०। २२ A E कालंमासे। २३ B om. कालं किच्चा।

सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडिंसयस्स[1] महाविमाणस्स उत्तरपुरत्थिमेणं[2] अरुणाभे विमाणे देवत्ताए उववन्ने[3]। तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई[4] पण्णत्ता। कामदेवस्स वि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिई[5] पण्णत्ता ॥ १२४ ॥

"से णं[6], भन्ते, कामदेवे[7] ताओ[8] देवलोगाओ[9] आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणन्तरं चयं[10] चइत्ता, कहिं गमिहिइ,[11] कहिं उववज्जिहिइ[12]"? ।

"गोयमा, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ[13]" ॥ १२५ ॥

॥ निक्खेवो ॥

सत्तमस्स अङ्गस्स उवासगदसाणं[14] बीयं[15] अज्झयणं समत्तं ॥

---

१ A B °वडंसयस्स। २ D E °पुरच्छिमेणं। ३ D उववन्नो। ४ A ठितो, B D ठिती, E ठिइ, F ठिइ। ५ So B E; but A ठिती, D ठिति, F ठिइ। ६ B D om. ७ B कामदेवो। ८ D E तओ चेव। ९ A B देवलोयाओ। १० B D E only इ. as in § 90. ११ E चइ। १२ E गमिहिंति, F गमेहिं। १३ A [illegible]हिंति plur., F उववज्जेहिंति। १४ E F सिज्झि- [illegible] D E F om. सत्त० अङ्ग० उवा०। १५ After [illegible]इयं।

[1]तइयं अज्झयणं ।

॥ उक्खेवो[2] तइयस्स अज्झयणस्स[3] ॥

एवं खलु, जम्बू, तेणं कालेणं तेणं समएणं[4] बाणारसी नामं नयरी । कोट्ठए चेइए । जियसत्तू राया[5] ॥ १२६ ॥

तत्थ णं बाणारसीए नयरीए[6] चुलणीपिया[7] नामं गाहावई परिवसइ अड्ढे जाव[8] अपरिभूए । सामा[9] भारिया । अट्ठ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ,[10]

---

* See footnote † on p. ३.

---

१ The MSS. omit the superscription here and elsewhere. २ G उक्खेवओ । ३ A B D E om. ४ E समयेणं । ५ B राजा, D E add महड्ढिए । ६ B D E om., G om. बाणा० नय० । ७ A B चुलणिपिया, F चुलणिप्पिया । ८ [illegible] F दित्ते, A B G om. जाव अपरि० । ९ D E to B have सोमा । ११ E ०पत्ताओ ।

अट्ठ[1] वड्ढिपउत्ताओ[2], अट्ठ[3] पवित्थरपउत्ताओ[4], अट्ठ वया[5] दसगोसाहस्सिएणं वएणं। जहा आणन्दो[6] राईसर जाव[7] सव्वकज्जवड्ढावए यावि[8] होत्था। सामी समोसढे[9]। परिसा निग्गया[10]। चुल्लणीपिया[11] जि जहा आणन्दो तहा निग्गओ। तहेव गिहिधम्मं[12] पडिवज्जइ। गोयमपुच्छा। तहेव सेसं जहा कामदेवस्स जाव[7] पोसहसालाए पोसहिए बम्भचारी[13] समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तियं[14] धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जित्ताणं विहरइ॥ १२७॥

तए णं तस्स चुल्लणीपियस्स समणोवासयस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि[15] एगे देवे अन्तियं पाउब्भूए॥ १२८॥

---

* See the rest in § 5, on pp. ३. ४.

† Supply the whole account from § § 10-69, on pp. ५-२१.

---

१ D E om., F adds हिरण्णकोडीओ। २ B D E G वुड्ढि०, E ०पत्ताओ। ३ D E om., A B अट्ठप्पवि०। ४ A B ०प्पउत्ताओ, E ०पत्ताओ। ५ D E व्वया। ६ A B आणन्दे। ७ So F; but A B इसर, D E G ईसर। ८ G आवि। ९ D E G ०सढो। १० A B F om परि० निग्ग०। ११ D चुल्लणी०, A B F चुलणि०। १२ G om. गिहि। १३ F बंभयारी, G बंभचेर। १४ A B F G om., D E अंतिए। १५ D E ०समए, G ०काले।

तए णं से देवे एगं नीलुप्पल[1] जाव असिं गहाय चुलणीपियं समणोवासयं एवं वयासी। "हं भो चुलणीपिया[2] समणोवासया जहा कामदेवो[3] जाव न भञ्जसि, तो ते[4] अहं अज्ज[5] जेट्ठं पुत्तं साओ[6] गिहाओ नीणेमि, २त्ता तव अग्गओ घाएमि[7], २त्ता तओ मंससोल्लए[8] करेमि, २त्ता आदाणभरियंसि[9] कडाहयंसि अद्दहेमि[10], २त्ता[11] तव गायं[12] मंसेण य सोणिएण य आयञ्चामि[13], जहा णं तुमं अट्टदुहट्टवसट्टे अकाले चेव[14] जीवियाओ ववरोविज्जसि[15]" ॥ १२९ ॥

तए[16] णं से चुलणीपिया समणोवासए तेणं

---

* Supply the rest [redacted] § 95, on p. ५०

† Supply the rest [redacted] § 95, on pp. ५०-५२.

---

१ A F निलु०। २ F adds अपत्थियपत्थिया हीणचउद्दसजाया हिरिसिरिपरिवज्जिया। ३ A B D E F ०देवे। ४ D तो, E तओ, for तो ते। ५ G om. ६ F सयाओ। ७ G हनेमि। ८ G ०सोल्ला। ९ F आयाण०। १० F अदेहेमि। ११ A D E G om. १२ A B D E G गातं। १३ So D F G, but E आइंकामि corrected to आइंचामि; the latter is supported by the comm.; A B have आसिंचामि। १४ B D E G om. १५ D E ववरोवेज्जसि, G विवरवज्जसि। १६ A B तं से, D E तओ for तए णं से which is the reading of F.

देवेणं एवं वुत्ते समाणे[2] अभीए जाव[*] विहरइ[2] ॥ १३० ॥

तए[3] णं से देवे चुलणीपियं[4] समणोवासयं[4] अभीयं[4] जाव[*] पासइ, २त्ता दोच्चं[6] पि तच्चं पि चुलणीपियं[6] समणोवासयं[4] एवं वयासी। "हं भो चुलणीपिया समणोवासया[4]," तं चेव भणइ, सो जाव[*] विहरइ ॥ १३१ ॥

तए[3] णं से देवे चुलणीपियं समणोवासयं[4] अभीयं जाव[*] पासित्ता आसुरत्ते[10] [4][11] चुलणीपियस्स समणोवासयस्स जेट्ठं पुत्तं[12] गिहाओ[13] नीणेइ, २त्ता अग्गओ घाएइ, २त्ता तओ मंससोल्लए[14] करेइ,

* Supply the rest from § 96, on p. ५२.
† Supply the rest from §§ 95 and 96.
‡ Supply the rest from § 95, on p. ५०.

१ B D E om. २ A विहरंति। ३ A B D E तं for तए णं, G om. the whole paragraph. ४ B °पिता। ५ A B D E G om. ६ F अभीइं। ७ F दुच्चं। ८ A B °पिता। ९ B F से। १० A आसुरुत्ते। ११ A has ५; F reads the four terms in full असुरत्ते मिसिमिसे चंडे कोविए; if five terms are read, रुद्दे or तिव्वे must be added, as in § 95, p. ५०। १२ B D E जेट्ठपुत्तं, F जेट्ठपुत्ते। १३ F prefixes सयाओ। १४ So A; but B °सोलिए, D E °सोल्लिते (सोल्लिए), F °सुलाइ, G °सोला।

२त्ता आदाणभरियंसि[1] कडाहयंसि[2] अदहेइ[3], २त्ता चुलणीपियस्स समणोवासयस्स गायं[4] मंसेण य सोणिएण य आयञ्चइ[5] ॥ १३२ ॥

तए णं से चुलणीपिया[6] समणोवासए[7] तं उज्जलं जाव* अहियासेइ ॥ १३३ ॥

तए णं से देवे चुलणीपियं[8] समणोवासयं[9] अभीयं जाव† पासइ, २त्ता दोच्चं पि[10] चुलणीपियं समणोवासयं एवं वयासी[11] । "हं भो चुलणीपिया समणोवासया, अपत्थियपत्थिया[12] जाव‡ न भञ्जसि[13], तो ते[14] अहं अज्ज मज्झिमं[15] पुत्तं साओ[16] गिहाओ नीणेमि[17], २त्ता तव अग्गओ घाएमि" जहा जेट्ठं[18]

* See the rest in the commentary to § 111.
† Supply the rest from § 96, on p. ५२.
‡ Supply the rest from § 95, on pp. ५०-५२.

१ F आदाणु° । २ A B कडाहियंसि, D E कडाहंसि । ३ B D E G अद्देहेइ, F अदहेइ । ४ G गातं । ५ So F G, but A आइंवइ, B D E आइंचइ । ६ F °पियं °सयं । ७ F G °पियस्स °सयस्स । ८ A D E om. ९ So B, but A D E F G add तच्चं पि । १० A वदासी । ११ D अपत्थियपत्थया, F अपत्थयपत्थिया । १२ E भंजेसि । १३ A D तो, E तओ for तो ते । १४ B मज्झिमपुत्तं, G मज्झियपुत्तं । १५ F सयाओ । १६ F नीणिमि । १७ F जेट्ठपुत्तं ।

पुत्तं तहेव भणइ, तहेव करेइ[1]॥ एवं तच्चं पि कणीयसं[2] जाव[3] अहियासेइ॥ १३४॥

तए[4] णं से देवे चुलणीपियं[5] समणोवासयं अभीयं जाव[6] पासइ, २त्ता चउत्थं पि[7] चुलणीपियं समणोवासयं एवं वयासी। "हं भो चुलणीपिया[8] समणोवासया[9], अपत्थियपत्थिया ४[10], जइ णं तुमं जाव[6] न भञ्जसि, तओ[11] अहं अज्ज जा इमा[12] तव[13] माया भद्दा सत्थवाही देवयगुरुजणणी[14] दुक्करदुक्करदुक्कारिया[15], तं ते[16] साओ[17] गिहाओ नीणेमि, २त्ता तव अग्गओ घाएमि, २त्ता तओ मंससोल्लए[18] करेमि, २त्ता आ-

* Supply the rest from § § 132, 133.
† Supply the rest from § 96, on p. ५२.
‡ Supply the rest from § 95, on pp. ५०-५२.

१ F G करइ। २ A B D E F G read एवं कणीयसं पि; see footnote to translation. ३ A B D तं for तए णं। ४ F prefixes तं; B °पिता। ५ E reads जाव। ६ F °पियं °सयं। ७ A has the numeral letter ङ=5. ८ G तो ते। ९ B जाव for जा इमा। १० D E G om. ११ B देवता गुरुजी, A D E दवतं गुरुं जणणी, F देवयं गुरुजणणी, G देवगुरुजणणि। १२ A दुक्कारिकारिया, B दुक्करकारिया, D E °कारियं, G °करयं। १३ A तो om. तं, E से, G ततो। १४ F सयाओ। १५ F सोल्लेए, G सोल्लउ।

दाणभरियंसि[1] कडाहयंसि[2] अद्दहेमि[3], २त्ता तव गायं[4] मंसेण य सोणिएण य आयञ्चामि[5], जहा णं तुमं अट्टदुहट्टवसट्टे अकाले चेव[6] जीवियाओ ववरोविज्जसि[7]" ॥ १३५ ॥

तए णं से चुलणीपिया[8] समणोवासए[8] तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे[9] अभीए जाव* विहरइ ॥ १३६ ॥

तए णं से देवे चुलणीपियं[10] समणोवासयं अभीयं जाव* विहरमाणं पासइ, २त्ता चुलणीपियं[10] समणोवासयं दोच्चं पि तच्चं[11] पि एवं वयासी । "हं भो चुलणीपिया समणोवासया तहेव जाव† ववरोविज्जसि[7]" ॥ १३७ ॥

तए णं तस्स चुलणीपियस्स समणोवासयस्स तेणं देवेणं दोच्चं[12] पि तच्चं[13] पि एवं वुत्तस्स समाणस्स इमे-

---

* Supply the rest from § 96, on p. ५३.
† Supply the rest from § 135.

---

१ B आदाणं भ०, F अद्दाणभ०, G अगाग०। २ A B कडाहियंसि। ३ B अद्देहेमि, F अदहिमि। ४ D E G गातं। ५ A B D E G आइंचामि। ६ D om. ७ E G विज्जरो०। ८ F ०पियं ०सयं। ९ D E om., B जाव। १० A B ०पिता। ११ D E G om तच्चं पि। १२ F दुच्चं। १३ B E om. तच्चं पि।

यारूवे[1] अज्झत्थिए[2] ५[3]*। "अहो णं इमे[4] पुरिसे अणारिए[5] अणारियबुद्धी अणारियाइं पावाइं कम्माइं समायरइ[6], जेणं[7] ममं जेट्ठं[8] पुत्तं साओ[9] गिहाओ नीणेइ[10], २त्ता मम अग्गओ घाएइ[11], २त्ता जहा कयं तहा चिन्तेइ[12] जाव† गायं[13] आयच्चइ[14], जेणं[15] ममं[16] मज्झिमं[17] पुत्तं साओ[9] गिहाओ[18] जाव† सोणिएण[19] य आयच्चइ[20], जेणं[21] ममं[22] कणीयसं पुत्तं साओ[9] गिहाओ तहेव जाव† आयच्चइ[20], जा वि य णं इमा[23] ममं माया भद्दा सत्थवाही देवयगुरु-

* Supply the rest from § 66 on p. २७; see also footnote § on p. २२.
† Supply the rest from § 132.

१ E adds जाव। २ A B अज्झित्थिए। ३ A has the numeral letter ५=5, D E read ४, B om., F has in full चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जेत्था। ४ F adds णं। ५ A अणायरिए, B om. ६ A B समाचरइ, D समाचरेइ, E समाचरए। ७ D E जेणं। ८ B D E F जेट्ठपुत्तं। ९ F सयाओ। १० B D E G नीणेमि। ११ A घाएमि। १२ D E विचिंतेइ। १३ F गाइं, G गातं। १४ A B E G आइंचइ, F आयंचेइ। १५ D E जेणेव। १६ B D E मम। १७ B मज्झिमपुत्तं। १८ F adds नीणेइ। १९ A om. सो॰ य, E सोणियं। २० A B D E G आइंचइ, F आयंचेइ। २१ E जेणेव। २२ A D E मम। २३ E इमं।

जणणी[1] दुक्करदुक्करकारिया[2], तं पि य णं इच्छइ साओ[3] गिहाओ नीणेत्ता मम[4] अग्गओ घाएत्तए[5], तं सेयं खलु ममं एयं पुरिसं गिण्हित्तए[6]" त्ति कट्टु उट्ठाइए[7], से वि य आगासे[8] उप्पइए, तेणं[9] च खंभे[10] आसाइए[11], महया महया सद्देणं कोलाहले[12] कए ॥१३८॥

तए णं सा भद्दा सत्थवाही तं कोलाहलसद्दं[13] सोच्चा निसम्म जेणेव चुल्लणीपिया[14] समणोवासए[14] तेणेव उवागच्छइ, २त्ता चुल्लणीपियं समणोवासयं[15] एवं वयासी। "किण्णं, पुत्ता, तुमं[16] महया महया सद्देणं कोलाहले कए?" ॥१३९॥

तए णं से चुल्लणीपिया[17] समणोवासए[17] अम्मयं[18] भद्दं सत्थवाहिं[19] एवं वयासी। "एवं खलु, अम्मो,[20]

---

१ A देवतं गुरुजणणी, B देवतं गुरुं जणणी, F देवयं गरुजणणी, D E देवतं गरुं जणणिं, G देवतं गुरुजणणं। २ A B D E G °कारियं। ३ F सयाओ। ४ F ममं। ५ B E घाइत्तए। ६ D E गिण्हेत्तए। ७ A उट्ठाएइ। ८ F अगासे। ९ A तेण व, B तेणं व, D E तेण य, F तेणेव, G तेणे य। १० A खंभं। ११ A B D E आसादिए। १२ A B D add णं। १३ F कोलाहलं सद्दं। १४ D E °पियं °सयं। १५ G inserts सद्दावेइ। १६ D E F G तुमे। १७ F °पियं °सयं। १८ A B F G अमयं। १९ F भद्दां °वहीणीं। २० B अम्मे, see Hem. IV, 395 where the shortened form अम्मि occurs; but Hem. III, 41 gives अम्मो।

न जाणामि[1], केवि पुरिसे आसुरत्ते[2] ५[3]* एगं महं नीलुप्पल जाव[4]* असिं गहाय ममं एवं वयासी, ""हं भो चुलणीपिया समणोवासया[5], अपत्थिय-पत्थिया ४[6]* वज्जिया, जइ णं तुमं जाव[7] ववरोविज्जसि[8]""। अहं[9] तेणं पुरिसेणं[10] एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव[7] विहरामि। तए णं से पुरिसे[11] ममं[12] अभीयं जाव[7] विहरमाणं पासइ, २त्ता ममं[13] दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी[14], ""हं भो चुलणीपिया समणोवासया,"" तहेव जाव[4]‡ गायं[15] आयच्चइ[16]।

---

* Supply the rest from § 95, on p. ५०.
† Supply the rest from § 95, on p. ५२, and § 129.
‡ Supply the rest from § 96, on p. ५३.
§ Supply the rest from §§ 131 and 132.

---

१ A याणामो, B याणामि, F यामोमि, G यमिमि। २ A B F G आसुरुत्ते। ३ F in full मिसिमिसे तिव्वे चंडे रोद्दे। ४ A B D E F G om. ५ A B D E om. ६ A has the numeral letter ङ्क=5; B om.; F reads in full दुरंतपंतलक्खणा, हीणचउद्दसजाया हरीसिरीपरिवज्जिया। ७ E G विवरो०। ८ D E G prefix तए णं। ९ A B D E F G देवेणं। १० D E F G देवे। ११ D E F मम। १२ A मम। १३ D E वयासि। १४ E om. १५ E गाइं। १६ A B आसिंचइ, D E G आइंचइ

तए णं अहं तं उज्जलं जाव* अहियासेमि। एवं तहेव उच्चारेयव्वं सव्वं जाव कणीयसं जाव आयच्चइ[१]। अहं तं उज्जलं जाव* अहियासेमि। तए णं से पुरिसे[२] ममं[३] अभीयं जाव† पासइ, २त्ता ममं[३] चउत्थं पि एवं वयासी[४], "“हं भो चुल्लणीपिया समणोवासया[५], अपत्थियपत्थिया[६], जाव† न भज्जसि, तो[७] ते अज्ज[८] जा इमा माया गुरू[९] जाव‡ ववरोविज्जसि"”। तए णं अहं तेणं पुरिसेणं[१०] एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव‡ विहरामि। तए णं से पुरिसे[११] दोच्चं पि तच्चं पि ममं[१२] एवं वयासी, "“हं भो चुल्लणीपिया समणोवासया[५] अज्ज जाव‡ ववरोविज्जसि"” तए णं तेणं[१३] पुरिसेणं[१४] दोच्चं पि

* See the rest in the commentary to § 111.
† Supply the rest from §§ 134 and 132.
‡ Supply the rest from § 96, on p. ५३.
§ Supply the rest from § 95, on pp. ५०-५२.
‖ Supply the rest from § 135.

१ A B आसिंचइ, D E G आइंचइ। २ A B D E F G देवे। ३ A मम, B इमं। ४ A D वदासि, E वयासि। ५ A B D E om. ६ A B °पत्थया। ७ E तओ। ८ F अज्जो। ९ A गुरू। १० A B om., D E F देवेणं। ११ A B D E F G देवे। १२ A मम। १३ A B F G से, D E prefix अहं। १४ A F B D E G देवेणं।

तच्चं पि ममं[1] एवं वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए [2]*, ""अहो णं इमे पुरिसे अणारिए[3] [4]† समायरइ[5], जेणं ममं[6] जेट्ठं[7] पुत्तं साओ[8] गिहाओ तहेव [4]† [9]‡ आयच्चइ[10], तुब्भे वि य णं इच्छह साओ[11] गिहाओ[12] नीणेत्ता[13] मम[14] अग्गओ घाएत्तए, तं सेयं[15] खलु ममं एयं पुरिसं गिण्हित्तए[16]"" त्ति कट्टु उट्ठाइए, से वि य[17] आगासे[18] उप्पइए[19], मए[20] वि य खंभे आसाइए[21], महया महया सद्देणं कोलाहले कए" ॥ १४० ॥

तए णं सा भद्दा सत्थवाही[22] चुलणीपियं[23] समणोवासयं एवं वयासी। "नो खलु देव पुरिसे तव

---

* Supply the rest from § 66, on p. २७.
† Supply the rest from § 138, on p. ७७
‡ Supply the rest from §§ 134 and 132.

---

१ D E om. दो० पि त० पि ममं। २ D ४, E om., F in full पत्थिए चिंतिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था। ३ A अणायरिए। ४ D E समायरए। ५ F मम। ६ B D E F जेट्ठपुत्तं। ७ F सयाओ। ८ A B D E G आइंचइ। ९ D E add जाव। १० F नीणित्ता। ११ F ममं। १२ F सियं। १३ D गेण्हेत्तए। १४ D E add से, F adds णं। १५ E G अगासे। १६ A उपेतिते, E उपपतिते। १७ D E ममए (Hem. III, 109). १८ D E आसादिते। १९ D E om. २० F चलणिप्पियं।

जाव* कणीयसं पुत्तं सात्रो[1] गिहात्रो नीणेइ, २त्ता तव अग्गत्रो घाएइ, एस न[2] केइ पुरिसे तव उवसग्गं करेइ[3], एस णं तुमे विदरिसणे दिट्ठे। तं णं[4] तुमं इयाणिं[5] भग्गव्वए[6] भग्गनियमे भग्गपोसहे विहरसि[7]। तं णं तुमं, पुत्ता, एयस्स ठाणस्स[8] आलोएहि जाव[9] पडिवज्जाहि[10]" ॥ १४१ ॥

तए णं से चुलणीपिया समणोवासए अम्मगाए[10] भद्दाए सत्थवाहीए[11] "तह" त्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ, २त्ता तस्स ठाणस्स[12] आलोएइ जाव[13] पडिवज्जइ[13] ॥ १४२ ॥

तए णं से चुलणीपिया समणोवासए पढमं उवासगपडिमं उवसम्पज्जित्ताणं विहरइ[14]। पढमं

---

* Supply the rest from §§ 132 and 134.
† See footnote ‡ on p. ४०.

---

१ F सयाओ। २ A D E F G णं, B ण। ३ F adds २त्ता contra sensum. ४ A तेणं, B तेसं, D तसं, E तए णं, F तिसं, G तणं। ५ A D इदाणिं। ६ A भगावते, D भग्गवते, E भग्गवया, F भग्गवए। ७ A विहरतिसि, D विहरति। ८ F D ट्ठाणस्स। ९ G परिवज्जेहि। १० F अम्मगाए (Skr. अम्बकायाः), D E अम्माए, G अंमयाए। ११ A om.; F adds वयणं। १२ D E F ट्ठाणस्स। १३ D E ०वज्जेइ, A ०वज्जसि। १४ A विहरंति।

उवासगपडिमं अहासुत्तं जहा आणन्दो[1] जाव[*] एक्कारसमं[2] वि ॥ १४३ ॥

तए णं से चुलणीपिया समणोवासए तेणं[3] उरालेणं जहा कामदेवो[4] जाव[†] सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडिंसगस्स महाविमाणस्स उत्तरपुरत्थिमेणं[5] अरुणप्पभे[6] विमाणे देवत्ताए उववन्ने । चत्तारि[7] पलिओवमाइं ठिई[8] पण्णत्ता । महाविदेहे वासे[9] सिज्झिहिइ[10] [‡][11] ॥ १४४ ॥

॥ निक्खेवो ॥

सत्तमस्स अङ्गस्स[12] उवासगदसाणं तइयं[13] अज्झयणं समत्तं ॥

---

* Supply the rest from §§ 70 and 71.

† Supply the rest from §§ 72 and 89.

‡ See the rest in Ov. § 116, Bbag., pp. 303, 304.

---

१ G आणंदे । २ A B D E एक्कारस, F इक्कारस । ३ F तएणं । ४ A B D E F °देवे । ५ A °पुरित्थिमेणं, D E °पुरच्छिमेणं, F °पुरित्थिमेणं, G °पुरच्छिमेणं । ६ E adds नामं । ७ F prefixes तेणं देवेणं । ८ A ठिइं, E ठिइ, F ट्ठिइ । ९ A B om. १० B E सिज्झिहिंति । ११ A B om., F in full बुज्झिहिंति मुच्चेहिंति परिनिव्वाएहिंति सव्वदुक्खाणं अंतं करेहिंति । १२ A B D E F om. सत्त० अङ्ग० । १३ G तीज ।

चउत्थं[1] अज्झयणं ।

॥ उक्खेवओ[2] चउत्थस्स अज्झयणस्स[3] ॥

एवं खलु, जम्बू, तेणं कालेणं तेणं समएणं वा[4] वा-
रसी नामं[5] नयरी[6] । कोट्ठए चेइए । जियसत्तू राया ।
सुरादेवे[7] गाहावई[8] अड्ढे[9] । छ हिरण्णकोडीओ[10]
जाव* छ वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं । धन्ना[11]
भारिया । सामी समोसढे[12] । जहा[13] आणन्दो[14] सड्ढे

---

* Supply the rest from § 92.

† Supply the full account from §§ 10-65, *mutatis mutandis*.

---

१ See footnote १ on p. ७० । २ E उक्खेवो । ३ A B D E F G om. ४ B D E G om. ५ B नगरी । ६ F adds नामं । ७ F adds परिवसइ । ८ D E add दित्ते, F adds दित्ते अपरिभूए, G om. । ९ D E add निहाणपत्ताओ । १० A B prefix तए णं ; A D E F धण्णा (see Hem. II, 184). ११ D E सड्ढो, G समसड्ढो । १२ A B आणंदे ।

महुवज्जइ गिहिधम्मं । तहा कामदेवो[1] जाव[*] समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जित्ताणं विहरइ ॥ १४५ ॥

तए णं तस्स सुरादेवस्स समणोवासयस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि एगे देवे अन्तियं पाउब्भवित्था[3] ॥ १४६ ॥

से देवे एगं महं नीलुप्पल जाव[†] असिं गहाय सुरादेवं[4] समणोवासयं[5] एवं वयासी[6] । "हं भो सुरादेवा[7] समणोवासया[8], अपत्थियपत्थिया[9] ४[†], ज[illegible] णं तुमं सीलाइं जाव[†] न भञ्जसि, तो ते[10] जेट्ठं[11] पुत्तं साओ[12] गिहाओ नीणेमि, २त्ता तव अग्गओ घाए-

---

* See § 92, and supply from § 66-69.

† Supply the rest from § 95.

---

१ B कामदेवे । २ A om. ३ B F पाउभवित्था । ४ F ०देवस्स ०सगस्स । ५ B वयासि, D वदासी । ६ F ०देवे ०सए । ७ B D E om. ८ A ०पत्थया । ९ A has the numeral letter ङ्क = ९; see Bendall's *Catalogue of Buddhist Skr. MSS.*, Plate V, in the third line (No. 1684); F has both the old numeral figure ९, and the modern ९. १० D om. ते, E तओ for तो ते । ११ D E F जेट्ठपुत्तं । १२ F सयाओ ।

मि, २त्ता पञ्च सोल्लए करेमि, आदाणभरियंसि[1] कडाहयंसि[2] अद्दहेमि, २त्ता तव गायं[3] मंसेण य सोणिएण य आयञ्चामि[4], जहा णं तुमं[5] अकाले चेव[6] जीवियाओ ववरोविज्जसि"॥ एवं मज्झिमयं, कणीयसं; एक्केक्के पञ्च सोल्लया। तहेव जाव, जहा चुल्लसयगस्स[*]; नवरं एक्केक्के पञ्च सोल्लया॥

१४७॥

तए णं से देवे सुरादेवं समणोवासयं[7] चउत्थं पि एवं वयासी। "हं भो सुरादेवा[8] समणोवासया[9] अपत्थियपत्थिया[10] जाव न परिच्चयसि[11], तो ते[12] अज्ज सरीरंसि[13] जमगसमगमेव सोलस रोगायङ्के[14]

---

* See §§ 132 and 134.
† Supply the rest from § 95.

---

१ A B D E G आयाण०। २ D E कडाहगंसि। ३ G गातं। ४ A B D E G आइंचइ। ५ A तुं। ६ B D E G जाव for चेव जीवि०। ७ F G मज्झिमं। ८ A B D E om. ९ A B °देवे। १० D E om. ११ E परिभंजसि। १२ D E F तओ ते। १३ D E G सरीरस्स। १४ D रोयायंके, G रोगातंका।

पक्खिवामि, तं जहा[१] सासे कासे जाव[२] कोढे, जहा णं तुमं अट्टदुहट्ट[३] जाव[४] ववरोविज्जसि"॥१४८॥

तए[५] णं[६] से सुरादेवे समणोवासए[७] जाव[८] विहरइ ॥१४९॥

एवं देवो दोच्चं पि तच्चं पि भणइ जाव[९] "ववरोविज्जसि" ॥१५०॥

तए णं तस्स[१०] सुरादेवस्स[११] समणोवासयस्स[१२] तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे[१३] अज्झत्थिए[१४] । "अहो णं इमे पुरिसे अणारिए जाव[१५] समायरइ, जेणं मम [illegible] पुत्तं जाव[१६]

---

* See the rest in the commentary; also below footnote २. See also [illegible], p. 226, Nây., pp. 1045, 1177; Vip., p. 33 (Cals. print.)

† See the rest in § 95, p. ५२.

‡ Supply the rest from § 96.

§ Supply the rest from § 97, and from §§ 95, 96.

‖ Supply the rest from § 66, and see footnote § on p. ३२.

¶ Supply the rest from § 138.

---

१ A B om. २ F G in full जरे दाहे कुच्छिसूले भगंदरे अरिसए अजीरए दिट्ठिसूले मुद्धसूले अकारिए अच्छिवेयणा कन्नवेयणा कंडुए उदरे कोढे । ३ A B अट्टदुहट्टे । ४ F om. the whole paragraph. ५ B D E तओ for तए णं । ६ A B D E om. ७ A B ०देवे, F से ०देवे ०सए । ८ A B इमे, D इमे णं F एयमेयारूवे । ९ D E F जेट्ठपुत्तं ।

कणीयसं जाव* आयञ्चइ[1], जे वि य इमे सोलस रोगायङ्का[2], ते वि य इच्छइ[3] मम सरीरगंसि पक्खिवित्तए, तं सेयं खलु ममं[4] एयं पुरिसं गिण्हित्तए" त्ति कट्टु उट्ठाइए। से वि य आगासे उप्पइए। तेण[5] य[6] खम्भे आसाइए, महया महया सद्देणं कोलाहले कए ॥ १५१ ॥

तए णं सा धन्ना[7] भारिया कोलाहलं सोच्चा[8] निसम्म, जेणेव सुरादेवे समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ, उत्ता एवं वयासी। "किण्णं[9], देवाणुप्पिया, तुब्भेहिं[10] महया [illegible] सद्देणं कोलाहले[11] कए?" ॥ १५२ ॥

तए णं से [illegible] देवे समणोवासए धन्नं[12] भारियं एवं वयासी। "एवं खलु, देवाणुप्पिए[13], केवि पुरिसे" तहेव कहेइ[14] जहा चुलणीपिया। धन्ना[15] वि पडि

---

* See the rest in § 138.

---

१ A B D E G आइंचइ। २ A रोगायंके, F रोगाइंका। ३ A य तिच्छति। ४ F मम। ५ B तए णं। ६ A B om. ७ A B धण्णा। ८ E सुच्चा। ९ B adds तुमे, F तुमं। १० A G तुब्भे, B D E F तुब्भे णं (see Hem. III, 95). ११ A B adds णं। १२ A B D E धण्णं। १३ A D E देवाणुप्पिया। १४ E कहइ; [illegible] कहंति, placing it after जहा चुल०। १५ A B D धण्णा, G [illegible] भारिया।

भणइ जाव[*] कणीयसं। "नो खलु, देवाणुप्पिया, तुब्भं[१] केवि[२] पुरिसे सरीरंसि जमगसमगं सोलस रोगायङ्के पक्खिवइ,[३] एस न[४] केवि पुरिसे तुब्भं उवसग्गं करेइ"। सेसं[‡] जहा चुलणीपियस्स तहा[†] भणइ ॥ १५३ ॥

एवं सेसं जहा चुलणीपियस्स निरवसेसं जाव[†] सोहम्मे कप्पे अरुणकन्ते विमाणे उववन्ने[६]। चत्तारि पलिओवमाइं ठिई[७]। महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ[८] [९] ॥ १५४ ॥

॥ निक्खेवो[१०] ॥

सत्तमस्स[११] अङ्गस्स[११] उवासगदसाणं[१२] चउत्थं अज्झयणं समत्तं ॥

---

* Supply the full version from §§ 140 and 141.
† Supply the rest from § 141.
‡ Supply the rest from §§ 142-144.
§ See footnotes † and ११ on p. ८६.

---

१ A B F G तुब्भे, see Hem III, 100. २ A B केय, D E G केइ। ३ B पक्खिवयं, F G पक्खेवइ। ४ A B D E F G णं। ५ So B, but A D E F भद्दा। ६ A B D E F om. ७ A ठिई, E ठिइ, F ठिइ। ८ E सिज्झिहिंति, F सिज्झहिंति। ९ A B om, F ४। १० D E निक्खेवओ। ११ A B D E F om. १२ F om.

[1]पञ्चमं अज्झयणं ॥

॥ उक्खेवो[2] पञ्चमस्स ॥

एवं खलु, जम्बू, तेणं कालेणं तेणं समएणं आल-भिया[3] नामं[4] नयरी[5]। सङ्खवणे उज्जाणे। जियसत्तू राया। चुल्लसयए[6] गाहावई[7] अड्ढे जाव[8] छ हिरण्ण-कोडीओ जाव छ वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं। [9]बहुला भारिया। सामी समोसढे[10]। जहा आणन्दो

---

* See footnote † on p. २.

† Supply the rest from §§ 4 and 92.

‡ Supply the full account from §§ 10-65, *mutatis mutandis*.

---

१ See footnote १ on p. ७०। २ G उक्खेवओ। ३ D E आलहिया, F आलंभिया। ४ A B D E G om. ५ F adds होत्था। ६ B ०सयगे, F सयगे। ७ F adds परिवसइ। ८ G prefixes तए णं तस्स। ९ A F ०सड्ढे, D ०सड्ढो, E०सड्ढो। १० A आणंदे।

तहा गिहिधम्मं परिवज्जइ। सेसं जहा आसदेवो जाव[1] धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जित्ताणं विहरइ॥ १५५॥

तए णं तस्स चुल्लसयगस्स समणोवासयस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि[2] एगे देवे अन्तियं जाव[3] असिं गहाय एवं वयासी[4]। "हं भो, चुल्लसयगा समणोवासया[5], जाव[6] न भञ्जसि, तो ते अज्ज जेट्ठं[6] पुत्तं साओ[7] गिहाओ नीणेमि," एवं[8] जहा[9] चुलणीपियं, नवरं एक्केक्के सत्त मंससोल्लया, जाव कणीयसं जाव[11] आयञ्चामि[9]॥ १५६॥

तए णं से चुल्लसयए समणोवासए[10] जाव[11] विहरइ॥ १५७॥

---

* Supply the whole account from §§ 66-69, *mutatis mutandis*.
† Supply the rest from §§ 128, 129 and 95.
‡ Supply the rest from § 95, on pp. ५०-५२.
§ Supply the full account from § 129.
|| See § 134 and the preceding paragraphs.
¶ Supply the rest from §§ 96 and 98.

---

१ So G, but A B D E F ०देवे। २ D E G ०काले। ३ F पाउब्भूए। ४ A वदासी। ५ A B om. ६ A B D E F जेट्ठपुत्तं। ७ A B D E om. ८ D adds वयासी। ९ A B D E आइंचामि। १० A B D E om.

तए णं से देवे चुल्लसयगं[1] समणोवासयं[2] चउत्थं पि एवं वयासी। "हं भो चुल्लसयगा समणोवासया[3], जाव[†] न भञ्जसि[3], तो[4] ते अज्ज जाओ[5] इमाओ छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ[6] छ० वड्ढिपउत्ताओ[7] छ[8] पवित्थरपउत्ताओ[9], ताओ[10] साओ[11] गिहाओ नीणेमि, २त्ता आलभियाए[12] नयरीए सिङ्घाडग जाव[†] पहेसु सव्वओ समन्ता विप्पइरामि[13], जहा णं तुमं अट्टदुहट्टवसट्टे[14] अकाले चेव[15] जीवियाओ ववरोविज्जसि[16]" ॥ १५८ ॥

तए[10] णं से चुल्लसयए[18] समणोवासए[2] तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव[‡] विहरइ ॥ १५९ ॥

* Supply the rest from § 95, on pp. ५०-५२.
† See the rest in Ov. § 38, Nāy. § 65.
‡ Supply the rest from § 96.

१ F °सयगे °सए। २ A B D E om. ३ D E भञ्जेसि। ४ F G तउ ते। ५ A B D E F G om.; (see the text in § 161.) ६ E °पत्ताओ। ७ B D F om. ८ A B F om. ९ A B D F om. १० A B F तउ ते। ११ F सयाओ। १२ D E आलहियाए, F G आलंभियाए। १३ A B विप्पविरामि। १४ A B अट्टदुहट्टे, D E अट्टदुहट्ट। १५ D E G om. १६ E G विवरो०। १७ F reads §§ 159 and 160 thus: तए णं से चुल्ल० समणो० अभीए जाव पासित्ता दोच्चं पि etc. १८ A D E F चल्लसए।

तए णं से देवे चुल्लसयगं समणोवासयं अभीयं जाव[1] पासित्ता दोच्चं पि तच्चं पि तहेव भणइ जाव[1] "ववरोविज्जसि[2]" ॥ १९० ॥

तए णं तस्स[3] चुल्लसयगस्स[4] समणोवासयस्स[5] तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्तस्स[6] समाणस्स[7] अयमेयारूवे अज्झत्थिए ४[8]। "अहो णं इमे पुरिसे अणारिए जहा चुल्लणीपिया तहा चिन्तेइ जाव[9] कणीयसं जाव[9] आयच्चइ[10], जाओ वि य णं इमाओ ममं[11] छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ[12] छ[13] वड्ढिपउत्ताओ[14] छ[15] पवित्थरपउत्ताओ, ताओ[16] वि य णं इच्छइ[17] ममं साओ[18] गिहाओ नीणेत्ता,[19] आ-

* Supply the rest from § 96.
† Supply the rest from above, § 158.
‡ Supply the rest from § 66.
§ Supply the full words from 138.

१ E विवरो० । २ B G prefixes से । ३ B ०चुल्लसय, F ०सय । ४ A B D E om., F ०वासय । ५ F वुत्ते समाणे । ६ F has both the older form ४ and the modern form ४ of the numeral figure. ७ A B D E G आइंचइ । ८ A B मम । ९ E throu[illegible] G af[illegible]

लभियाए[१] नयरीए[२] सिङ्घाडग[३] जाव* विप्पइरित्तए, तं सेयं खलु ममं[४] एयं पुरिसं गिण्हित्तए[५]" त्ति[६] कट्टु उट्ठाइए जहा† सुरादेवो[७]। तहेव† भारियं पुच्छइ[८], तहेव कहेइ ॥ १९१ ॥

सेसं जहा चुलणीपियस्स जाव[९] सोहम्मे कप्पे अरुणसिट्ठे[१०] विमाणे उववन्ने। चत्तारि[११] पलिओवमाइं ठिई[१२]। सेसं तहेव[१३] जाव‖ महाविदेहे वासे[१४] सिज्झिहिइ ॥ १९२ ॥

॥ निक्खेवो[१५] ॥

सत्तमस्स[१६] अङ्गस्स[१६] उवासगदसाणं पञ्चमं अज्झयणं समत्तं ॥

---

* See the rest in Ov. § 38, Nāy. § 65.
† Supply the rest from § 151.
‡ See the full account in §§ 152 and 153.
§ Supply the rest from §§ 142-144.
‖ Supply the rest from § 125.

---

१ A B D E आलहियाए, F आलंभियाए। २ B नगरीए। ३ A B सिङ्घाड। ४ D E मम। ५ A गिण्हेत्तए, B गेण्हेत्तए, E F गिण्हत्तए। ६ F ति। ७ D E F G °देवे। ८ F prefixes बज्झा। ९ A B F G prefixes से। १० B °विसिट्ठे, F °सेट्ठे, [illegible] A ट्ठिई, E [illegible] D E

छट्ठं अज्झयणं ॥

## ॥ छट्ठस्स उक्खेवओ ॥

एवं[1] खलु, जम्बू, तेणं कालेणं तेणं समएणं कम्पिल्लपुरे[2] नयरे[3]। सहस्सम्बवणे[4] उज्जाणे। जियसत्तू राया। कुण्डकोलिए गाहावई[5]। पूसा भारिया[6]। छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ[7] छ[8] वड्ढिपउत्ताओ[9] छ[8] पवित्थरपउत्ताओ छ वया[10] दसगोसाहस्सिएणं वएणं। सामी समोसढे[11]। जहा[12] कामदेवो

---

१ D E G om. एवं खलु जंबू। २ F किंपिल्ल०, G किंपुल०। ३ A B नगरे; F adds होत्था; A B F G add पुढविसिल्लापट्टए चेइए। ४ D E सहस्संव०; B ०वयणे। ५ E F गाहावइ; F adds परिवसइ। ६ G places this clause after वएणं। ७ E ०पत्ता here and throu[illegible] A B D [illegible] ०। १० A [illegible]ghout पत्ताओ। १० A B D E F om. ११ D E [illegible]ड्ढ०। १२ A B D E om. १३ F तो। १४ D E इच्छेइ। १५ F सयाओ। १६ D E नीणित्ता।

तहा सावयधम्मं पडिवज्जइ। सव्वेव[1] वत्तव्वया जाव* पडिलाभेमाणे विहरइ ॥ १९३ ॥

तए णं से कुण्डकोलिए समणोवासए[2] अन्नया कयाइ[3] पुव्वावरण्हकालसमयंसि[4] जेणेव[5] असोगवणिया, जेणेव पुढविसिलापट्टए[6], तेणेव उवागच्छइ, २त्ता नाममुद्दगं[7] च उत्तरिज्जगं[8] च पुढविसिलापट्टए[9] ठवेइ, २त्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तियं[10] धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जित्ताणं विहरइ ॥ १९४ ॥

तए णं तस्स कुण्डकोलियस्स समणोवासयस्स[10] एगे देवे अन्तियं पाउब्भवित्था ॥ १९५ ॥

तए णं से देवे नाममुद्दं[11] च उत्तरिज्जं च पुढविसिलापट्टयाओ पडिहरइ[12], २त्ता सखिङ्खिणिं[13] अन्तलिक्खपडिवन्ने कुण्डकोलियं समणोवासयं एवं वया-

---

* Supply the whole account from §§ 10-65, *mutatis mutandis*.

---

१ B D से सव्वे, E सेा सव्वे for सव्वेव; F सव्वेवि। २ D E om. ३ D E कयावि। ४ E पुव्वावरण्ह°। ५ E om. जे० असो०। ६ F पुढवी०, G °वट्टए। ७ E नामामु०, F °मुद्दयं। ८ E उत्तरियगं। ९ E अंतिये। १० A B om. ११ E नामामुद्दं। १२ D E F G गिण्हइ, see Hem. IV, 209. १३ B D E °णि, D F सखिंख०।

सी। "हं भो कुण्डकोलिया समणोवासया, सुन्दरी णं, देवाणुप्पिया, गोसालस्स मङ्खलिपुत्तस्स[1] धम्मपण्णत्ती[2], नत्थि उट्ठाणे इ[3] वा कम्मे इ[3] वा बले इ[3] वा वीरिए इ वा पुरिसक्कारपरक्कमे[4] इ वा, नियया[5] सव्वभावा; मङ्खली णं समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपण्णत्ती[6], अत्थि[7] उट्ठाणे इ[3] वा जाव* परक्कमे[8] इ[3] वा, अणियया[5] सव्वभावा[10]" ॥ १९९ ॥

तए णं से कुण्डकोलिए समणोवासए[11] तं देवं एवं वयासी। "जइ णं, देवा[12], सुन्दरी[13] गोसालस्स मङ्खलिपुत्तस्स धम्मपण्णत्ती[14], नत्थि[15] उट्ठाणे इ वा जाव† नियया[5] सव्वभावा; मङ्खली[16] णं समणस्स

* Supply the rest from the preceding part of the sentence.
† Supply the rest from § 166.

१ A मखलि० F मंक्खलि०। २ D ०पण्णत्तिं, E G ०पण्णत्ति। ३ D E ति। ४ F पुरिसाकार०। ५ A B नितया, अणितया, D E F नितिया, अणितिया, G नियतया, अणियतया। ६ E ०पण्णत्ति, G ०पण्णत्तिं। ७ E om. ८ F in full कम्मे इ वा बले इ वा वीरिए इ वा पुरिसाकार०। ९ A B G परिक्कमे। १० B सव्वा भावा। ११ A B D E om. १२ A B D E देवाणु, F देवाणुप्पिया। १३ F adds णं। १४ A B ०पण्णत्तिं। १५ D E add जाव। १६ A B om. १७ G मुंगुली, and above मूंगुली।

भगवओ[1] महावीरस्स धम्मपण्णत्ती, अत्थि उट्ठाणे इ[2] वा जाव* अणियया[3] सव्वभावा। तुमे[4] णं, देवा[5], इमा[6] एयारूवा दिव्वा देविड्ढी, दिव्वा देवज्जुई[7], दिव्वे[8] देवाणुभावे किण्णा[9] लद्धे किण्णा[10] पत्ते किण्णा[11] अभिसमन्नागए[12], किं उट्ठाणेणं जाव* पुरिसक्कार-परक्कमेणं, उदाहु अणुट्ठाणेणं अकम्मेणं जाव* अपुरि-सक्कारपरक्कमेणं"? ॥ १९७ ॥

तए णं से देवे कुण्डकोलियं समणोवासयं एवं वयासी। "एवं खलु, देवाणुप्पिया, मए[13] इमेयारूवा[14] दिव्वा देविड्ढी[15] इ[16]† अणुट्ठाणेणं जाव* अपुरिसक्का-रपरक्कमेणं लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया[12]" ॥ १९८ ॥

---

* Supply the rest from § 166.

† Supply the rest from § 167.

---

१ A B om. भग० महा०। २ A B D E F ति। ३ A B G अणितया, D E F अणितिया। ४ A तुमं, see Hem. III, 94. ५ So A B D E, but F देवाणुप्पिया, G देवाणं। ६ D E इमे, F इमेयारूवा। ७ A B F °जुई। ८ A F देवे। ९ A किंणा, E किसा, F किंन्ना। १० A om., F किंन्ना। ११ A किंसा, F किंन्ना। १२ A B D E G अभिसमण्णा०। १३ G मइं। १४ F °रूव्वा। १५ F G देव्वड्ढि। १६ D E om., F in full देव्वा देवजुइ देव्वे देवाणुभावे।

तए णं से कुण्डकोलिए समणोवासए तं देवं एवं वयासी[1]। "जइ णं, देवा[2], तुमे इमा[3] एयारूवा दिव्वा देविड्ढी इ[4]* अणुट्ठाणेणं जाव[5] अपुरिसक्कारपरक्कमेणं लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया[6], जेसि णं जीवाणं नत्थि उट्ठाणे इ[7] वा जाव[5] परक्कमे[8] इ[9] वा, ते किं न देवा[10]?। अहणं, देवा[11], तुमे इमा[12] एयारूवा दिव्वा देविड्ढी इ* उट्ठाणेणं जाव[5] परक्कमेणं लद्धा[13] पत्ता अभिसमन्नागया। तो जं वदसि सुन्दरी णं गोसालस्स मङ्खलिपुतस्स[14] धम्मपण्णत्ती, नत्थि उट्ठाणे इ[9] वा जाव[5] नियया[15] सव्वभावा, मङ्गुली णं समणस्स भगवओ महावीरस्स[16] [illegible]ण्णत्ती, अ[illegible]

वा जाव[4] अणियया[1] सव्वभावा, तं[2] ते मिच्छा" ॥ १६६ ॥

तए णं से देवे कुण्डकोलिएणं समणोवासएणं एवं वुत्ते समाणे सङ्किए[3] जाव[4] कलुससमावन्ने नो संचाएइ[5] कुण्डकोलियस्स समणोवासयस्स किंचि[6] पामोक्खमाइक्खित्तए[7], नाममुद्दयं[8] च उत्तरिज्जयं च पुढविसिलापट्टए[9] ठवेइ[10], २त्ता जामेव दिसं पाउब्भूए, तामेव दिसं[11] पडिगए ॥ १७० ॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे[12] ॥ १७१ ॥

[illegible] णं से कुण्डकोलिए समणोवासए इमीसे [illegible] हट्ठ[13] जहा [illegible] तहा निग्गच्छइ [illegible] ॥

"कुण्डकोलिया[1]" इ समणे भगवं महावीरे[2] कुण्डकोलियं समणोवासयं एवं वयासी। "से नूणं, कुण्डकोलिया, कल्लं तुब्भ[3] पुव्वावरण्हकालसमयंसि[4] असोगवणियाए एगे देवे अन्तियं पाउब्भवित्था। तए णं से देवे नाममुद्दं च[5] तहेव[6] जाव* पडिगए। से नूणं, कुण्डकोलिया, अट्ठे समट्ठे[7]"?।

"हन्ता, अत्थि"।

"तं धन्ने[8] सि णं तुमं, कुण्डकोलिया[9]," जहा[10] कामदेवो[10] ॥ १७३ ॥

"अज्जो" इ[11] समणे भगवं महावीरे[12] समणे[13] निग्गन्थे[14] य निग्गन्थीओ य आमन्तित्ता[15] एवं वया

---

* Supply the whole account from §§ 166-170.

† Supply the full address from § 113, *mutatis mu*

१ E कुंडकोलिए ति। २ A B D E om. ३ So G; but F तुब्भे, D E तुब्भे, see note to translation. ४ A पुव्वावरण्हे का०, F पुव्वावरण्हं का०। ५ F adds उत्तरिज्जगं च। ६ D E तं चेव। ७ A B F अत्थे समत्थे। ८ A B D E धण्णे, see Hem. II, 184. ९ A B D E om. १० A D E कामदेवे। ११ A B D E F ति। १२ A B E om. १३ So A, but B D E F समणा। १४ So G, but A B D E F निग्गत्था। १५ A B आमंतेत्ता।



44379

सी। "जइ ताव, अज्जो, गिहिणो गिहिमज्झा[1] वसन्ता[2] णं अन्नउत्थिए[3] अट्ठेहि य हेऊहि[4] य पसिणेहि[5] य कारणेहि य वागरणेहि[6] य निप्पट्ठपसिणवागरणे करेन्ति[7], सक्का पुणाइं[8], अज्जो, समणेहिं निग्गन्थेहिं दुवालसङ्गं गणिपिडगं[9] अहिज्जमाणेहिं अन्नउत्थिया अट्ठेहि[10] य[11] जाव* निप्पट्ठपसिणा[12] करित्तए[13] ॥ १७४ ॥

तए णं समणा निग्गन्था य[14] निग्गन्थीओ य समणस्स भगवओ महावीरस्स[15] "तह" त्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेन्ति[16] ॥ १७५ ॥

* the preceding passage.

t from

१ A B F G °मज्झे। २ D E °वसंतो, B D E F om णं। ३ D E अणुत्थिए। ४ A हिउहि, D हित्तूहि, E हेउहि। ५ B F G पसणेहि। ६ F G om. ७ So G, but A B F करेति, D E करेइ। ८ D E G पुणाइ। ९ D E °पिडयं। १० D अत्थेहि। ११ B F om. १२ A D E °पसिणं, B °पसिणिं, F °पसिण, G °पसणे। १३ B D E G करेत्तए। १४ A B D E G om. य निग्गन्थीओ य। १५ A B D E om. १६ A B D °सुणेति, E F °सुणेइ, G °सुणंति।

तए णं से कुण्डकोलिए समणोवासए[1] समणं भगवं महावीरं[2] वन्दइ नमंसइ, २त्ता पसिणाइं पुच्छइ, २त्ता अट्ठमादियइ, २त्ता[3] जामेव दिसं[4] पाउब्भूए, तामेव दिसं[4] पडिगए[5] ॥ १७६ ॥

सामी बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥ १७७ ॥

तए[6] णं तस्स कुण्डकोलियस्स समणोवासयस्स[7] बहूहिं[8] सील जाव* भावेमाणस्स चोद्दस[9] संवच्छराइं[10] वइक्कन्ताइं[11]। पण्णरसमस्स[12] संवच्छरस्स अन्तरा वट्टमाणस्स अन्नया कयाइ जहा कामदेवो तहा जेट्ठपुत्तं[13] ठवेत्ता[14] तहा पोसहसालाए जाव† धम्म-

* Supply the rest from § 66, on p. २७.

† See § 92, and supply the full account from §§ 66-69.

१ A B D E G om. २ A B D E F om. २त्ता। ३ F दिसिं। ४ B only गए, D E पडिगया। ५ B तं for तए णं; D E G om. तए णं। ६ A D E F बहूहिं। ७ F G चउद्दस। ८ A B C D G संवच्छरा °न्ता। ९ A B वीइक्का°, D E विइक्का°। १० A B add य। ११ A जेट्ठं पुत्तं। १२ A G कुटुंबे ट्ठवित्या, D ट्ठवेत्ता, E ठवेइ २त्ता, F ट्ठवित्ता।

पसत्तिं[१] उवसम्पज्जित्ताणं विहरइ ॥ एवं एक्कारस उवासगपडिमाओ* ॥ १७८ ॥

तहेव जाव[२†] सोहम्मे कप्पे अरुणज्झए विमाणे जाव‡ अन्तं काहिइ[३] ॥ १७९ ॥

॥ निक्खेवो[४] ॥

सत्तमस्स[५] अङ्गस्स[५] उवासगदसाणं छट्ठं अज्झयणं समत्तं ॥

---

* See the whole statement in §§ 70 and 71.

† Supply the full account from §§ 89,90 or §§ 124,125.

‡ Supply the rest from footnote १२, on p. ८२ ; see also Bhag., pp. 303, 304.

---

१ D E °पसत्ती । २ A B om. ३ E काहिंति, G सिज्झिहिइ for अ० का० । ४ D E G om. ५ A B D E F om.

सत्तमं अज्झयणं ॥

## सत्तमस्स उक्खेवो[1] ॥

पोलासपुरे[2] नामं नयरे[3]। सहस्सम्बवणे[3] उज्जाणे[3]। जियसत्तू राया ॥ १८० ॥

तत्थ णं पोलासपुरे[4] नयरे सद्दालपुत्ते नामं कुम्भकारे[5] आजीविओवासए[6] परिवसइ। आजीवियसमयंसि लद्धट्ठे गहियट्ठे पुच्छियट्ठे विणिच्छियट्ठे अभिगयट्ठे[7] अट्ठिमिंजपेमाणुरागरत्ते[8] यं[9] "अयमा-

---

१ D E G उक्खेवओ। २ G prefixes तेणं समएणं तेणं कालेणं; G पुलासपुरे, A B D E F °पुरं। ३ A B D E F °रं, °णं। ४ F here and throughout पुलास°। ५ E adds इट्ठे, F होत्था। ६ A D E G आजीविउवासए, F आजीविए उवासए। ७ G om. from अभिगयट्ठे down to त्ति। ८ A अट्ठिमिंज्ज°, B अट्ठिमेज°। ९ A F om.

उसो आजीवियसमए[1] अट्ठे अयं परमट्ठे सेसे अणट्ठे[2]" त्ति[3] आजीवियसमएणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ १८१ ॥

तस्स णं सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स[4] एक्का[5] हिरण्णकोडी निहाणपउत्ता[6] एक्का[7] वड्ढिपउत्ता एक्का पवित्थरपउत्ता एक्के[8] वए[9] दसगोसाहस्सिएणं वएणं ॥ १८२ ॥

तस्स णं[10] सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स[11] अग्गिमित्ता[12] नामं भारिया होत्था[13] ॥ १८३ ॥

तस्स णं सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स[14] पोलासपुरस्स नगरस्स बहिया पञ्च[15] कुम्भकारावणसया

---

१ B °समट्ठे। २ D E F G अणिट्ठे (Skr. अनिष्टः)। ३ A adds एवं। ४ F आजीविउवा°। ५ B G एका। ६ F G °पउत्ताउ। ७ So F; A B D only वड्ढिपवित्थरपउत्ता, E वुड्ढिपवित्थरपउत्ता, G वुड्ढिपउत्ताउ पवित्थरपउत्ताउ। ८ A B F G एगे। ९ B D व्वए, and B afterwards व्वएणं। १० B om. ११ A B D E F G om. १२ G अग्गमित्ता। १३ B D E F G om. १४ D E only आजीवियस्स, F आजीवियउवासगस्स; the reading of the MSS. here and elsewhere varies between the three forms आजीविओवा°, आजीविउवा° and आजीवियउवा°। १५ G reads पंचसय कुंभकारावणस्स।

होत्था। तत्थ[1] णं बहवे पुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा[2] कल्लाकल्लिं[3] बहवे करए य वारए य पिहडए[4] य घडए य अड्डघडए[5] य कलसए य अलिञ्जरए[6] य जम्बूलए[7] य उट्टियाओ य करेन्ति[8], अन्ने य से[9] बहवे पुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा[10] कल्लाकल्लिं तेहिं बहूहिं करएहि[11] य जाव* उट्टियाहि य रायमग्गंसि वित्तिं कप्पेमाणा[12] विहरन्ति[13] ॥ १८४ ॥

तए णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए अन्नया[14] कयाइ[15] पुव्वावरण्हकालसमयंसि[16] जेणेव असोगवणिया[17] तेणेव उवागच्छइ, २त्ता[18] गोसालस्स मङ्खलि-

---

* Supply the rest from the preceding sentence.

---

१ So A; B तस (?), D E F G तस्स। २ A B दिन्नभयिभत्तवेयणा, D दिन्नभव्विभत्तावेदणा, E दिन्नभत्तिभत्तावेदणा, F दिन्नभइए भत्तवेयणा, G दिन्नभत्तवेइणा। ३ D E G °कल्लं। ४ A पिउए, B F पिउए। ५ G om. अड्ड° य। ६ D अलिंजयए, E अलिंजए (see comm. to § 94, p. ३१). ७ F जंबुलए। ८ So D G; A करेति, B करित्ति, F करिंति। ९ D E om. से (Skr. तस्य, see Hem. III, 81). १० So A B F दिन्न°; D E दिन्नभत्तदिन्नवेयणा, G दिन्नभविभत्त। ११ D E करएहिं, om. य। १२ B कप्पेमाणे। १३ A E G विहरइ। १४ A अन्नदा। १५ A कदाइ, B G कयाइं। १६ E पुव्वावरन्ह°। १७ F °वणियाए। १८ D E F G om. २त्ता

पुत्तस्स अन्तियं[1] धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जित्ताणं विहरइ[2] ॥ १८५ ॥

तए[3] णं तस्स सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स एगे[4] देवे अन्तियं पाउब्भवित्था ॥ १८६ ॥

तए णं से देवे अन्तलिक्खपडिवन्ने सखिङ्खिणियाइं जाव* परिहिए[5] सद्दालपुत्तं आजीविओवासयं एवं वयासी। "एहिइ[6] णं, देवाणुप्पिया, कल्लं इहं महामाहणे उप्पन्नणाणदंसणधरे[7] तीयपडुप्पन्नमणागयजाणए[8] अरहा जिणे केवली सव्वण्णू सव्वदरिसी[9] तेलोक्कवहियमहियपूइए[10] सदेवमणुयासुरस्स[11] लोगस्स

---

* Supply the rest from § 113.

---

१ E अंतिए। २ A विहरंति। ३ A reads only तस्स णं। ४ B G एके, D E एक्को। ५ A pref. पवर; F reads पहिरिए, with metathesis as in the modern Hindī पहिरना 'to dress.' ६ A एहीते, B एहिते, F एहिति, D E एहिंति (plur.), G एह। ७ A B °णाण°। ८ So A; D तीयपडुपण्णाणागय-जाणए, E तीयपडुपण्णागए जाणए, G ईयपडुपण्णाणागयजाणए; B तीययडिपडपन्नाणागयजाणए (perhaps °पडियउप्पन्ना° for °पत्यु-त्पन्ना°); but F तीयपच्चुपन्नमणागए जाणए। ९ A °दरिस्सी, E F °दरसी (cf. Hem. II, 105)। १० D G तिलोक्क°, F तिलोक°, E तिलोय°; E om. वहिय। ११ G सद्देव°; A °माणुया°; D E °सुरलोगस्स।

अच्चणिज्जे वन्दणिज्जे सक्कारणिज्जे[1] सम्माणणिज्जे कल्लाणं मङ्गलं देवयं चेइयं जाव* पज्जुवासणिज्जे तच्चकम्मसम्पयासम्पउत्ते[2]। तं[3] णं तुमं वन्देज्जाहि[4] जाव† पज्जुवासेज्जाहि[5], पाडिहारिएणं[6] पीढफलगसिज्जासंथारएणं[7] उवनिमन्तेज्जाहि[8]"॥ दोच्चं पि तच्चं[9] पि एवं वयइ[10], २त्ता जामेव दिसं[11] पाउब्भूए तामेव[12] दिसं[11] पडिगए[13]॥ १८७॥

तए णं तस्स सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स तेणं[14] देवेणं एवं वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झ-

---

* Supply विणएणं from Ov. § 2.

† See footnote ‖ on p. ५.

---

१ D E G om. from सक्कारणिज्जे down to चेइयं; A B F pref. पूयणिज्जे which is also omitted by the comm. | २ A G a तव्वकम्म० (see Hem. II, 21); B om. सम्पया; G संपवोत्ते। ३ A G त, B D E F ते, see note to translation. ४ F वंदिज्जाहि। ५ D E F पज्जुवासिज्जाहि। ६ A पडिहारिएणं। ७ G ०संथारेणं। ८ A उवनिमंतेज्जाहि, D E उवणिमंतिज्जासि, F उवनिमंतिज्जाहि। ९ B om. तच्चं पि। १० D वदइ, B वयंति, F G वयसी। ११ F दिसिं। १२ A B read जाव for तामेव दिसं, G only तामेव om. दिसं। १३ G गए। १४ E F om. from तेणं to समाणस्स।

त्थिए ४* समुप्पन्ने। "एवं खलु ममं धम्मायरिए[1] धम्मोवएसए गोसाले मङ्खलिपुत्ते, से णं महामाहणे उप्पन्नणाणदंसणधरे[2] जाव† तच्चकम्मसम्पयासम्पउत्ते[3], से णं कल्लं इहं हव्वमागच्छिस्सइ। तए णं तं[4] अहं वन्दिस्सामि जाव‡ पज्जुवासिस्सामि पाडिहारिएणं[5] जाव† उवनिमन्तिस्सामि"॥ १८८॥

तए णं कल्लं[6] जाव§ जलन्ते समणे भगवं महावीरे जाव‖ समोसरिए। परिसा निग्गया जाव¶ पज्जुवासइ[7]॥ १८९॥

तए णं से सद्दालपुत्ते अजीविओवासए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे, "एवं खलु समणे भगवं महावीरे[8] जाव** विहरइ[9], तं गच्छामि णं समणं भगवं

---

* See the rest in § 66 on p. २७, also footnote § on p. २२.
† Supply the rest from the preceding paragraph.
‡ See footnote ‖ on p. ५.
§ See footnote ‡ on p. २८.
‖ See footnote ‡ on p. ५.
¶ Supply the rest from § 9.
** See footnote § on p. १.

---

१ B om. २ A B °णाग°, F °नाग°। ३ F तच्चं कम्मं, G तवकंम°; E G om. सम्पया। ४ D E om. तं। ५ A पडिहारियं। ६ D E om. ७ A कल्लिं। ८ F पज्जुवासंति। ९ D om. १० D विहरंति।

महावीरं वन्दामि जाव* पज्जुवासामि", एवं सम्पेहेइ[1], २त्ता[2] ण्हाए जाव† पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं[3] जाव†† अप्पमहग्घाभरणालङ्कियसरीरे[4] मणुस्सवग्गुरापरिगए साओ[5] गिहाओ पडिणिक्खमइ[6], २त्ता पोलासपुरं नयरं[7] मज्झं मज्झेणं निग्गच्छइ, २त्ता[8] जेणेव सहस्सम्बवणे उज्जाणे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, २त्ता तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ, २त्ता वन्दइ नमंसइ[9], २त्ता जाव* पज्जुवासइ ॥ १९० ॥

तए णं समणे भगवं महावीरे सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स तीसे य महइ[10] जाव‡ धम्मकहा समत्ता ॥ १९१ ॥

"सद्दालपुत्ता" इ[11] समणे भगवं महावीरे सद्दाल-

---

* See the rest in footnote ‖ on p. ५.
† See footnote † on p. ६.
‡ See footnote † on p. ६५.

---

१ F संपेहिइ, G संपेहइ । २ D E om. २ त्ता । ३ So F G in full, A B D E only सुद्धप्पा अप्प । ४ A B D E F G om. ५ F सयाओ । ६ A B D G पडिणिग्गच्छइ । ७ A B F नगरं । ८ A B D E om. २त्ता । ९ A B om. नमंसइ २त्ता, F om. only २त्ता । १० F adds माहलियाए । ११ A B G दि, F इति ।

पुत्तं आजीविओवासयं एवं वयासी। "से नूणं, सद्दालपुत्ता, कल्लं तुमं पुव्वावरण्हकालसमयंसि[१] जेणेव असोगवणिया जाव*[२] विहरसि[३]। तए णं तुब्भं[४] एगे देवे अन्तियं[५] पाउब्भवित्था। तए णं से देवे[६] अन्तलिक्खपडिवन्ने[७] एवं वयासी। ""हं भो सद्दालपुत्ता,"" तं चेव सव्वं[८] जाव† ""पज्जुवासिस्सामि[९]""। से नूणं, सद्दालपुत्ता, अट्ठे[१०] समट्ठे?" ॥

"हंता, अत्थि[११]" ॥

"नो[१२] खलु, सद्दालपुत्ता, तेणं देवेणं गोसालं मङ्खलिपुत्तं पणिहाय[१३] एवं वुत्ते" ॥ १९२ ॥

तए णं तस्स सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासयस्स[१४] समणेणं भगवया[१५] महावीरेणं[१५] एवं वुत्तस्स समाणस्स

---

* See the rest in § 185.

† Supply the rest from §§ 187, 188.

---

१ F only पुव्वावरण्हकाले। २ D E pref. तं। ३ A विहरसंति, B विरसि, D E G विहरइ, F विहरिसे। ४ A तुमं, F तुब्भे, see note to translation of § 173. ५ E अंतिए। ६ B D E G om. ७ B F only अंतलिक्खे। ८ D E transpose जाव सव्वं। ९ A G read पज्जुवासामि। १० A F अत्थे समत्थे, B अत्थे समट्ठे। ११ B अत्थिं। १२ B D E F G pref. तं। १३ D E पणिधाय। १४ A B D E F G om. १५ A B G om., D E only ३।

इमेयारूवे[1] अज्झत्थिए ४[2]*। "एस णं समणे भगवं महावीरे महामाहणे उप्पन्नणाणदंसणधरे[3] जाव† तच्चकम्मसम्पयासम्पउत्ते[4]। तं सेयं खलु मम[5] समणं भगवं महावीरं वन्दित्ता नमंसित्ता[6] पाडिहारिएणं[7] पीढफलग[8] जाव† उवनिमन्तित्तए" एवं सम्पेहेइ[9], २त्ता उट्ठाए उट्ठेइ, २त्ता समणं भगवं महावीरं वन्दइ नमंसइ[10], २त्ता एवं वयासी। "एवं खलु, भन्ते, मम[11] पोलासपुरस्स नयरस्स[12] बहिया पञ्च कुम्भकारावण-सया। तत्थ णं तुब्भे पाडिहारियं[13] पीढ जाव† संथा-रयं[14] ओगिण्हित्ताणं[15] विहरह[16]" ॥ १९३ ॥

तए णं समणे भगवं महावीरे[17] सद्दालपुत्तस्स

---

* See the rest in § 66 on p. २७, also footnote § on p. ३२.

† Supply the rest from § 187.

---

१ D E इमे एयारूवे। २ A F have both the numeral letter ४ (=4) and the numeral figure ४; B only ४; D only ५; E G om. ३ D E only उप्पन्नणाणे। ४ A B D F G om. तच्च, E °संपत्ते। ५ B D E मम। ६ G often spells नमंस°। ७ D E पडिहारिएणं। ८ A B G °फलह। ९ G संपेहइ। १० D E G मम। ११ A B F नगरस्स। १२ E संथारियंसि। १३ A B D F उगिण्हित्ताणं। १४ A विहरिह, B D E F G विहरइ। १५ A B om.

आजीविओवासगस्स[1] एयमट्ठं पडिसुणेइ, २ त्ता सद्दाल-पुत्तस्स आजीविओवासगस्स[2] पञ्चकुम्भकारावणसएसु फासुएसणिज्जं[3] पाडिहारियं पीढफलग[4] जाव[*] संथारयं ओगिण्हित्ताणं[5] विहरइ[6] ॥ १९४ ॥

तए णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए अन्नया कयाइ[7] वायाहययं[8] कोलालभण्डं अन्तो[9] सालाहिंतो बाहिया[10] नीणेइ, २त्ता[11] आयवंसि[12] दलयइ ॥ १९५ ॥

तए णं समणे[13] भगवं महावीरे सद्दालपुत्तं आजी-विओवासयं[14] एवं वयासी। "सद्दालपुत्ता, एस णं कोलालभण्डे कओ"? ॥ १९६ ॥

तए णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए[15] समणं भगवं महावीरं एवं वयासी। "एस णं, भन्ते, पुव्विं[16] मट्टिया आसी, तओ पच्छा उदएणं निमिज्जइ[17], २त्ता[18]

---

१ A B D E G only आजीवियस्स। २ D E om., A B F G only आजीवियस्स। ३ B F फासुय एसणिज्जं। ४ G om. फलग। ५ A उगिण्हियाणं, B F उगिण्हिताणं, D E G उगिण्ह-त्ताणं। ६ B विहरंति। ७ A F कयाइं। ८ A B वायाहयं, comm. वायाहयगं; A F add वा after it. ९ B अणंतो। १० D E बहिंतो। ११ B D E F om. २त्ता। १२ D E आत-पंसि; G reads एवं से दलयति। १३ B pref. से। १४ E G om. १५ A B D E F G om. १६ E पुव्वं। १७ So F G; B निमिज्जंति, but D E नमिज्जइ, A नमिज्जंसि। १८ B D E G om. २त्ता।

छारेण य करिसेण[1] य एगयओ[2] मीसिज्जइ[3], २त्ता चक्के आरोहिज्जइ[4]; तओ बहवे करगा य जाव* उट्टियाओ[5] य कज्जन्ति"॥१९७॥

तए णं समणे[6] भगवं[7] महावीरे सद्दालपुत्तं[8] आजीविओवासयं एवं वयासी। "सद्दालपुत्ता, एस णं कोलालभण्डे किं उट्ठाणेणं जाव† पुरिसक्कारपरक्कमेणं[9] कज्जन्ति[10], उदाहु अणुट्ठाणेणं जाव† अपुरिसक्कारपरक्कमेणं[10] कज्जन्ति"? ॥१९८॥

तए णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए समणं[11] भगवं महावीरं एवं वयासी। "भन्ते, अणुट्ठाणेणं जाव† अपुरिसक्कारपरक्कमेणं[12], नत्थि उट्ठाणे इ वा

---

* Supply the rest from § 184.

† Supply the rest from § 166.

---

१ G करसेण। २ D E एगओ। ३ So F, A G मासिज्जइ, B मीसज्जति; D E मिसिज्जइ; A B add ए after it. ४ A आरोभिज्जंति, B G आरुभिज्जइ, D E F आरुहिज्जइ। ५ F उद्दाओ। ६ B pref. से। ७ D om. ८ A B F read °पुतस्स °वासयस्स। ९ F पुरिसका°। १० G om. ११ So A B G; but F समणे भगवं महावीरे एवं वयासी, D E समणेणं भगवया म० एवं वयासी; perhaps the full reading should be समणेणं भगवया म० एवं वुत्ते समाणे समणं ३ एवं वयासी। १२ F अपुरिसका°।

जाव* परक्कमे इ वा, नियया[1] सव्वभावा" ॥ १६६ ॥

तए णं समणे भगवं महावीरे[2] सद्दालपुत्तं आजीविओवासयं एवं वयासी। "सद्दालपुत्ता, जइ णं तुब्भं[3] केइ पुरिसे वायाहयं वा पक्केल्लयं[4] वा कोलालभण्डं अवहरेज्जा[5] वा विक्खरेज्जा[6] वा भिन्देज्जा[7] वा अच्छिन्देज्जा[8] वा परिट्ठवेज्जा[9] वा अग्गिमित्ताए वा भारियाए सद्धिं विउलाइं भोग-भोगाइं[10] भुञ्जमाणे विहरेज्जा, तस्स[11] णं तुमं पुरिसस्स किं[12] दण्डं[13] वत्तेज्जासि[14]?" ॥

"भन्ते[15], अहं णं तं[15] पुरिसं आओसेज्जा[16] वा

---

* Supply the rest from § 166.

---

१ D E णितिया, F नितिया; but A B G नितया। २ D E om. ३ A तुमं। ४ D E G पक्केलयं। ५ D E अवहरिज्जा, G अवहरेज्ज। ६ So A B; D E F G विक्खरिज्जा (from Skr. विष्किर, 'scattering about'). ७ D E भिंदिज्जा। ८ D E अच्छिंदिज्जा, G छिंदिज्जा। ९ A B E G परिट्ठविज्जा, F परिट्ठवेज्ज, G om. from परिट्ठवेज्जा down to विहरेज्जा। १० A only भोगाइं। ११ G तयाणं। १२ D E कं, G omits किं दण्डं। १३ D E F डंडं। १४ D F वत्तिज्जासि, E वयंसासि, G ण व्वतेआहि (for न वत्तेज्जाहि). १५ D E G pref. तं णं and omit तं before पुरिसं। १६ A B D E आउसेज्जा, F आउ-सेज्जे, G आउसिज्ज।

हणेज्जा वा वन्धेज्जा वा महेज्जा[1] वा तज्जेज्जा[2] वा तालेज्जा[3] वा निच्छोडेज्जा[4] वा निब्भच्छेज्जा वा अकाले चेव जीवियाओ ववरोवेज्जा[5]"॥

"सद्दालपुत्ता, नो खलु तुब्भ[6] केइ पुरिसे वायाहयं[7] वा पक्केल्लयं[8] वा कोलालभण्डं अवहरइ वा जाव* परिट्ठवेइ वा अग्गिमित्ताए वा[9] भारियाए सद्धिं[10] विउलाइं भोगभोगाइं भुञ्जमाणे विहरइ। नो वा तुमं तं पुरिसं आओसेज्जसि[11] वा हणेज्जसि[12] वा[13] जाव* अकाले चेव जीवियाओ ववरोवेज्जसि[14]। जइ नत्थि उट्ठाणे इ वा जाव† परक्कमे इ वा, नियया[15] सव्वभावा। अहं[16] णं, तुब्भ[17] केइ पुरिसे

---

* Supply the rest from above.
† Supply the rest from § 166.

---

१ A मथेज्जा, B मधेज्जा। २ D E तत्तेज्जा। ३ A B तालिज्जा। ४ D E F निच्छोडिज्जा। ५ A B D E G ववरोविज्जा; A B F add वा। ६ So F; but A B D E G तुब्भं। ७ D E वाताहतयं। ८ G पक्केल्लयं। ९ A E G om. १० A G सिद्धिं। ११ A E आओसेसि, B आओसिसि, D E G आउसेसि, F आउसेज्ज। १२ A B हण, D E हणे, F G हणेज्ज। १३ A B D E om. १४ D E F G ववरोविज्जसि। १५ A B D E F नितिया। १६ A B G अह णं, D E अहसं, F अहन्नं। १७ So A B; but D E F तुब्भं; G तुमं।

वायाहयं[1] जाव* परिट्ठवेइ वा अग्गिमित्ताए वा[2] जाव* विहरइ, तुमं[3] वा तं पुरिसं आओसेसि[4] वा जाव* ववरोवेसि[5]। तो जं वदसि[6] नत्थि उट्ठाणे इ वा जाव† नियया° सव्वभावा, तं ते मिच्छा" ॥ २०० ॥

एत्थ[7] णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए सम्बुद्धे ॥ २०१ ॥

तए णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए[8] समणं भगवं महावीरं वन्दइ नमंसइ, २त्ता[10] एवं वयासी। "इच्छामि णं, भन्ते[11], तुब्भं अन्तिए[12] धम्मं निसामेत्तए[13]" ॥ २०२ ॥

तए णं समणं भगवं[14] महावीरे[14] सद्दालपुत्तस्स

---

* Supply the rest from above.
† Supply the rest from § 166.

---

१ D E वाताहतयं ; A B F G add वा, D E add पक्कोल्लयं वा। २ E G om. ३ G om. तुमं वा तं पुरिसं। ४ A आओसिसि, D E G आउसेसि, F आउसिज्ज। ५ A B ववरोविसि, F ववरोविज्जसि, G विवरोवज्जसि। ६ D E वयसि। ७ A B D E F नितिया। ८ F एत्थं। ९ A B D E F G om. १० A B F om. २त्ता। ११ A B D E om. १२ G अंतियं। १३ A B F G निसामित्तए। १४ A B om.

आजीविओवासगस्स तीसे य[1] जाव* धम्मं परिकहेइ॥ २०३॥

तए णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए[2] समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तिए[3] धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ[4] जाव† हियए[5] जहा आणन्दो[6] तहा[7] गिहिधम्मं पडिवज्जइ। नवरं एगा हिरण्णकोडी निहाणपउत्ता एगा[8] हिरण्णकोडी[9] वुड्ढिपउत्ता[10] एगा हिरण्णकोडी[9] पवित्थरपउत्ता एगे वए दसगोसाहस्सिएणं वएणं[11] जाव‡ समणं भगवं महावीरं वन्दइ नमंसइ, २त्ता[12] जेणेव पोलासपुरे नयरे[13] तेणेव उवागच्छइ, २त्ता[12] पोलासपुरं नयरं[14] मज्झं मज्झेणं जेणेव सए गिहे[15] जेणेव अग्गिमित्ता भारिया तेणेव

---

* See footnote † on p. ६५.

† For the supplement, see footnote ‡ on p. ७.

‡ Supply the rest from §§ 13-58.

---

१ F G add महइ माहालियाए। २ A B D E F G om. ३ D E अंतियं। ४ A B °तुट्ठे, D om. तुट्ठ। ५ A हिययए, B हियये, G हियहियए। ६ A B D E F आणंदे। ७ F जाव। ८ D E have only वुड्ढि पवित्थर। ९ F G om. १० D E G वुड्ढि। ११ A B G om. १२ D E G om. २त्ता। १३ A B F G नगरे। १४ A B F नगरं। १५ D गेहे।

उवागच्छइ, २त्ता अग्गिमित्तं[1] भारियं एवं वयासी। "एवं खलु, देवाणुप्पिए[2], समणे भगवं[3] महावीरे जाव* समोसढे[4], तं[5] गच्छाहि णं[6] तुमं, समणं भगवं महावीरं वन्दाहि जाव† पज्जुवासाहि, समणस्स[7] भगवओ महावीरस्स अन्तिए पञ्चाणुव्वइयं सत्त-सिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जाहि"॥ २०४॥

तए णं सा अग्गिमित्ता भारिया सद्दालपुत्तस्स समणोवासगस्स "तह" त्ति एयमट्ठं विणएण पडि-सुणेइ॥ २०५॥

तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए[8] कोडुम्बिय-पुरिसे[9] सद्दावेइ, २त्ता[10] एवं वयासी। "खिप्पामेव, भो देवाणुप्पिया[11], लहुकरणजुत्तजोइयं[12] समखरवालि-

---

* For the rest see footnote ‡, on p. ५.

† For the rest, see footnote ‖, on p. ५.

---

१ B अग्गिमेत्तं। २ G देवाणुप्पिया। ३ G om. भ० महा०, A B om. only महावीरे। ४ D E ममोसढो, G समोसरणे। ५ G om. ६ D E om. ७ G om. from समणस्स down to पडिवज्जाहि। ८ A B D E G om. ९ A D F कोडंबिय०; G °पुरिसं। १० G om. २त्ता। ११ F देवाणुप्पिए। १२ G pref. चाउग्घंटं; A लहुकरणं जु०, D E °करणज्जु०; A F °जोइयसम०।

हाणसमलिहियसिङ्गएहिं[1] जम्बूणयामयकलावजोत्त-पइविसिट्ठएहिं[2] रययामयघण्टसुत्तरज्जुगवरकञ्चणख-इयनत्थापग्गहोग्गहियएहिं[3] नीलुप्पलकयामेलएहिं[4] पवरगोणजुवाणएहिं[5] नाणमणिकणगघण्टियाजाल-परिगयं[6] सुजायजुगजुत्तउज्जुगपसत्थसुविरइयनिम्मि-यं[7] पवरलक्खणोववेयं[8] जुत्तामेव[9] धम्मियं जाणप्प-वरं[10] उवट्ठवेह, २त्ता[11] मम एयमाणत्तियं पच्चप्पि-णह[12]॥ २०६॥

तए णं ते कोडुम्बियपुरिसा जाव* पच्चप्पिणन्ति[12]॥ २०७॥

---

* Supply the rest from the preceding paragraph.

---

१ A ०वालिहाणे। २ D जंबुणजा०; A ०कलावा०; D E ०जुत्त०, F ०जोत्ता०; G ०पय०; D E ०विसट्ठएहिं। ३ D रज-या०, A ०मया०; B ०घंटा०, F G ०घंट्ट०; A B F ०खंचिय०, D E ०खचिय०, G om.; D ०तत्ता० (for नत्था); F G ०गहिएहिं॥ ४ So A; but B F ०कयामेलएहिं, D E ०कयामलएहिं, G कय-मालएहिं॥ ५ A ०जुत्ताणएहिं। ६ F ०कणय०; A ०जालि०॥ ७ E om. जुग; A G ०जोत्त०, F ०जोत्तं; G om. सु before विरइय; A B ०निम्मयं; D E F read निम्मियपवर० as one compound॥ ८ G ०ववेहिं। ९ D E read संजुत्तमेव। १० E F ०पवरं। ११ D E G om. २त्ता। १२ E ०पच्चपिणह, F पच्चुप्पिण०।

तए णं सा अग्गिमित्ता भारिया ण्हाया जाव[*] पायच्छित्ता[१] सुद्धप्पावेसाइं[२] जाव[*३] अप्पमहग्घाभरणालङ्कियसरीरा[४] चेडियाचक्कवालपरिकिण्णा[५] धम्मियं जाणप्पवरं[६] दुरुहइ[७], २त्ता पोलासपुरं नगरं मज्झं मज्झेणं निग्गच्छइ, २त्ता[८] जेणेव सहस्सम्बवणे उज्जाणे तेणेव[९] उवागच्छइ, २त्ता धम्मियाओ[१०] जाणाओ पच्चोरुहइ, २त्ता[११] चेडियाचक्कवालपरिवुडा[१२] जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, २त्ता तिक्खुत्तो जाव[†१३] वन्दइ नमंसइ[१३], २त्ता[१४]

---

* For the supplement, see footnote † on p. ९.

† Supply the rest form § 10.

---

१ F पाइच्छित्ता। २ G om. from सुद्ध० down to उज्जाणे; A B D E only सुद्ध, F सुद्धपवेसाइं। ३ A B D E F G om. ४ F alone gives this and the preceding words in full; the other MSS. abbreviate सुद्ध अप्पम। ५ D ०परिकिण्हा, E ०परिक्खित्ता। ६ A B पवरं। ७ D E दुरूहइ। ८ D E om. २त्ता। ९ D E F om. तेणेव उवा० २त्ता। १० Before धम्मियाओ, A D E F insert जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ २त्ता; B G insert only जेणेव स० भ० महावीरे; F om. from धम्मियाओ down to उवागच्छइ २त्ता। ११ D E G om. २त्ता। १२ So G; but A B only ०परि om. वुडा; D E ०परिवुडे। १३ D E om. १४ A G om. २त्ता।

नच्चासन्ने[1] नाइदूरे[2] जाव* पञ्जलिउडा[3] ठिइया[4] चेव[5] पज्जुवासइ ॥ २०८ ॥

तए णं समणे भगवं[6] महावीरे[7] अग्गिमित्ताए तीसे य[8] जाव† धम्मं कहेइ[9] ॥ २०९ ॥

तए णं सा अग्गिमित्ता भारिया[10] समणस्स भगवओ महावीरस्स[11] अन्तिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा समणं भगवं[12] महावीरं[13] वन्दइ नमंसइ[14], २त्ता एवं वयासी। "सद्दहामि णं, भन्ते, निग्गन्थं[15] पावयणं[16] जाव‡ से जहेयं तुब्भे वयह[17]। जहा णं देवाणुप्पियाणं अन्तिए बहवे उग्गा भोगा जाव§ पव्वइया, नो खलु अहं तहा संचाएमि[18] देवाणुप्पि-

---

* See the rest in Ov. §§ 33, 38, Nāy. § 7.

† See footnote † on p. ६५.

‡ Supply the rest from § 12.

§ See the rest in § 12, also in Ov. §§ 23, 38.

---

१ F निच्चासन्ने। २ A B F om. ३ A B पंजलियडा। ४ So D E; A B ठिइयाओ (plur. of respect); F G ठिया। ५ G जाव। ६ A B D E G om. ७ A om. य। ८ G परिकहेइ। ९ D E G om. १० B G om. ११ A B G om. १२ A B D om. १३ A निग्गंथे, F निग्गंथपावयणं as a compound.। १४ A पावयणे। १५ A B वदह। १६ D E om. १७ G सिंचाएमि।

याणं[1] अन्तिए मुण्डा[2] भवित्ता जाव[3]*। अहणं देवाणुप्पियाणं अन्तिए पञ्चाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जिस्सामि[4]। अहासुहं, देवाणुप्पिया[5], मा[6] पडिबन्धं करेह[7]" ॥ २१० ॥

तए णं सा अग्गिमित्ता भारिया[8] समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तिए[9] पञ्चाणुव्वइयं[10] सत्त-सिक्खावइयं दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जइ, २त्ता समणं भगवं महावीरं[11] वन्दइ नमंसइ, २त्ता तामेव धम्मियं जाणप्पवरं[12] दुरुहइ[13], २त्ता जामेव दिसं[14] पाउब्भूया[15] तामेव दिसं[14] पडिगया[15] ॥ २११ ॥

---

* Supply the rest from § 12.

---

१ So F from देवा० down to भवित्ता; A B D E G have only देवा मुंडा। २ F मुंडे। ३ A B D E F G om. ४ So G; but A B D E F पडिवज्जामि। ५ A B D om. ६ So F; A B D E G om. मा पडि० क०। ७ F करेहि। ८ A B D E G om. ९ D E अंतियं। १० A B D E have only पंचा जाव, omitting the rest down to पडिवज्जइ; G has only गिहिधम्मं पडिवज्जइ। ११ A B °पवरं। १२ B D G दुरूहइ, E दूरूहइ। १३ D E om. १४ So G; but A B F पाउब्भूए, D E only पा। १५ A B F पडिगते।

तए णं समणे भगवं महावीरे[1] अन्नया कयाइ[2] पोलासपुराओ सहस्सम्बवणाओ पडिनिग्गच्छइ[3], २त्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ॥ २१२॥

तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए जाए अभिगयजीवाजीवे जाव* विहरइ॥ २१३॥

तए णं से[4] गोसाले[5] मङ्खलिपुत्ते इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे, "एवं खलु सद्दालपुत्ते आजीवियसमयं वमित्ता[6] समणाणं निग्गन्थाणं दिट्ठिं पडिवन्ने, तं गच्छामि णं सद्दालपुत्तं आजीविओवासयं[7] समणाणं निग्गन्थाणं दिट्ठिं वामेत्ता[8] पुणरवि आजीवियदिट्ठिं[9] गेण्हावित्तए[10]" त्ति कट्टु एवं सम्पेहेइ[11], २त्ता आजीवियसङ्घसम्परिवुडे जेणेव पोलासपुरे नयरे[12] जेणेव आजीवियसभा[12] तेणेव उवागच्छइ, २त्ता आजीविय-

---

* See footnote † on p. २७

---

१ A B G om. २ A B G कयाइं। ३ F पडिनिक्खमइ। ४ G गोसालिए। ५ F वामित्ता; G चइत्ता। ६ A B only आजीवी, D E आजीवि, G आजीव; but F आजीविउवास। ७ D E F वामित्ता। ८ A °दिट्ठं। ९ D गेण्हवेत्तए, E गिण्हवेत्तए, F गिण्हवित्तए। १० F G संपेहइ। ११ A B F नगरे। १२ D E °सद्दा।

सभाए[१] भण्डगनिक्खेवं[२] करेइ[३], २त्ता कइवएहिं[४] आजीविएहिं[५] सद्धिं जेणेव सद्दालपुत्ते समणोवासए तेणेव उवागच्छइ[६] ॥ २१४ ॥

तए णं से[७] सद्दालपुत्ते समणोवासए गोसालं मङ्खलिपुत्तं एज्जमाणं[८] पासइ, २त्ता नो आढाइ[९] नो परिजाणइ[१०], अणाढामाणे[११] अपरिजाणमाणे[१२] तुसिणीए[१३] संचिट्ठइ ॥ २१५ ॥

तए णं से[१४] गोसाले मङ्खलिपुत्ते सद्दालपुत्तेणं समणोवासएणं अणाढाइज्जमाणे[१५] अपरिजाणिज्जमाणे[१६] पीढफलगसिज्जासंथारट्ठाए[१७] समणस्स भगवओ महावीरस्स[१८] गुणकित्तणं करेमाणे[१९] सद्दालपुत्तं[२०]

---

१ So G; but A B D E F om. २ D E भंडनिक्खेवं, F भंडं नि०। ३ A करेंति। ४ So D E; G कतिविएहिं (Skr. कतिपय); but A B केवतिएहिं, F केवित्तीएहिं। ५ G om. ६ So G; but A B F add २, D E २त्ता। ७ A B D E F om. ८ D E एयमाणं। ९ A आढइ। १० D E परियाणाइ। ११ A F अणाढायमाणे, G अणाढाइज्जमाणे (passive)। १२ D E अपरियाणमाणे। [illegible] १३ E तुसणिए, F तुसिणिए, G तुसणीए। १४ [illegible] but A आणाइच्छिज्जमाणे, B D E अणाढिज्जमाणे, F अणाढिज्जमाणे। १६ So A B; but D F G अपरिजाणमाणे, E अपरियाणमाणे। १७ So G; A B D E ०सेज्जा०; A B D E F ०ट्ठयाए। १८ A B E om. १९ A B G करेइ, F करइ। २० B F G om. from सद्दा० down to वयासी।

समणोवासयं[1] एवं वयासी। "आगए णं, देवाणुप्पिया, इहं महामाहणे[2]" ॥ २१६ ॥

तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए[3] गोसालं मङ्खलिपुत्तं एवं वयासी। "के[4] णं, देवाणुप्पिया, महामाहणे?" ॥ २१७ ॥

तए[5] णं से गोसाले मङ्खलिपुत्ते[6] सद्दालपुत्तं समणोवसयं एवं वयासी। "समणे भगवं महावीरे[9] महामाहणे" ॥

"से[8] केणट्ठेणं[9], देवाणुप्पिया, एवं वुच्चइ समणे भगवं महावीरे[3] महामाहणे?" ॥

"एवं खलु, सद्दालपुत्ता[10], समणे भगवं महावीरे[11] महामाहणे उप्पन्ननाणदंसणधरे[12] जाव* महिय-

---

* Supply the rest from § 187.

---

१ E om. २ This word is throughout indifferently spelt महामाहणे or माहामाहणे। ३ A B D E G om. ४ F reads से केणट्ठेणं देवाणुप्पिया आगए णं माहामाहणे। ५ G om. the two first clauses of this paragraph, from तए णं down to एवं खलु। ६ D E F G om. ७ A B om. ८ D om. से। ९ A spells throughout केणं ट्ठेणं। १० B सद्दालपुत्ते, D E °पुत्तं। ११ B D E om. १२ A B °साण०, F G °नाण०; D E om. धरे।

पूइए[1] जाव* तच्चकम्मसम्पयासम्पउत्ते। से[2] तेणट्ठेणं[3], देवाणुप्पिया, एवं वुच्चइ समणे भगवं महावीरे[4] महामाहणे[5]। आगए[6] णं, देवाणुप्पिया, इहं[7] महागोवे" ॥

"के[8] णं, देवाणुप्पिया, महागोवे?" ॥

"समणे भगवं महावीरे[9] महागोवे[10]" ॥

"से[11] केणट्ठेणं, देवाणुप्पिया[12], जाव† महागोवे?" ॥

"एवं खलु, देवाणुप्पिया[13], समणे भगवं महावीरे[14] संसाराडवीए[15] बहवे[16] जीवे[17] नस्समाणे[18] विणस्समाणे[19] खज्जमाणे[20] छिज्जमाणे भिज्जमाणे[21] लुप्पमाणे

---

* Supply the rest from § 187.

† Supply the rest from the preceding portion of the paragraph.

---

१ A B F °पूजिए। २ G reads से केणट्ठेणं देवा० एवं खलु देवाणु समणे भ० महा० महामाहणे। ३ A spells throughout तेणं ट्ठेणं। ४ A D E G om. ५ F adds here the numeral २। ६ So G; but A B D E F pref. सद्दालपुत्ता, while D E then omit देवानुप्पिया। ७ B इमं, G om. ८ F G read से केणट्ठेणं देवा० महागोवे। ९ A B D E om. १० G om. ११ G om. this passage. १२ D E om. १३ G om. देवा० स० भगवं। १४ A B D E om. १५ A संसाराडावीए। १६ G om. बहवे जीवे। १७ F जीवा। १८ G reads °माणा throughout. १९ D om. २० So F in full; A B D E G only खज्जछिज्जभिज्जलुप्पविलुप्पमाणे। २१ D E place भिज्ज० छिज्ज०।

विलुप्पमाणे धम्ममएणं[1] दण्डेणं सारक्खमाणे[2] संगो-वेमाणे[3], निव्वाणमहावाडं[4] साहत्थिं[5] सम्पावेइ। से तेणट्ठेणं[6], सद्दालपुत्ता, एवं वुच्चइ समणे भगवं महावीरे[7] महागोवे[8]। आगए णं, देवाणुप्पिया[9], इहं महासत्थवाहे"॥

"के[10] णं, देवाणुप्पिया[11], महासत्थवाहे?"॥

"सद्दालपुत्ता, समणे भगवं महावीरे[12] महासत्थवाहे[13]"॥

"से केणट्ठेणं?"॥

"एवं खलु, देवाणुप्पिया[1], समणे भगवं महावीरे संसाराडवीए बहवे जीवे नस्समाणे विणस्समाणे[14] जाव* विलुप्पमाणे[15] धम्ममएणं[1] पन्थेणं[16] सारक्ख-

---

* Supply the rest from the preceding portion of the paragraph.

---

१ G धम्मएणं। २ G संरक्खमाणे। ३ G om. ४ G ०महा-वाडए। ५ B सहत्थिं, G साहत्थि। ६ A B D G only तेणं। ७ A B D E om. ८ F माहागोवे; this word is throughout indifferently spelled महागोवे or माहागोवे; F adds here the numeral २। ९ D E om. १० E F G से केणट्ठेणं। ११ F om. देवा० महा०। १२ A B D E G om. १३ A B D F G read जाव सत्थवाहे। १४ A B G om. १५ A B F G add उम्मग्गपडिवन्ने, which does not suit the context and has probably got in from the subsequent portion of the paragraph. १६ F G पथेणं।

माणे निव्वाणमहापट्टणाभिमुहे[1] साहत्थिं[2] सम्पावेइ[3]। से तेणट्ठेणं, सद्दालपुत्ता, एवं वुच्चइ समणे[4] भगवं महावीरे[5] महासत्थवाहे[6]। आगए णं, देवाणुप्पिया, इहं महाधम्मकही"॥

"के[7] णं, देवाणुप्पिया, महाधम्मकही?"॥

"समणे भगवं महावीरे महाधम्मकही"॥

"से केणट्ठेणं[8] समणे भगवं महावीरे[9] महाधम्मकही[10]?"॥

"एवं खलु, देवाणुप्पिया, समणे भगवं महावीरे महइमहालयंसि संसारंसि[11] बहवे जीवे नस्समाणे विणस्समाणे[12] उम्मग्गपडिवन्ने सप्पहविप्पणट्ठे[13] मिच्छत्तबलाभिभूए[14] अट्ठविहकम्मतमपडलपडोच्छन्ने[15]

---

१ B ०पटण०, G ०पट्टणंसि om. अभिमुहे। २ A B D E साहत्थि। ३ E संपावइ, D संपाविइ। ४ A B G om. from समणे down to ०सत्थवाहे। ५ D E om. ६ F adds here the numeral ३। ७ E F G read से केणट्ठेणं। ८ G only केण। ९ D E G om. १० G om. महा०, and adds सद्दालपुत्ता। ११ A सांसारंसि। १२ A B D E G read विणखज्जछिज्जभिज्जलुप्पविलुप्पमाणे, and F in full विणस्समाणे खज्जमाणे छिज्जमाणे भिज्जमाणे लुप्पमाणे विलुप्पमाणे; but the full phrase is quite out of place here; see note to translation. १३ D E ०विणट्ठे। १४ F ०भिसुयए। १५ A B ०पटलं प०; B G ०पडिच्छसे, E ०पडाच्छसे।

बहूहिं अट्ठेहि य जाव* वागरणेहि य चाउरन्ताओ[1] संसारकन्ताराओ साहत्थिं[2] नित्थारेइ[3]। से तेणट्ठेणं[4], देवाणुप्पिया, एवं वुच्चइ समणे[5] भगवं महावीरे महाधम्मकही[6]। आगए णं, देवाणुप्पिया, इहं[7] महानिज्जामए" ॥

"के[8] णं, देवाणुप्पिया, महानिज्जामए[9]?" ॥

"समणे भगवं महावीरे[9] महानिज्जामए" ॥

"से केणट्ठेणं?"

"एवं खलु, देवाणुप्पिया, समणे भगवं महावीरे[9] संसारमहासमुद्दे[10] बहवे जीवे नस्समाणे विणस्समाणे[11] वुड्डमाणे निवुड्डमाणे उप्पियमाणे[12] धम्ममईए[13]

---

* Supply the rest from § 174,

---

१ G चाउरंतसंसार०। २ B D E F G साहत्थि। ३ A नित्थारेंति। ४ D only तेणं। ५ A B F G om. from समणे down to ०धम्मकही। ६ F adds here the numeral ४। ७ G om. ८ D E F read से केणट्ठेणं। ९ A B D E G om. १० A B संसारे समुद्दे। ११ A B F add जाव विलुप्पमाणे, D E read विण जाव विलुप्पमाणे, G only जाव विलुप्पमाणे om. विण०; the words जाव विलुप्पमाणे are quite out of place here; see note to the translation. १२ G उप्पयमाणे। १३ D F ०मइए, F ०मए।

नावाए निव्वाणतीराभिमुहे साहत्थिं[1] सम्पावेइ। से तेणट्ठेणं, देवाणुप्पिया, एवं वुच्चइ समणे भगवं महावीरे[2] महानिज्जामए[3]"॥ २१८॥

तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए गोसालं मङ्खलिपुत्तं एवं वयासी। "तुब्भे णं, देवाणुप्पिया, इयच्छेया[4] जाव* इयनिउणा[5] इयनयवादी इयउवएसलद्धा[6] इयविण्णाणपत्ता[7], पभू[8] णं तुब्भे मम[9] धम्मायरिएणं[10] धम्मोवएसएणं[11] भगवया महावीरेणं सद्धिं[12] विवादं[13] करेत्तए[14]?"॥

"नो तिणट्ठे[15] समट्ठे"॥

"से केणट्ठेणं[16], देवाणुप्पिया, एवं वुच्चइ नो खलु पभू[8] तुब्भे मम[17] धम्मायरिएणं[10] जाव† महावीरेणं सद्धिं[12] विवादं[13] करेत्तए[14]?"॥

---

* See the supplement in the commentary, also Ov § 48, Nāy. § 34.
† Supply the rest from § 74. See also the preceding portion of the paragraph.

---

१ G साहत्थि। A B D E G om. ३ F adds here the numeral ५। ४ D E इयच्छेयाओ। ५ G om., D E इयनिउणाओ। ६ D E इयउवदेस०। ७ F G इयविन्नाण०। ८ F पङ्ग। ९ D E ममं। १० E G धम्मारिएणं। ११ A F G धम्मोवएसेणं। १२ G सिद्धिं। १३ D E विवायं। १४ F करित्तए, G करत्तए। १५ E G इणट्ठे, F इणमट्ठे। १६ A केणं ट्ठेणं। १७ B D E ममं।

"सद्दालपुत्ता, से जहानामए केइ पुरिसे तरुणे[1] जुगवं जाव* निउणसिप्पोवगए[2] एगं महं अयं वा एलयं वा सूयरं[3] वा कुक्कुडं वा तित्तिरं[4] वा वट्टयं वा लावयं[5] वा कवोयं[6] वा कविञ्जलं[7] वा वायसं वा सेणयं[8] वा हत्थंसि वा पायंसि वा खुरंसि वा पुच्छंसि वा पिच्छंसि वा सिङ्गंसि वा विसाणंसि वा रोमंसि वा जहिं जहिं गिण्हइ, तहिं तहिं निच्चलं निप्फन्दं[9] धरेइ[10]। एवामेव[11] समणे भगवं महावीरे मम[12] बहूहिं अट्ठेहि य[13] हेऊहि[13] य जाव† वागरणेहि[13] य जहिं[14] जहिं गिण्हइ[15], तहिं[16] तहिं निप्पट्ठपसिणवागरणं[17] करेइ। से तेणट्ठेणं[18], सद्दालपुत्ता, एवं वुच्चइ नो खलु पभू[19] अहं तव धम्मायरियएणं[20]

---

* See the supplement in the commentary.

† See the remainder in § 174.

---

१ F तरुणं। २ D E om. निउण। ३ G सूइरं। ४ D E तित्तरं। ५ D E लावगं। ६ D E कवोतयं। ७ D E कविंजलयं, F कविंजलिं। ८ So E; D सेसयं, A B F G सेगहं। ९ D E निप्पंदं (see Hem. II, 211)। १० D E धारइ। ११ D E एवमेव। १२ A G मम। १३ D E अट्ठेहिं हेऊहिं वागरणेहिं, om. य। १४ B F जेहिं जेहिं। १५ A गिण्हेंति। १६ G तिहिं तिहिं। १७ A B om. पसिण, D E °वागरणे। १८ A तेणं ट्ठेणं। १९ F पह। २० D G धम्मारियएणं।

जाव* महावीरेणं सद्धिं[१] विवादं[२] करेत्तए[३]" ॥ २१९ ॥

तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए गोसालं मङ्खलिपुत्तं एवं वयासी[४]। "जम्हा[५] णं, देवाणुप्पिया, तुब्भे मम[६] धम्मायरियस्स[७] जाव*[८] महावीरस्स सन्तेहिं[९] तच्चेहिं[१०] तहिएहिं सब्भूएहिं भावेहिं गुणकित्तणं[११] करेह[१२], तम्हा[५] णं अहं तुब्भे[१३] पाडिहारिएणं[१४] पीढ[१५] जाव† संथारएणं[१६] उवनिमन्तेमि[१७]। नो चेव णं धम्मो त्ति[१८] वा तवो त्ति[१८] वा। तं गच्छह[१९] णं तुब्भे मम कुम्भारावणेसु पाडिहारियं[१३] पीढफलग[२०] जाव† ओगिण्हित्ताणं[२१] विहरह" ॥ २२० ॥

---

* See the supplement in § 73.

† See the supplement in § 58.

---

१ G सिद्धिं। २ D E विवायं। ३ A B F करित्तए, G करत्तए। ४ A वदासी। ५ B जहा, तहा। ६ A D E ममं। ७ D G धम्मारियस्स। ८ G om. ९ B om. १० D E गुणेकित्तणं (गुणोक्कित्तणं)। ११ So A B; but D E F करेसि, D करिसि, G करेइ। १२ G तुब्भं। १३ A पडिहारि०। १४ F पीढफलग। १५ F G संथारेणं। १६ D E G उवनिमंतेइ। १७ A F G ति। १८ F गच्छ। १९ A B ०फलयं., D E ०फलएणं, F G फलगं। २० So D; A B E F G उगि; A B D E F G read ओगिण्हित्ता उवसंपज्जित्ताणं विहरह, but उवसंपज्जित्ताणं is here clearly out of place, nor does it occur in all other parallel passages.

तए णं से गोसाले मङ्खलिपुत्ते सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स[1] एयमट्ठं पडिसुणेइ, २त्ता कुम्भारावणेसु पाडिहारियं पीढ[2] जाव*[3] ओगिण्हित्ताणं[4] विहरइ॥ २२१॥

तए णं से गोसाले मङ्खलिपुत्ते सद्दालपुत्तं[5] समणोवासयं[6] जाहे[7] नो संचाएइ बहूहिं आघवणाहि[8] य पण्णवणाहि य सण्णवणाहि य विण्णवणाहि य निग्गन्थाओ पावयणाओ चालित्तए[9] वा खोभित्तए[10] वा विपरिणामित्तए[11] वा, ताहे[12] सन्ते तन्ते परितन्ते[13] पोलासपुराओ नगराओ[14] पडिणिक्खमइ[15], २त्ता बहिया[16] जणवयविहारं विहरइ॥ २२२॥

तए णं तस्स सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स[17]

---

* See the supplement in § 58.

---

१ G om., F °वासगस्स। २ F adds फलगं। ३ A B D E om. ४ A B D E F G उग्गिण्हित्ताणं। ५ A °पुत्तस्स। ६ A B जाधे। ७ A आघवणेहि; G only in full, A B D E F have only the numeral ४ after आघवणाहि य। ८ D E चालेत्तए; but A B संचालत्तए, F G संचालेत्तए। ९ B D E G खोभेत्तए। १० A B F विप्परिणामित्तए। ११ B ताधे। १२ B परिसन्ते। १३ D E गायराओ। १४ A B F परिनि°। १५ G om. बहिया जण° विहरइ। १६ G om.

बहूहिं सील[1] जाव* भावेमाणस्स चोद्दस[2] संवच्छरा वइक्कन्ता[3]। पण्णरसमस्स[4] संवच्छरस्स अन्तरा वट्टमाणस्स पुव्वरत्तावरत्तकाले[5] जाव† पोसहसालाए[6] समणस्स भगवओ महावीरस्स[7] अन्तियं धम्मपण्णत्तिं[8] उवसम्पज्जित्ताणं विहरइ॥ २२३॥

तए णं तस्स सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स[9] पुव्वरत्तावरत्तकाले एगे देवे अन्तियं पाउब्भवित्था[10]॥ २२४॥

तए णं से देवे एगं महं[11] नीलुप्पल जाव† असिं गहाय सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी। जहा चुलणीपियस्स तहेव[12] देवो[13] उवसग्गं करेइ। नवरं

---

* Supply the rest from § 66.
† Supply the full account from §§ 66-69.
‡ Supply the rest from § 95, on p. ५०.

---

१ F G सीलव्वय। २ F G चउद्दस। ३ A B वीतिक्कंता, D E वितिक्कंता। ४ B D F पन्नर०। ५ F G °कालसमयंसि। ६ A पोसहस्सालाए। ७ A B D E G om. ८ A B धम्मं, D E धम्म। ९ D E पाउब्भवित्ता। १० B महा। ११ After G which reads नीलुप्पल असिं गहाय एवं वयासी जहा etc.; A B D E F read only नीलुप्पल एवं जहा etc.; see the similar phrase in § 129 *et passim*. १२ B तधेव। १३ So F; but A B D E देवे, G om.

एक्केके[1] पुत्ते नव मंससोल्लए करेइ। जाव* कणीयसं घाएइ, २त्ता[2] जाव* आयच्चइ[3] ॥ २२५ ॥

तए णं से[4] सद्दालपुत्ते समणोवासए[5] अभीए जाव† विहरइ ॥ २२६ ॥

तए[6] णं से देवे सद्दालपुत्तं समणोवासयं अभीयं जाव† पासित्ता चउत्थं पि[7] सद्दालपुत्तं समणोवासयं[8] एवं वयासी। "हं भो सद्दालपुत्ता, समणोवासया[9], अपत्थियपत्थिया[10] जाव† न भञ्जसि[11], तओ ते[12] जा[13] इमा अग्गिमित्ता भारिया धम्मसहाइया[14] धम्मविइज्जिया[15] धम्माणुरागरत्ता समसुहदुक्खसहाइया[16], तं ते साओ[17] गिहाओ नीणेमि, २त्ता[18] तव अग्गओ

---

* Supply the full account from §§ 129-134.
† Supply the rest from § 96.
‡ Supply the rest from § 95.

---

१ G एकेकस्स पुत्तस्स। २ F om. २ त्ता। ३ So F; but A B D E G अइंचइ। ४ G om. ५ A B D E F om. ६ A B D G only तं for तए णं। ७ G om. पि। ८ A B D E F G om. ९ G adds ४। १० E भंजेसि। ११ D E से (gen.)। १२ G om. जा। १३ F °साहाइया। १४ D E धम्मचिंतिज्जा। १५ F सम्म°। १६ F सयाओ। १७ F G om. २ त्ता।

घाएमि, २त्ता[१] नव मंससोल्लए करेमि, २त्ता[२] आदाणभरियंसि[३] कडाहयंसि[४] अद्दहेमि[५], २त्ता[६] तव गायं[७] मंसेण य सोणिएण य आयञ्चामि[८], जहा णं तुमं अट्टदुहट्ट[९] जाव* ववरोविज्जसि" ॥ २२७॥

तए[१०] णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए[११] तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव† विहरइ॥ २२८ ॥

तए[१२] णं से देवे सद्दालपुत्तं समणोवासयं[१३] दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी। "हं भो सद्दालपुत्ता समणोवासया[११]," तं चेव भणइ‡॥ २२९ ॥

तए[१४] णं तस्स सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स[११] तेणं

---

* Supply the rest from § 95, on p. ५२.
† Supply the rest from § 96.
‡ Supply the full account from § 227.

---

१ F G om. २त्ता। २ D E F G om. २त्ता। ३ A B D E F G आयाण०। ४ A B कडाहियंसि। ५ So A F G; B अद्दहिमि, D E अद्दाहमि। ६ B F G om. २त्ता। ७ D E गातं। ८ So F; but A B D E G आइंचामि। ९ D E om.; A B only अट्ट; G अट्टज्झाणोवगयं। १० A B only तं for तए णं। ११ A B D E F G om. १२ B D G only तं for तए णं। १३ A B D E G om. १४ So E (see its list of errata); A B D F om. तए णं; G om. तए णं तस्स सद्दाल० सम०।

देवेणं देवं पि तच्चं[1] पि एवं वुत्तस्स समाणस्स अयं[2] अज्झत्थिए ४*[3] समुप्पन्ने[4]। एवं जहा† चुलणीपिया तहेव[5] चिन्तेइ। "जेणं ममं जेट्ठं[6] पुत्तं, जेणं ममं मज्झिमयं[7] पुत्तं, जेणं ममं कणीयसं पुत्तं जाव† आयच्चइ[8], जा वि य णं मम[9] इमा अग्गिमित्ता भारिया समसुहदुक्खसहाइया[10], तं पि य[11] इच्छइ साओ[12] गिहाओ नीणेत्ता मम[13] अग्गओ घाएत्तए[14]। तं सेयं[15] खलु ममं एयं पुरिसं गिण्हित्तए[16]" त्ति कट्टु उट्ठाइए जहा‡[17] चुलणीपिया तहेव सव्वं भाणियव्वं[18]। नवरं अग्गिमित्ता भारिया[19] कोलाहलं

---

* See the supplement in footnote § on p. ३२.
† Supply the full account from § 138.
‡ Supply the full account from §§ 138-143.

---

१ A B om. तच्चं पि। २ F इमेयारूवे, G om. ३ A B D E om. ४ A B D F G om. ५ B तधेव, D तं चेव। ६ B D E F जेट्ठपुत्तं। ७ G reads only मज्झिमकणीयसं पुत्तं। ८ A B D E G अइंचइ। ९ A D E मम। १० B D E have मम for सम; E ०दुह०। ११ D E om. य। १२ F सयाओ। १३ D E G मम। १४ A B D E घाइत्तए। १५ F सियं॥ १६ D E F G गिगहत्तए। १७ G जाव। १८ G om. १९ A B D E G om.

सुणित्ता[१] भणइ। सेसं जहा[२] चुलणीपिया वत्तव्वया[३]। नवरं अरुणचए[४] विमाणे उववन्ने[५] जाव* महाविदेहे वासे[६] सिज्झिहिइ[७]† ॥ २३० ॥

॥ निक्खेवो ॥

सत्तमस्स अङ्गस्स उवासगदसाणं सत्तमं अज्झयणं समत्तं ॥

† Supply the rest from §§ 89, 90; see also § 144.
* See footnote ‡ on p. ८३.

१ A B G सुणेत्ता। २ D E F G om. ३ D E G add सव्वा। ४ So D (Skr. अरुणार्चक); but A अरुणाचूति, F अरुणाचूए; B अरुणाभे, G अरुणाभूए (Skr. अरुणाभूत or अरुणाभूय), E अरुणाव्वए (Skr. अरुणाव्रज)। ५ A B D E उववाओ (Skr. उपपात), F उववाए; G om. ६ A B G om. ७ F in full, as in footnote ११, on p. ८३।

अट्ठमं अज्झयणं ॥

## ॥ अट्ठमस्स उक्खेवो[1] ॥

एवं खलु, जम्बू, तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे[2]। गुणसिले[3] चेइए। सेणिए[4] राया ॥ २३१ ॥

तत्थ णं रायगिहे महासयए[5] नामं गाहावई[6] परिवसइ अड्ढे जहा*[7] आणन्दो[8]। नवरं अट्ठ

---

* Supply the rest from §§ 3, 4.

---

१ G उक्खेवओ। २ A B नगरे। ३ B गुणसिल्ले, F °सिलए। ४ D E F सेणीए। ५ The MSS. spell this name indifferently महासयए or महासए। ६ E F गाहावइ। ७ G reads जाव परिभूए for जहा आणन्दो। ८ A B D E F आणंदे।

हिरण्णकोडीओ सकंसाओ[१] निहाणपउत्ताओ अट्ठ[२] हिरण्णकोडीओ[३] सकंसाओ[४] वड्ढिपउत्ताओ[५] अट्ठ हिरण्णकोडीओ सकंसाओ[६] पवित्थरपउत्ताओ[७] अट्ठ वया[८] दसगोसाहस्सिएणं वएणं[९] ॥ २३२ ॥

तस्स णं[१०] महासयगस्स रेवईपामोक्खाओ[११] तेरस भारियाओ होत्था, अहीण जाव* सुरूवाओ[१२] ॥२३३॥

तस्स णं महासयगस्स रेवईए भारियाए कोल-घरियाओ[१३] अट्ठ हिरण्णकोडीओ अट्ठ वया[१४] दसगो-साहस्सिएणं वएणं होत्था। अवसेसाणं दुवालसण्हं[१५] भारियाणं[१६] कोलघरिया[१७] एगमेगा[१८] हिरण्णकोडी[१९]

---

* See footnote † on page ४.

---

१ D E G om. २ A B D om.; E gives it in the list of errata. ३ A B D E om., G only हिरण्ण। ४ A B D E G om. ५ E G वुड्ढि॰; D E om. पउत्ताओ। ६ G om. सकंसाओ throughout; this word is occasionally spelt संकंसाओ and संकासाओ। ७ E ॰पत्ताओ। ८ D E G व्वया। ९ A B वदेणं। १० B F G om. ११ A D E F रेवइ॰। १२ A B G सरूवाओ। १३ A B D F कोलाहरियाओ, G कोलहरियाओ। १४ B D E G व्वया। १५ G दुवालसन्नं। १६ G सवित्तीणं (सवत्तीणं)। १७ A कोलाघरियाओ, B कोलाघरिया, D E कोलघरि, F कोलघरियाउ, G कोलघरी। १८ A एगा-मेगा, B D F एगेमेगा। १९ B F ॰कोडीओ।

एगमेगे[1] य वए दसगोसाहस्सिएणं वएणं[2] होत्था॥ २३४॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे[3]। परिसा निग्गया। जहा* आणन्दो[4] तहा निग्गच्छइ। तहेव सावयधम्मं पडिवज्जइ। नवरं अट्ठ[5] हिरण्णकोडीओ सकंसाओ[6] उद्धारेइ, अट्ठ वया[7], रेवईपामोक्खाहिं[8] तेरसहिं[9] भारियाहिं अवसेसं मेहुणविहिं पच्चक्खाइ। सेसं सव्वं तहेव। इमं च णं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ। "कल्लाकल्लिं[10] कप्पइ मे वेदोणियाए[11] कंसपाईए हिरण्णभरियाए[12] संववहरित्तए[13]"॥ २३५॥

तए णं से महासयए[14] समणोवासए जाए अभिगयजीवाजीवे[15] जाव† विहरइ॥ २३६॥

---

* See the whole account in §§ 10-58, up to *vittikantāreṇaṃ*, on p. २४.
† See the rest in § 64.

---

१ A एगामेगे, B एगेमेगे। २ B om. ३ D E G °सढो, F °सड्ढे। ४ F आणंदे। ५ A अट्ठा। ६ G संकासाओ। ७ D E G व्वया। ८ A B D E F रेवइ°; G °पमुक्खाहिं। ९ B तेरसेहिं, D E G तेरस (uninflected). १० D E G कल्लाकल्लं; after it A B F G add च णं। ११ E G दो for वे, D om. १२ A B F भारियाए। १३ G संवरवहरित्तए। १४ D E °सयगे। १५ A B D E F om. जीवाजीवे।

तए णं समणे भगवं महावीरे बहिया जणवय-विहारं[१] विहरइ॥ २३७॥

तए णं तीसे रेवईए गाहावइणीए अन्नया[२] कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि[३] कुडुम्ब[४] जाव* इमेया-रूवे अज्झत्थिए ४†। "एवं खलु अहं[५] इमासिं दुवालसण्हं सवत्तीणं[६] विघाएणं[७] नो संचाएमि[८] महासयएणं समणोवासएणं[९] सद्धिं[११] उरालाइं माणु-स्सयाइं[१२] भोगभोगाइं[१३] भुञ्जमाणी[१४] विहरित्तए[१५]। तं सेयं खलु ममं एयाओ दुवालस वि[१६] सवत्तियाओ[१७] अग्गिप्पओगेणं[१८] वा सत्थप्पओगेणं वा विसप्पओगेणं

---

* Supply जागरियं जागरमाणीए from the Bhagavatī, saya 3, uddesha 1 (p. 227 Calc. print); also Bhag. p. 292.

† For the rest, see § 66.

---

१ A B E F om. विहारं। २ D अन्नदा कदायि। ३ D E °काले। ४ B E कुटुंब, D F कुडंब, G कुटंब। ५ B om; A has both ४ and ङ। ६ A F इहं। ७ A B F सवतीणं, G सवित्तीणं। ८ F विघाइणं, G विग्घएणं (विग्घएणं)। ९ D संवादेमि। १० G om. ११ G सिद्धिं। १२ E माणुस्सियाइं। १३ E F G only भोगाइं। १४ D E भुंजमाणा। १५ A E विहरत्तए, D विहरेत्तए। १६ D E om. वि। १७ A B सवत्तीओ, G सवित्तीओ। १८ D E °प्पओएणं।

वा जीवियाओ ववरोवित्ता[1], एयासिं[2] एगमेगं हिरण्णकोडिं एगमेगं वयं सयमेव उवसम्पज्जित्ताणं महासयएणं समणोवासएणं[3] सद्धिं उरालाइं[4] जाव* विहरित्तए[5]"। एवं सम्पेहेइ, २त्ता तासिं[6] दुवालसण्हं सवत्तीणं[7] अन्तराणि[8] य छिद्दाणि[9] य विहराणि[9] य पडिजागरमाणी[10] विहरइ॥ २३८॥

तए णं सा[11] रेवई[12] गाहावइणी अन्नया कयाइ[13] तासिं दुवालसण्हं सवत्तीणं अन्तरं जाणित्ता छ सवत्तीओ[14] सत्थप्पओगेणं[15] उद्दवेइ[16], २त्ता छ सवत्तीओ[17] विसप्पओगेणं[18] उद्दवेइ, २त्ता तासिं[19] दुवालसण्हं सवत्तीणं कोलघरियं[20] एगमेगं हिरण्णकोडिं एगमेगं वयं सयमेव पडिवज्जइ, २त्ता महासयएणं

‡ For the rest, see the passage above.

१ A E ववरोविया। २ F adds णं। ३ G om. ४ G adds भोगभोगाइं। ५ A E विहरत्तए, D विहरेत्तए। ६ G एतासिं। ७ G सवित्तीणं। ८ B अणंतराणि। ९ A विहरीणि, D E विवराणि। १० A B D E F add २ after पडि०। ११ B om. १२ B E F रेवइ। १३ D कयावि। १४ A D E G छस्सवत्तीओ। १५ D E G ०प्पओएणं। १६ E उद्दावइ, F उद्दवंति। १७ A D E F G छस्सवत्तीओ। १८ A B F ०प्पओएणं। १९ A B G एतासिं। २० A कुल०; A G ०घरयं।

समणोवासएणं सद्धिं[१] उरालाइं भोगभोगाइं भुञ्जमाणी विहरइ ॥ २३९ ॥

तए णं सा रेवई गाहावइणी[२] मंसलोलुया[३] मंसेसु[४] मुच्छिया जाव* अज्झोववन्ना[५] बहुविहेहिं मंसेहि य सोल्लेहि य तलिएहि य[६] भज्जिएहि य सुरं च महुं च मेरगं[७] च मज्जं च सीधुं च पसन्नं[८] च आसाएमाणी[९] ४† विहरइ ॥ २४० ॥

तए णं रायगिहे[१०] नयरे अन्नया[११] कयाइ अमाघाए घुट्ठे यावि[१२] होत्था ॥ २४१ ॥

तए णं सा रेवई[१३] गाहावइणी मंसलोलुया मंसेसु[१४] मुच्छिया ४* कोलघरिए[१५] पुरिसे सद्दावेइ, २त्ता एवं

---

* See the supplement in the commentary.

† Supply विसाएमाणी परिभाएमाणी परिभुञ्जेमाणी from Kap. § 104. See also footnote ३ on p. २९; and the commentary.

---

१ G सिद्धिं। २ So F G; but A गाहावतीए, B D गाहावती, E गाहावइ। ३ E मंससोलया, G ०लोलया। ४ B only मंसे, G reads मंस मुच्छिज्जाव। ५ G अज्झोववेया। ६ A B D E F G read तलिएहिं भज्जिएहिं, om. य; but see comm. ७ G मेरं। ८ A B F G पसन्नं। ९ D आसादेमाणी; D E om. ४। १० D E रायगिहे। ११ D अन्नदा कदाचि। १२ G आवि ऊत्था। १३ E F रेवइ; A B D E F G om. गाहा०। १४ G only मंसे। १५ D E कोलघरए।

वयासी। "तुब्भे, देवाणुप्पिया, मम[1] कोलघरिएहिंतो वएहिंतो[2] कल्लाकल्लिं[3] दुवे दुवे गोणपोयए उद्दवेह[4], २त्ता ममं उवणेह[5]" ॥ २४२ ॥

तए णं ते कोलघरिया पुरिसा रेवईए गाहावइणीए[6] "तह" त्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणन्ति[7], २त्ता रेवईए गाहावइणीए कोलघरिएहिंतो वएहिंतो[8] कल्लाकल्लिं[9] दुवे दुवे गोणपोयए वहेन्ति[10], २त्ता रेवईए गाहावइणीए[11] उवणेन्ति ॥ २४३ ॥

तए णं सा रेवई गाहावइणी[12] तेहिं गोणमंसेहिं[13] सोल्लेहि[14] य 4*[15] सुरं च 6*[16] आसाएमाणी[17] 4* विहरइ ॥ २४४ ॥

तए णं तस्स महासयगस्स समणोवासगस्स[18] बहूहिं

---

* See the supplement in § 240.

---

१ F मम। २ DE om. ३ DE कल्लाकल्लं। ४ DG उवद्दवेह, E उवद्दावह। ५ B उवनेह, G उवनेहि। ६ E गाहावइए (गाहावईए)। ७ DE पडिसुणेइ। ८ BDEG om. ९ DE कल्ले कल्ले। १० DE उवहंति, F वहिंति। ११ E उवणेइ। १२ ABDEFG om. १३ ABFG गोमंसेहिं। १४ G सोलएहि। १५ DE have २ for 4। १६ DE om. ६। १७ D आसादेमाणी; G adds विसाएमाणी।

सील[1] जाव* भोवेमाणस्स चोद्दस[2] संवच्छरा[3] वइक्कन्ता[4]। एवं तहेव जेट्ठं[5] पुत्तं ठवेइ[6] जाव† पोसहसालाए धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जित्ताणं विहरइ॥ २४५॥

तए णं सा रेवई गाहावइणी मत्ता[7] लुलिया[8] विइण्णकेसी[9] उत्तरिज्जयं विकड्ढमाणी[10] २[11] जेणेव पोसहसाला जेणेव महासयए समणोवासए तेणेव उवागच्छइ, २त्ता मोहुम्मायजणणाइं[12] सिङ्गारियाइं इत्थिभावाइं उवदंसेमाणी २ महासययं समणोवासयं एवं वयासी। "हं भो महासयया समणोवासया, धम्मकामया पुण्णकामया[13] सग्गकामया मोक्खकामया

---

* See the rest in § 66.

† Supply the whole account from §§ 66-69.

---

१ G सीलव्वय। २ G चउद्दस। ३ B संवच्छराइं। ४ A B D E F विइक्कंता। ५ B D E F जेट्ठपुत्तं। ६ D E add २त्ता। ७ G मुत्ता। ८ G लोलुया। ९ D E विवण्णकेसी, F विइण्णकेसा। १० So D G; B विकट्ठ०; A E F विकड्ढ०; the conjunct ड्ढ, however, is generally so indistinctly written, that it is difficult to distinguish it from ड्ड and ट्ठ; see Hem. IV, 187. ११ G om.; the object of the numeral here is probably not rubrical, but only to indicate the repetition of the preceding word. १२ G ०जणगाइं (comm. जनकान्)। १३ F पुन्न०।

धम्मकङ्खिया ४* धम्मपिवासिया ४*, किणं तुब्भं[१], देवाणुप्पिया, धम्मेण वा पुग्गेण वा सग्गेण वा मोक्खेण वा, जणं तुमं[२] मए सद्धिं[३] उरालाइं जाव† भुञ्जमाणे[४] नो विहरसि[५]"? ॥ २४६ ॥

तए णं से महासयए समणोवासए[६] रेवईए गाहावइणीए[७] एयमट्ठं नो आढाइ नो परियाणाइ, अणाढामाणे[८] अपरियाणमाणे[९] तुसिणीए[१०] धम्मज्झाणोवगए विहरइ॥ २४७॥

तए णं सा रेवई गाहावइणी[११] महासययं समणोवासयं[१२] दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी। "हं भो" तं चेव भणइ, सो वि तहेव जाव‡ अणाढामाणे[१३] अपरियाणमाणे[१४] विहरइ॥ २४८॥

---

* See § 95.

† For the rest see § 238.

‡ Supply the full account from §§ 246, 247.

---

१ B D E तुब्भे। २ E तुमे। ३ G सिद्धिं। ४ G adds भोगभोगाइं। ५ E भुंजमाणो, G °माणी। ६ D E G विहरइ। ७ B D E om. ८ F गाहावईए। ९ B E F G अणाढाइज्जमाणे, D अनाढाएज्जमाणे। १० B D E F G अपरियाणिज्जमाणे। ११ E G तुसणीए, after which G inserts संचिट्ठइ। १२ B D E F G om. १३ E om. १४ B D E F G अणाढाइज्जमाणे। १५ D E अपरियाणिज्जमाणे, B F G om.

तए णं सा रेवई गाहावइणी महासयएणं समणोवासएणं[१] अणाढाइज्जमाणी अपरियाणिज्जमाणी जामेव दिसं[२] पाउब्भूया तामेव दिसं[३] पडिगया ॥ २४९ ॥

तए णं से महासयए समणोवासए पढमं उवासगपडिमं उवसम्पज्जित्ताणं विहरइ। पढमं अहासुत्तं जाव* एक्कारस वि ॥ २५० ॥

तए णं से महासयए समणोवासए[३] तेणं उरालेणं जाव† किसे धमणिसन्तए[४] जाए[५] ॥ २५१ ॥

तए णं तस्स महासययस्स समणोवासयस्स[६] अन्नया कयाइ[७] पुव्वरत्तावरत्तकाले धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयं[८] अज्झत्थिए ४‡। "एवं खलु अहं इमेणं उरालेणं" जहा§ आणन्दो[८] तहेव अपच्छिममार-

---

* Supply the rest from §§ 70, 71.
† See the supplement in § 72.
‡ See the supplement in § 66.
§ See the full account in § 73.

---

१ B E F G om. २ D E दिसिं। ३ B D E F G om. ४ G धमणसंतिए। ५ B F om. ६ D कदायि। ७ G अयमेयारूवे। ८ F अणंदे।

णन्तियसंलेहणाए[1] झूसियसरीरे भत्तपाणपडियाइक्खिए कालं अणवकङ्खमाणे विहरइ॥ २५२॥

तए णं तस्स महासयगस्स समणोवासगस्स[2] सुभेणं[3] अज्झवसाणेणं जाव* खओवसमेणं ओहिणाणे[4] समुप्पन्ने। पुरत्थिमेणं[5] लवणसमुद्दे जोयणसाहस्सियं खेत्तं[6] जाणइ पासइ, एवं दक्खिणेणं पच्चत्थिमेणं[7], उत्तरेणं जाव चुल्लहिमवन्तं वासहरपव्वयं[8] जाणइ पासइ, अहे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए[9] लोलुयच्चुयं[10] नरयं चउरासीइवाससहस्सट्ठिइयं[11] जाणइ पासइ॥ २५३॥

तए णं सा रेवई गाहावइणी अन्नया कयाइ[12] मत्ता जाव† उत्तरिज्जयं विकड्ढमाणी[13] २ जेणेव

---

* See the rest in § 74.

† See the rest in § 246.

---

१ D E °संलेहणाझूसिय°। २ B D E G om. ३ B F सुहेणं। ४ So D G; but B F उहिणाणे। ५ D पुरच्छिमेणं, F पुरित्थिमेणं, G पुरुच्छमेणं। ६ F G खित्तं। ७ So B F, but D E G पच्छिमेणं। ८ G om. ९ B D E F om. १० So D; B लोलुचुयं, E लोलुयच्चयं, F लोलुचयं, G लोलुचयंतं। ११ B D E F चउरासीवास°; D E ठियं, G ठिइं। १२ D कदायि। १३ B E विकट्ठमाणी, F विकड्ढ°; B D E G om. २; see footnote १० on p. १४८।

महासयए समणोवासए[1] जेणेव पोसहसाला[2] तेणेव उवागच्छइ, २त्ता महासययं तहेव भणइ जाव* दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी। "हं भो" तहेव[3]॥ २५४॥

तए णं से महासयए समणोवासए[4] रेवईए गाहावइणीए[5] दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे आसुरत्ते[6] ४† ओहिं[7] पउञ्जइ, २त्ता ओहिणा[8] आभोएइ, २त्ता रेवइं गाहावइणिं एवं वयासी। "हं भो रेवई[9], अपत्थियपत्थिए[10] ४†, एवं खलु तुमं अन्तो सत्तरत्तस्स अलसएणं[11] वाहिणा अभिभूया समाणी अट्टदुहट्टवसट्टा असमाहिपत्ता कालमासे[12] कालं किच्चा अहे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए लोलुयच्चए[13] नरए

---

* See the full account in §§ 246-248.

† See the supplement in § 95, on p. ५०.

---

१ B D E F om. २ D E पोसहसालाए। ३ D om.; E adds भणइ। ४ B D E F G om. ५ B G आसुरत्ते; D has २ after it instead of ४। ६ F G उहिं। ७ F उहिणा। ८ F रेवइ। ९ G °पत्थिया। १० D अलस्सएणं। ११ A कालं-मासे, F काले मासे। १२ A B D E F G लोलुचए।

चउरासीइवाससहस्सट्ठिइएसु नेरइएसु[1] नेरइयत्ताए[2] उववज्जिहिसि" ॥ २५५ ॥

तए णं सा रेवई गाहावइणी[3] महासयएणं समणोवासएणं एवं वुत्ता समाणी[4] एवं[5] वयासी। "दुट्ठे णं ममं महासयए समणोवासए[6], हीणे[7] णं ममं महासयए, अवज्झाया[8] णं अहं[9] महासयएणं समणोवासएणं, न नज्जइ णं, अहं केण[10] वि कुमारेणं[11] मारिज्जिस्सामि[12]" त्ति कट्टु भीया तत्था तसिया[13] उव्विग्गा[14] सज्जायभया सणियं २ पच्चोसक्कइ[15], २त्ता जेणेव सए गिहे[16] तेणेव उवागच्छइ, २त्ता ओहय[17] जाव* झियाइ ॥ २५६ ॥

---

* See the supplement in Kap. § 92.

---

१ A G नरएसु, B F नरइएसु, D E om. २ A F नेरयत्ताए, B नेरइत्ताए। ३ D E गाहावई। ४ F समाणा। ५ G reads भीया for एवं वयासी। ६ A G om. ७ G om. the clause हीणे to महासयए। ८ E अवज्झाणे। ९ A B F ममं। १० D E केणावि, F केणं वि। ११ D कुमारएणं, E कुमरणेणं, G कुमरिणिज्जेणं। १२ B मरिज्जिस्सामि। १३ A F तिसिया, D वधिता। १४ A B D E F G उविग्गा। १५ D E पच्चोसक्कोइ। १६ G गेहे। १७ A B E F उहय।

तए णं सा रेवई गाहावइणी अन्तो सत्तरत्तस्स अलसएणं[१] वाहिणा अभिभूया अट्टदुहट्टवसट्टा कालमासे[२] कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए लोलुयच्चुए[३] नरए चउरासीइवाससहस्सट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववन्ना ॥ २५७ ॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसरणं जाव*[४] परिसा पडिगया[५] ॥ २५८ ॥

"गोयमा" इ[६] समणे भगवं महावीरे एवं वयासी[७]। "एवं खलु, गोयमा[८], इहेव रायगिहे नयरे मम[९] अन्तेवासी महासयए नामं समणोवासए पोसहसालाए अपच्छिममारणन्तियसंलेहणाए[१०] झूसियसरीरे भत्तपाणपडियाइक्खिए कालं अणवकङ्ख-

---

* See the full account in Ov. §§ 22-38.

---

१ A B D F अलसएणं। २ A कालं मासे, B काले मासे। ३ G लोलचए, F लोलुयच्चुयं नरयं। ४ A B F place जाव after परिसा (see Bhag., pp. 242, 291); G om. जाव। ५ G निग्गया। ६ D दि। ७ A वदासी। ८ G throughout almost uniformly spells गोइमा। ९ A B मम। १० G अपच्छिमं मार० ; D E G मारणंतियं संले० ; D E ०संलेहनाझू०।

माणे विहरइ। तए णं तस्स महासयगस्स[1] रेवई गाहावइणी[2] मत्ता जाव*[3] विकट्ठमाणी[4] २ जेणेव पोसहसाला जेणेव महासयए तेणेव उवागए[5] मोहुम्माय[6] जाव* एवं वयासी[7] तहेव[8] जाव* दोच्चं पि तच्चं[9] पि एवं वयासी[10]। तए णं से[11] महासयए समणोवासए रेवईए गाहावइणीए दोच्चं पि तच्चं[9] पि एवं वुत्ते समाणे आसुरत्ते[12] ४† ओहिं पउञ्जइ[13], २त्ता ओहिणा[14] आभोएइ, २त्ता रेवइं गाहावइणिं एवं वयासी[15] जाव‡ "" उववज्जिहिसि" "। नो खलु कप्पइ, गोयमा, समणोवासगस्स अपच्छिम जाव§

---

* See the rest in § 246, also §§ 247, 248.
† See the supplement in § 95, on p. ५०.
‡ See the rest in § 255.
§ See the supplement in §§ 73, 252.

---

१ D E ०सयगस्स। २ A गाहावत्ती। ३ G adds उत्तरीयं। ४ A E विकट्टमाणी, B विकठ०, F विकट्ठ०। ५ D E read उवागच्छइ २त्ता। ६ D E मोज्झमादा, G ०म्मायं। ७ G om. ८ A om. ९ B F om. तच्चं पि। १० A वदासी। ११ F G om. १२ A F G आसुरुत्ते। १३ D E read कुविए for ४ ओहिं प० २त्ता; G om. ओहिं प० २त्ता। १४ A B F उहिणा। १५ B D E G om. एवं व०।

झूसियसरीरस्स भत्तपाणपडियाइक्खियस्स[१] परो[२] सन्तेहिं तच्चेहिं[३] तहिएहिं सब्भूएहिं[४] अणिट्ठेहिं[५] अकन्तेहिं अप्पियेहिं अमणुन्नेहिं अमणामेहिं[५] वागरणेहिं वागरित्तए[६]। तं गच्छ[७] णं, देवाणुप्पिया[८], तुमं महासययं समणोवासयं एवं वयाहि[९]। "“नो खलु, देवाणुप्पिया, कप्पइ समणोवासगस्स अपच्छिम जाव[*१०] भत्तपाणपडियाइक्खियस्स परो सन्तेहिं जाव[†] वागरित्तए[११]। तुमे[१२] य णं, देवाणुप्पिया, रेवई गाहावइणी सन्तेहिं ४[†] अणिट्ठेहिं[१३] ५[†] वागरणेहिं वागरिया[१४]। तं णं तुमं एयस्स ठाणस्स आलोएहि जाव[†] जहारिहं[१५] च[५] पायच्छित्तं पडिवज्जाहि”"" ॥ २५९ ॥

तए[१६] णं से भगवं गोयमे समणस्स भगवओ म-

---

* See note § on p. १५५.

† Supply the rest from the preceding passage.

‡ See § 84.

---

१ G भत्तपाणं पडि०। २ G om. ३ F G om. ४ F अणट्ठेहिं। ५ D E om. ६ D E G वागरेत्तए। ७ E G गच्छह। ८ G om. from देवा० down to वागरित्तए। ९ D E वयासी। १० A B D E F om. ११ B D E वागरेत्तए। १२ G तुब्भे and om. य। १३ G अणट्ठेहिं। १४ B D E वागरित्ता। १५ A B F जहारिहिं। १६ F तं for तए णं।

हावीरस्स "तह" त्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ, २त्ता[1] तओ परिणिक्खमइ[2], २त्ता रायगिहं नयरं[3] मज्झं मज्झेणं अणुप्पविसइ[4], २त्ता जेणेव महासयगस्स समणोवासयस्स गिहे जेणेव[5] महासयए समणोवासए तेणेव उवागच्छइ ॥ २६० ॥

तए णं से महासयए समणोवासए भगवं गोयमं एज्जमाणं पासइ, २त्ता[6] हट्ठ[7] जाव* हियए भगवं गोयमं वन्दइ नमंसइ ॥ २६१ ॥

तए णं से[8] भगवं गोयमे महासययं समणोवासयं एवं[9] वयासी। "एवं खलु, देवाणुप्पिया, समणे[10] भगवं महावीरे एवमाइक्खइ भासइ पन्नवेइ परूवेइ।""नो खलु कप्पइ, देवाणुप्पिया, समणोवासगस्स अपच्छिम जाव† वागरित्तए[11]""। तुमे[12] णं, देवाणुप्पिया,

---

* See note ‡ on p ७.

† See the rest in § 73.

---

१ A B F G om. २त्ता। २ A B F G परिनि०। ३ A B D नगरं। ४ G अणुप्पविट्ठइ। ५ G om. जे० महा० सम०। ६ A B D E F G om. २त्ता। ७ A adds तुट्ठ। ८ D E om. ९ G om. from एवं down to महावीरे। १० D E read रेवइं गाहावइणिं for स० भ० महा०। ११ D E वागरेत्तए। १२ A B F G add य।

रेवई गाहावइणी सन्तेहिं जाव* वागरिया। तं णं तुमं[1], देवाणुप्पिया, एयस्स ठाणस्स आलोएहि[2] जाव† पडिवज्जाहि[3]" ॥ २९२ ॥

तए णं से महासयए समणोवासए[4] भगवओ गोयमस्स "तह" त्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ, २त्ता तस्स ठाणस्स आलोएइ जाव† आहारिहं[5] च[6] पायच्छित्तं पडिवज्जइ ॥ २९३ ॥

तए णं से भगवं गोयमे महासयगस्स समणोवासयस्स[7] अन्तियाओ पडिणिक्खमइ[8], २त्ता रायगिहं नगरं मज्झं मज्झेणं निग्गच्छइ, २त्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, २त्ता समण भगवं महावीरं वन्दइ नमंसइ, २त्ता सञ्जमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ २९४ ॥

तए णं समणे[9] भगवं महावीरे अन्नया कयाइं[10]

---

* See the supplement in § 259.
† See § 84.

---

१ F तुमे। २ D आलोएह। ३ A B F G pref. पायच्छित्तं। ४ A B D E F G om. ५ A B F G अहारिहं, D E जहारिहं। ६ B E G om. ७ A B F G परिनि०। ८ D E से for समणे। ९ A G कयाइं, D कयावि।

रायगिहाओ नयराओ[1] पडिणिक्खमइ[2], २त्ता बहिया जनवयविहारं[3] विहरइ ॥ २६५ ॥

तए णं से महासयए समणोवासए बहूहिं सील[4] जाव* भावेत्ता वीसं वासाइं समणोवासगपरियायं[5] पाउणित्ता एक्कारस उवासगपडिमाओ सम्मं काएण फासित्ता[6] मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसित्ता[7] सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता[8] आलोइयपडिक्कन्ते[9] समाहिपत्ते कालमासे[10] कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे अरुणवडिंसए विमाणे देवत्ताए[11] उववन्ने। चत्तारि पलिओवमाइं ठिई। महाविदेहे वासे[12] सिज्झिहिइ[13] ॥ २६६ ॥

॥ निक्खेवो[14] ॥

सत्तमस्स[15] अङ्गस्स[15] उवासगदसाणं अट्ठमं अज्झयणं समत्तं ॥

---

* Supply the rest from § 66.

---

१ A B F नगराओ। २ A B F G परिनि०। ३ A जणवयं। ४ G adds व्वया। ५ D G परियागं। ६ A B F फासेत्ता। ७ G झूसेत्ता। ८ A B छेएत्ता, F छिंदित्ता, G छेदइत्ता। ९ D E आलेए पडिक्कमित्ता। १० A कालं मासे, B काले मासे। ११ A B D E F om. १२ G om. १३ D E add वुज्झिहिइ। १४ G निक्खेवओ। १५ A B D E F G om.

नवमं अज्झयणं ॥

## ॥ नवमस्स उक्खेवो[1] ॥

एवं खलु, जम्बू, तेणं कालेणं तेणं समएणं सावत्थी[2] नयरी[2]। कोट्ठए[3] चेइए। जियसत्तू राया ॥ २६७ ॥

तत्थ णं सावत्थीए नयरीए[4] नन्दिणीपिया[5] नामं गाहावई[6] परिवसइ अड्ढे[7]। चत्तारि हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ चत्तारि[8] हिरण्णकोडीओ वड्ढिपउत्ताओ चत्तारि हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ चत्तारि वया[9] दसगोसाहस्सिएणं वएणं। अस्सिणी भारिया ॥ २६८ ॥

---

१ G उक्खेवओ। २ A B F सावत्थीए नयरीए। ३ F कोट्ठचेइए। ४ A B D E F om. ५ E नंदणपिया। ६ A F G गाहावइ। ७ G adds दित्ते। ८ B D E only वड्ढि पवित्थर पउत्ताओ; E °वुड्ढि°। ९ D E व्वया।

सामी समोसढे[१]। जहा* आणन्दो तहेव[२] गिहिधम्मं पडिवज्जइ। सामी बहिया[३] विहरइ॥ २६६॥

तए णं से नन्दिणीपिया[४] समणोवासए[५] जाए जाव[६]† विहरइ॥ २७०॥

तए णं तस्स नन्दिणीपियस्स[७] समणोवासयस्स[८] बहूहिं[९] सीलव्वयगुण जाव‡ भावेमाणस्स चोद्दस[१०] संवच्छराइं[११] वइक्कन्ताइं[११]। तहेव[१२§] जेट्ठं[१३] पुत्तं ठवेइ[१४]।

---

* Supply the whole account from §§ 10-58.

† See the rest in § 64.

‡ Supply the rest from § 66, 67.

§ Supply the rest from §§ 68-74.

---

१ E D G समोसढो। २ G तहा। ३ G adds जिणवइविहारं। ४ B F नंदिणिपिया। ५ MS. A breaks off here, the remainder of the work being lost. ६ B F om. जाए; but D E om. जाव and G om. जाव विहरइ। ७ A B D E F G om. ८ F वज्ज। ९ G चउद्दस। १० D E G संवच्छरा। ११ B F विइक्कंताइं, D E विइक्कंता, G वइक्कंता। १२ G has जहा कामदेवो for तहेव। १३ B D E जेट्ठपुत्तं। १४ F ठवइ; G ठावेत्ता and, instead of the remainder, reads पोसहसालाए समणस्स भगवओ धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ नवरं निरुवसग्गं एक्कारस वि उवासगपडिमाओ भाणियव्वा एवं कामदेवगमेणं नेयव्वा जाव सोहम्मे कप्पे अरुणगवे विमाणे देवत्ताए उववन्ने महाविदेहे सिज्झिहिइ, apparently taken over from the following chapter.

धम्मपण्णत्तिं। वीसं वासाइं परियागं[1]। नाणत्तं[2]* अरुणगवे विमाणे उववाओ। महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ॥ २७१ ॥

॥ निक्खेवो ॥

उवासगदसाणं नवमं अज्झयणं समत्तं ॥

---

* Compare the rest in § 89.

---

१ E परियायं। २ Skr. नानात्वं; D E read पाउणित्ता।

दसमं अज्झयणं ॥

## ॥ दसमस्स उक्खेवो[1] ॥

एवं खलु, जम्बू, तेणं कालेणं तेणं समएणं सावत्थी नयरी[2]। कोट्ठए[3] चेइए। जियसत्तू राया ॥ २७२ ॥

तत्थ णं सावत्थीए नयरीए[2] सालिहीपिया[4] नामं गाहावई परिवसइ अड्ढे[5] दित्ते। चत्तारि हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ चत्तारि[6] हिरण्णकोडीओ

---

१ G उक्खेवओ। २ B H नगरी। ३ F कोट्ठचेइए। ४ So D E; but B सालतिपिया, F सालहिपिया (paraph. सालहीकपिया), G H लेतियापिया। ५ B F have only २ for अड्ढे दित्ते; D E om. दित्ते; G H om. both अड्ढे and दित्ते। ६ So B F in full; G only वड्ढिपउत्ताओ पवित्थरपउत्ताओ; D E H only वड्ढि पवित्थर।

वड्ढिपउत्ताओ[1] चत्तारि हिरण्णकोडीओ पवित्थरप-उत्ताओ चत्तारि वया[2] दसगोसाहस्सिएणं वएणं। फग्गुणी[3] भारिया ॥ २७३ ॥

सामो[4] समोसढे[5]। जहा* आणन्दो तहेव[6] गिहि-धम्मं पडिवज्जइ[7]। जहा† कामदेवो तहा जेट्ठं[8] पुत्तं ठवेत्ता[9] पोसहसालाए[10] समणस्स भगवओ[11] महावीरस्स[12] धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जित्ताणं विहरइ। नवरं निरु-वसग्गाओ[13] एक्कारसवि[14] उवासगपडिमाओ तहेव‡[15] भाणियव्वाओ[16]। एवं कामदेवगमेणं[17] नेयव्वं जाव§ सोहम्मे कप्पे अरुणकीले[18] विमाणे देवत्ताए उववन्ने।

---

* Supply the whole account from §§ 10-58.
† Supply the rest from §§ 66-73, and § 92.
‡ Compare §§ 70, 71; also §§ 114, 123.
§ Supply the remainder from §§ 89, 124.

---

१ E वृद्धि। २ D E व्वया। ३ G फंगुणी। ४ G om. ५ D E G समोसढो। ६ F G H तहा। ७ B D E F H जेट्ठपुत्तं। ८ F ठावेत्ता; D E ठवेइ। ९ B F G H om. १० B F G H निरुवसग्गं, D E विरुवसग्गा। ११ So H, but B F भाणियव्वा, D E भाणियव्वं; G om. १२ D E कामदेवेणं। १३ G °कीलए।

चत्तारि पलिओवमाइं[1] ठिई[2]। महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ॥ २७४॥

दसगह वि पणरसमे संवच्छरे वट्टमाणाणं चिन्ता[3]। दसगह वि वीसं वासाइं[4] समणोवासयपरियाओ*॥ २७५॥

एवं खलु, जम्बू, समणेणं जाव† सम्पत्तेणं सत्तमस्स अङ्गस्स उवासगदसाणं दसमस्स[5] अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते॥ २७६॥

---

[6]वाणियगामे चम्पा दुवे य बाणारसीए नयरीए।
आलभिया[7] य पुरवरी कम्पिल्लपुरं च बोधव्वं॥ १॥

---

* For the full account, see § 66 and § 89.

† For the rest, see footnote § on p. १.

---

१ B D E F ०ओवमा। २ B D E F place ठिई before चत्तारि। ३ D E add उववज्जा। ४ B D E वासा, F वासं। ५ F दसम, G दस। ६ The following *gāthā* verses do not occur in MSS. D E G; and MS. B has only the first five, while MS. F gives all; MS. A, which probably would have had them, unfortunately is defective at the end; the first five verses are also given in the commentary (q. v.). ७ F a आलंभिया (i. e. आलम्भिया), *c.m.*

पोलासं रायगिहं सावत्थीए[1] पुरीए दोन्नि[2] भवे ।
एए[3] उवासगाणं नयरा[4] खलु होन्ति बोधव्वा ॥ २ ॥
सिवनन्द[5]-भद्द-सामा धन्न[6]-बहुल[7]-पूस[8]-अग्गिमित्ता य।
रेवइ-अस्सिणि[9] तह फग्गुणी[10] य[11] भज्जाण नामाइं ॥३॥
आहिस्साण[12]-पिसाए माया वाहि-धण-उत्तरिज्जे य ।
भज्जा[13] य सुव्वया[14] दुव्वया[15] निरुवसग्गया दोन्नि[16] ॥४॥
अरुणे अरुणाभे खलु अरुणप्पह-अरुणकन्त-सिट्ठे य ।
अरुणज्झए[17] य छट्ठे भूय[18]-वडिंसे[19] गवे कीले ॥ ५ ॥
[20]चाली सट्ठि असीई[21] सट्ठी सट्ठी य सठि दस सहस्सा।
असिई[21] चत्ता चत्ता चए एयाण य[22] सहस्साणं ॥ ६ ॥

---

१ So a e; but B F सावत्थी om. ए, *c.m.*; the final ए of पुरीए is short *m.c.*; F inserts या after पुरीए, reading सावत्थीपुरीए या। २ B दोन्नि। ३ F एयं। ४ B नयरी। ५ F reads this verse thus: सिवनन्दा भद्दा सामा धण-बज्झला फुस्सि-अग्गिमित्ता य। रेवइ-असणि तह फगुणि इमाणि भज्जाणि नामाणि। ६ F a e धण, B धस्स। ७ B F a e बज्झला, *c.m.* ८ B पुस्सा, a e पुस्स, F फुस्सि। ९ B असिणि, F असणि, *c.m.* १० F फगुणि, e फग्गुणा। ११ B reads य भजायया नामाइं, F इमाणि भज्जाणि नामाणि। १२ B a ०न्नाण; but F ०नाण *c.m.* १३ B भजाया, F भज्जाइ for भज्जा य। १४ F सुवया। १५ B a दुव्वया य, F तह दुव्वया, e दुव्वयाइं। १६ F दुन्नि, a दोन्नि। १७ F अरुणज्झे *c.m.* १८ F चूय। १९ F वडंसे। २० The following seven verses are only found in MS. F, and some are in a very faulty condition. २१ MS. असइ। २२ MS. चउ एयाणं च *c.m.*; read चए with short *e* or चए इयाण (see Bhag., p. 406.)

[1]बारस अट्ठारस चउवीसं तिविहं अट्ठरस इ नेयं।
धन्नेण तिचोव्वीसं बारस बारस य कोडीओ ॥ ७ ॥
उल्लण-दन्तवण-फले अभिङ्गणु'व्वट्टणे[2] सणाणे य।
वत्थ-विलेवण[3]-पुप्फे आभरणं धूव-पेज्जाइ[4] ॥ ८ ॥
भक्खो[5]'यण-सूय-घए सागे माहुर-जेमण[6]-पाणे य।
तम्बोले इगवीसं आणन्दाईण[7] अभिग्गहा ॥ ९ ॥
उड्ढं[8] सोहम्मपुरे लोलूए अहे उत्तरे हिमवन्ते।
पञ्चसए तह तिदिसिं ओहिस्साणं दसगणस्स ॥ १० ॥
दंसण-वय-सामाइय[9]-पोसह-पडिमा-अबम्भ-सच्चित्त।
आरम्भ-पेस-उद्दिट्ठ[10]-वज्जए समणभूए[11] य ॥ ११ ॥

---

१ This verse reads in the MS. thus: बारट्ठारस चउवीसं तिविहमट्ठार तह इति नेयं। धणेण तिचोआलीसं बारस २ कोडीओ ॥ The second half runs in the paraph. thus: धन कोटय। सद्दाल नै ३ कोडि महसतक नै ४४ (sic) नंदणीपिता नै १२ कोडि सालहीपिता नै १० कोडि १२ (sic)! २ MS. ०णुवटणे, *c.m.* ३ MS. ०वलेवण०। ४ MS. ०पेसाइ। ५ MS. भखायण०। ६ MS. ०जमण०। ७ MS. आणन्दाइण; scansion faulty. ८ This verse in the MS. as follows: उढं सोहमसुरे लोलूए नरए तह उत्तरे हिमवंत। पंचसए तिदसा उही आयंदसयगणस्स ॥ Read *e* short in अहे and उत्तरे, *m.c.* The second half is thus explained in the paraph.: पाँच सइ योजन देखइं अवधिज्ञानइं दशे आवक नइं, i. e., 'the supernatural knowledge of the ten Shrāvaks overlooks five hundred yojanas'. ९ MS. सामाइ। १० MS. उदिट्ठ। ११ MS. ०भूइए for ०भूए य।

इक्कारस पडिमाओ[1] वीसं परियाओ[2] अणसणं मासे।
सोहम्मे चउपलिया[3] महाविदेहम्मि सिज्झिहिइ[4] ॥१२॥
॥ २७७ ॥

उवासगदसाणं[5] दसमं अज्झयणं समत्तं ॥

॥ उवासगदसाओ[6] समत्ताओ[7] ॥

---

उवासगदसाणं सत्तमस्स अङ्गस्स[8] एगो सुयखन्धो[9]। दस अज्झयणा[10] एक्कसरगा[11] दससु[12] चेव दिवसेसु उद्दिस्सन्ति[13]। तओ[14] सुयखन्धो समुद्दिस्सइ[15]। अणसाविज्जइ[16] दोसु दिवसेसु अङ्गं तहेव[17] ॥

---

१ MS. पडिमाउ। २ MS. परियाउ; read short o in परियाओ *m.c.* ३ MS. चउपलीया *c.m.* ४ M.S. सिज्झइ। ५ So B; but D E F om. उवास० दस० अज्झ० सम०। ६ So D E G; but B F om. उवास० सम०। ७ D E समत्ता। ८ B om., G अंग तउ। ९ G सुअखंधो। १० Instead of the remainder, G has only अज्झायणं संपूर्णं समाप्तं। ११ B एकारसगा, F एक्कारसगा; D E om., (see Ind. St., XVII, 316, footnote). १२ B F only दस। १३ B D E F उद्दिसंति। १४ D E om. remainder. १५ B समुद्दिसइ, F समुदिसइ। १६ B अणुणाविज्जइ, F अणुविज्जइ, H अणुसुविज्जइ। १७ F adds छइ ति (apparently Gujarātī)। इत्युपाशकसूत्रं संपूर्णम्।

LIBRARY OF THE BOMBAY BRANCH OF THE ROYAL ASIATIC SO

# ॥ सप्तमाङ्गस्य विवरणम् ॥

## प्रथममध्ययनम् ।

श्रीवर्द्धमानमानम्य व्याख्या काचिद्विधीयते ।
उपासकदशादीनां प्रायो ग्रन्थान्तरेक्षिता ॥

तत्रोपासकदशाः सप्तममङ्गम्[१] । इह चायमभिधानार्थः । उपासकानां श्रमणोपासकानां सम्बन्धिनो ऽनुष्ठानस्य प्रतिपादिका दशाध्ययनरूपा[२] उपासकदशाः । बहुवचनान्तमेतद्ग्रन्थनाम । आसां च सम्बन्धाभिधेयप्रयोजनानि नामान्वर्थसामर्थ्येनैव प्रतिपादितान्यवगन्तव्यानि[३] । तथा हि । उपासकानुष्ठानमिहाभिधेयं, तदवगमश्च श्रोतॄणामनन्तरप्रयोजनं, शास्त्रकृतां तु तत्प्रतिबोधनमेव तत्, परम्परप्रयोजनं तूभयेषामप्यपवर्गप्राप्तिरिति । सम्बन्धस्तु द्विविधः[४] शास्त्रेष्वभिधीयते । उपायोपेयभावलक्षणो गुरुपर्वक्रमलक्षणश्च । तत्रोपायोपेयभावलक्षणः शास्त्रनामान्वर्थसमर्थ्येनैवासामभिहितः । तथा हि । इदं शास्त्रमुपाय एतत्साध्योपासकानुष्ठानावगमश्चोपेयमित्युपायोपेयभावलक्षणः सम्बन्धः । गुरुपर्वक्रमलक्षणं तु सम्बन्धं[५] साक्षाद्दर्शयन्नाह ॥

॥१,२॥ तेणं कलेणं तेणं[६] समएणमित्यादि । सर्वं चेदं ज्ञाता-

---

१ c e सप्तमाङ्गम् । २ e has दशा दशाध्यनरूपा । ३ a °पादितामेव गन्त° । ४ e द्विधा । ५ c e सम्बन्धः । ६ a om. तेणं समएणं ।

धर्मकथाप्रथमाध्ययनविवरणानुसारेणानुगमनीयम्। नवरं आणन्दे-त्यादिरूपकम्॥ तत्रानन्दाभिधानोपासकवक्तव्यताप्रतिबद्धमध्ययन-मानन्द एवाभिधीयते। एवं सर्वत्र॥ गाहावइ त्ति गृहपतिर्ऋधि-मद्विशेषः कुण्डकोलिए-त्ति-रूपान्तः[१]॥

॥४॥ प्रविस्तरो धनधान्यद्विपदचतुष्पदादिविभूतिविस्तरः॥ व्रजा[२] गोकुलानि। दशगोसाहस्रिकेण गोसहस्रदशकपरिमाणेनेत्यर्थः॥

॥१३॥ तप्पढमयाए त्ति तेषामणुव्रतादीनां[३] प्रथमं तत्प्रथमं, तद्भावस्तत्प्रथमता, तया॥ थूलगं ति त्रसविषयम्॥ जावज्जीवाए त्ति यावती चासौ जीवा च प्राणधारणं यावज्जीवा। यावान्वा जीवः प्राणधारणं यास्यां प्रतिज्ञायां सा यावज्जीवा, तया॥ दुविहं ति करणकारणभेदेन द्विविधं प्राणातिपातम्॥ तिविहेणं ति मनःप्रभृतिना करणेन॥ कायस त्ति सकारस्यागमिकत्वात्काये-नेत्यर्थः। न करोमीत्यादिनैतदेव व्यक्तीकृतम्॥

॥१४॥ स्थूलमृषावादस्तीव्रसंक्लेशात्तीव्रस्यैव संक्लेशस्योत्पादकः[४]॥

॥१५॥ स्थूलकमदत्तादानं चौर इति व्यपदेशनिबन्धनम्॥

॥१६॥ स्वदारैः सन्तोषः स्वदारसन्तोषः। स एव स्वदार-सन्तोषिकः, स्वदारसन्तोषिर्वा[५] स्वदारसन्तुष्टिः। तत्र परिमाणं बहुभिर्दारैरुपजायमानस्य सङ्क्षेपकरणं कथम्। नन्नत्थेति[६] न मैथुन-माचरामि अन्यत्र एकस्याः स्त्रियाः, किमभिधानायाः शिवनन्दायाः,

---

१ c e read त्तिरूपकं ततः। २ a c e व्रजाः। ३ c e अनुव्रतादीनां। ४ c e ०पादकम्। ५ c e सन्तोषो वा। ६ e नथेति।

किम्भूताया भार्यायाः। स्वस्येति गम्यते। एतदेव स्पष्टयन्नाह अवशेषं तद्वर्जं। मैथुनविधिं तत्प्रकारं तत्कारणं वा। वृद्धव्याख्या तु नन्नत्थ[1] त्ति, अन्यत्र तां वर्जयित्वेत्यर्थः॥

॥१७॥ हिरण्णं[2] ति रजतम्। सुवर्णं प्रतीतम्। विधिः प्रकारः। नन्नत्थ[3] त्ति ननैव करोमीच्छां हिरण्यादौ, अन्यत्र चतसृभ्यो हिरण्यकोटीभ्यः, ता[4] वर्जयित्वेत्यर्थः। अवसेसं ति शेषं तदतिरिक्तमित्येवं सर्वत्रावसेयम्॥

॥१९॥ खेत्तवत्थु त्ति इह क्षेत्रमेव वस्तु क्षेत्रवस्तु[5]। ग्रन्थान्तरे तु क्षेत्रं च वास्तु च गृहं क्षेत्रवास्तु इति व्याख्यायते॥ नियत्तणसइएणं ति निवर्त्तनं भूमिपरिमाणविशेषो देशविशेषप्रसिद्धः, ततो निवर्त्तनशतं कर्षणीयत्वेन यस्यास्ति तन्निवर्त्तनशतिकं[6], तेन॥

॥२०॥ दिसायत्तिएहिं[7] ति दिग्यात्रा देशान्तरगमनं प्रयोजनं येषां तानि दिग्यात्रिकानि, तेभ्यो ऽन्यत्र॥ संवाहणिएहिं[8] ति संवाहनं[8] क्षेत्रादिभ्यस्तृणकाष्ठधान्यादेर्गृहादावानयनं, तत्प्रयोजनानि सांवाहनिकानि,[9] तेभ्यो ऽन्यत्र॥

॥२१॥ वाहणेहिं[10] ति यानपात्रेभ्यः॥

॥२२॥ उवभोगपरिभोग त्ति उपभुज्यते पौनःपुन्येन सेव्यत इत्युपभोगो भवनवसनवनितादिः। परिभुज्यते सकृदासेव्यत इति परिभोग आहारकुसुमविलेपनादिव्यत्ययो[11] व्याख्येय[12] इति॥ उल्लणिय[13] त्ति

---

१ e णण्णत्थेति। २ a हिरन्नं। ३ c नन्नत्थं ति, e णण्णत्थेति। ४ c e तां। ५ c om. ६ ०शतकं। ७ a e दिसाजत्तिएहिं। ८ a c e संवह०। ९ a सांवहनिकानि, c संवहनिकानि। १० a वहणेहिं। ११ e ०विलेपनादिर्व्यत्ययो। १२ a वा व्याख्ये। १३ a उल्लिणिग, c उल्लणिग, e उल्लिणग।

स्नानजलार्द्रशरीरस्य जललूषणवस्त्रं ॥ गन्धकासाईए त्ति गन्धप्रधाना कषायेण रक्ता शाटिका गन्धकाषायी, तस्याः ॥

॥ २३ ॥ दन्तवण त्ति दन्तपावनं दन्तमलापकर्षणकाष्ठम् ॥ अल्लट्ठीमहुएणं ति आर्द्रेण यष्टीमधुना मधुररसवनस्पतिविशेषेण ॥

॥ २४ ॥ खीरमलएणं ति अबद्धास्थिकं क्षीरमिव मधुरं वा यदामलकं तस्मादन्यत्र ॥

॥ २५ ॥ सयपागसहस्सपागेहिं[1] ति द्रव्यशतस्य क्वाथशतेन सह यत्पच्यते, कार्षापणशतेन वा, तच्छतपाकम्। एवं सहस्रपाकमपि ॥

॥ २६ ॥ गन्धट्टएणं[2] ति गन्धद्रव्याणामुपलकुष्टादीनाम्, अट्टओ[3] त्ति चूर्णं, गोधूमचूर्णं वा गन्धयुक्तम्, तस्मादन्यत्र ॥

॥ २७ ॥ उट्टिएहिं उदगस्स घडएहिं ति उष्ट्रिका वृहन्मृन्मय-भाण्डं, तत्पूरणप्रयोजना ये घटास्त[4] उष्ट्रिका उचितप्रमाणा नाति-लघवो महान्तो वेत्यर्थः ॥ इह च सर्वत्रान्यत्रेति शब्दप्रयोगे ऽपि प्राकृतत्वात्पञ्चम्यर्थे तृतीया द्रष्टव्येति ॥

॥ २८ ॥ खोमजुयलेणं ति कार्पासिकवस्त्रयुगलादन्यत्र ॥

॥ २९ ॥ अगरु[5] त्ति अगुरुर्गन्धद्रव्यविशेषः ॥

॥ ३० ॥ सुद्धपउमेणं ति कुसुमान्तरवियुतं पुण्डरीकं वा शुद्ध-पद्मं, ततो ऽन्यत्र ॥ मालइकुसुमदाम त्ति[6] जातिपुष्पमाला[7] ॥

॥ ३१ ॥ मट्ठकण्णेज्जएहिं[8] ति मृष्टाभ्यामचित्रवद्भ्यां कर्णाभरण-

---

१ a ०पागेणं ति। २ c गन्धव्वट्टएणं, e गन्धबट्टएणं। ३ c e ०कुष्टादीनामु[illegible] चर्णं। ४ a c e घटास्ते उ०। ५ a c e अगुरु। ६ a c e मालती०। ७ a ०पु[illegible] ८ a ०कन्नेज्जयेहिं, c e कन्नेज्जएहिं।

विशेषाभ्याम् ॥ नामसुद्द त्ति नामाङ्किता मुद्रा अङ्गुलीयकं नाम-मुद्रा ॥

॥ ३२ ॥ तुरुक्कधूव[1] त्ति सेल्हकलक्षणो[2] धूपः ॥

॥ ३३ ॥ पेच्चविहिं ति पेयाहारप्रकारम् ॥ कट्ठपेज्ज[3] त्ति मुद्गादियूषो घृततलितत[4]ण्डुलपेया[5] वा ॥

॥ ३४ ॥ भक्ख त्ति खरविशदमभ्यवहार्यं[6] भक्तमित्यन्यत्र[7] रूढम्, इह सुपक्वान्नमात्रं[8] तद्विवक्षितम् ॥ घयपुण्ण[9] त्ति घृतपूराः प्रसिद्धाः ॥ खण्डखज्ज त्ति खण्डलिप्तानि खाद्यानि अशोकवर्त्तयः खण्डखाद्यानि ॥

॥ ३५ ॥ ओदण[10] त्ति ओदनः कूरं ॥ कलमसालि[11] त्ति पूर्व-देशप्रसिद्धः ॥

॥ ३६ ॥ सूव[12] त्ति सूपः कूरस्य द्वितीयाशनं प्रसिद्ध एव ॥ कलायसूवे त्ति कलायाश्चणकाकारा[13] धान्यविशेषा मुद्गाश्च प्रसिद्धाः ॥

॥ ३७ ॥ सारइएणं[14] गोघयमण्डेणं ति शारदिकेन शरत्कालो-त्पन्नेन गोघृतमण्डेन गोघृतसारेण ॥

॥ ३८ ॥ साग[15] त्ति शाको वस्तुलादिः ॥ चूचुसाए[15] त्ति चूचु-शाकः[15] । सौवस्तिक शाको मण्डूकिकाशाकश्च लोकप्रसिद्धा एव ॥

---

१ a तुरक्क० २ Commonly spelt सिल्हक,=सल्लकी or शल्लकी । ३ c e कट्ठपेज्जं । ४ c e ०तलितः त०, a c e ०तन्दुल० । ५ c अव्यवहार्यं । ६ c भक्तमन्यच, e भक्तमित्यच । ७ e om. सु । ८ a ०पुन्न । ९ a c e ओयण । १० c e कलिम० । ११ a c e सूय । १२ a चणकारो, c चनकाकारो । १३ c सारदिएणं । १४ a e शाकं ति, c शाक ति १५ e चूचू०, c भूभ० । after this c e insert तुम्बसाए त्ति तुम्बशाकः ।

॥ ३९ ॥ माऊरय त्ति अनक्षरमानि शालनकानि ॥ पालङ्क[1] त्ति वल्लीफलविशेषः ॥

॥ ४० ॥ जेमण[2] त्ति जेमनानि[3] वटकपूरणादीनि ॥ सेधंतदालियंसेधिं ति सेधे सिद्धौ[4] सति यानि अक्षेन तीमनादिना संस्क्रियन्ते, तानि सेधाम्बानि। यानि दाल्या मुद्गादिमय्या[5] निष्पादितानि अम्बानि च, तानि दालिकाम्बानीति सम्भाव्यन्ते ॥

॥ ४१ ॥ अन्तलिक्खोदयं ति यज्जलमाकाशात्पतति तदेव[6] गृह्यते, तदन्तरिक्षोदकम् ॥

॥ ४२ ॥ पञ्चसोगन्धिएणं ति पञ्चभिः एलालवङ्गकर्पूरकक्कोलजातीफललक्षणैः[7] सुगन्धिभिर्द्रव्यैरभिसंस्कृतं पञ्चसौगन्धिकम् ॥

॥ ४३ ॥ अनट्ठा दण्डं ति अनर्थेन धर्मार्थकामव्यतिरेकेण दण्डो ऽनर्थदण्डः ॥ अवज्झाणायरियं[8] ति अपध्यानमार्त्तरौद्ररूपं, तेनाचरित आसेवितो यो ऽनर्थदण्डः स, तथा तं। एवं प्रमादचरितमपि, नवरं प्रमादो विकथारूपो[9] ऽभ्यगिततैलभाजनधरणादिरूपो वा ॥ हिंसं हिंसाकारिशस्त्रादि, तत्प्रदानं परेषां समर्पणम् ॥ पापकर्मोपदेशः "चेचाणि क्षपत" इत्यादिरूपः[10] ॥

॥ ४४ ॥ आणन्दा इ त्ति हे आनन्द इत्येवंप्रकारेणामन्त्रणवचनेन श्रमणो भगवान्महावीर आनन्दमेवमवादीदिति। एतदेवाह एवं खलु आणन्देत्यादि ॥ अइयारा पेयाल त्ति अतिचारा[11]

---

१ e a पालङ्क, c पालक्क। २ a om., c जेमण। ३ c वेमणानि। ४ c om., e सिधे। ५ e मुद्गादिमय्यानि, c मुद्गादितानि om. दिमय्या निष्पा। ६ a ०पतति नेदयं, e ०पतदेव। ७ e ०कङ्कोल०। ८ c e णारियं। ९ a c e रूपः अस्य०। १० c क्षपन्त्येत्या०। ११ e अतिचारो।

मिथ्यात्वमोहनीयोदयविशेषादात्मनो ऽशुभाः परिणामविशेषा ये सम्यक्त्वमतिचरन्ति[1] ते चानेकप्रकारा गुणिनामुपबृंहादयः। ततस्तेषां मध्ये पेयाल त्ति सारा: प्रधानाः स्थूलत्वेन शक्यव्यपदेशत्वाद्ये ते॥ तथा तत्र शङ्का संशयकरणम्। काङ्क्षा अन्यान्यदर्शनग्रहः। विचिकित्सा फलं प्रति शङ्का, विद्वज्जुगुप्सा वा साधूनां जात्यादिहीलनेति। परपाषण्डाः परदर्शनिनस्तेषां प्रशंसा गुणोत्कीर्त्तनम्। परपाषण्डसंस्तवस्तत्परिचयः॥

॥४५॥ तथा बन्धे त्ति बन्धो द्विपदादीनां रज्ज्वादिना संयमनम्॥ वहे त्ति वधो यष्ट्यादिभिस्ताडनम्। छविच्छेए[2] त्ति शरीरावयवच्छेदः॥ अइभारे त्ति अतिभारारोपणं तथाविधशक्तिविकलानां महाभारारोपणम्॥ भत्तपाणवोच्छेए[3] त्ति अशनपानौघाप्रदानम्॥ दृहायं विभागः पूज्यैरुक्तः।

बन्धवहं छविछेदं अइभारं भत्तपाणवोच्छेयम्।
कोहा व दूसियमणो गोमणुयाईण णो कुज्जा॥

तथा।

न मारयामीति कृतव्रतस्य विनैव मृत्यु क दृहातिचारः।
निगद्यते[4], यः कुपितः करोति व्रते ऽनपेक्षस्तदसौ व्रती स्यात्॥
कायेन भग्नं न ततो व्रतं[5] स्यात्कोपाद्यहीनतया तु भग्नम्।

---

१ a यैः स० अतिचरति, c यैः स० अतिचरन्ति, e यैः स० विभवत्यतिचरन्ति। २ a ०च्छेदे त्ति, c e ०च्छेद त्ति। ३ a ०वोच्छेदे त्ति। ४ c reads निगद्यते यत्कुपितो वधान् (वधानः ?) करोत्यसौ स्यान्नियमानपेक्षः॥ मृत्योरभावान्नियमोऽस्ति नस्य कोपाद्यहीनतया तु भग्नम्। तद्देशस्याभङ्गोदनुपालनाच (तद्देशभङ्गादनु०) पञ्च अतिचारमुदाहरन्ति। ७ e व्रती।

तद्देशभङ्गादतिचार दृष्टः, सर्वत्र योज्यः क्रम एष, धीमन् ॥ इति ॥

॥ ४६ ॥ सहसा[1] अब्भक्खाणे त्ति सहसा अनालोच्याभ्याख्यानमसद्दोषाध्यारोपणं सहसाभ्याख्यानं, यथा "चौरस्त्वम्" इत्यादि। एतस्य चातिचारत्वं सहसाकारेणैव, न तीव्रसंक्लेशेन भणनादिति ॥ १ ॥ रहसा अब्भक्खाणे त्ति रह एकान्तस्तेन हेतुनाभ्याख्यानं रहो ऽभ्याख्यानम्। एतदुक्तं भवति रहसि मन्त्रयमाणानाम्। वक्ति "एते ह्येदं चेदं च राजापकारादि मन्त्रयन्ते[2]" इति। एतस्य चातिचारत्वमनाभोगभणनात्। एकान्तमात्रोपधितया च पूर्वस्माद्विशेषः[3]। अथवा सम्भाव्यमानार्थभणनादतिचारो न तु भङ्गो ऽयमिति ॥ २ ॥ सदारमन्तभेए[4] त्ति स्वदारसम्बन्धिनो मन्त्रस्य विश्रम्भजल्पस्य भेदः प्रकाशनं स्वदारमन्त्रभेदः। एतस्य चातिचारत्वं सत्यभणने ऽपि कलचोक्ताप्रकाशनीयप्रकाशनेन[5] लज्जादिभिर्मरणाद्यनर्थपरम्परासम्भवात्परमार्थतो[6] ऽसत्यत्वात्तस्येति ॥ ३ ॥ मोसोवएसे त्ति मृषोपदेशः परेषामसत्योपदेशः। सहसाकारानाभोगादिना व्याजेन वा, यथा "अस्माभिस्तदिदमिदं वासत्यमभिधाय परो विजितः" इत्येवंवार्त्ताकथनेन परेषामसत्यवचनव्युत्पादनमतिचारः साक्षात्कारेणासत्ये ऽप्रवर्त्तनादिति[7] ॥ ४ ॥ कूडलेहकरणे त्ति असद्भूतार्थस्य लेखस्य विधानमित्यर्थः। एतस्य चातिचारत्वं प्रमादादिना

---

१ c सहस्सा। २ ce मन्त्रयते। ३ c पूर्वस्मादिति विशेषः। ४ ace भेद। ५ e कलचे क्तीप्र०। ६ a ०सम्भवत्०। ७ a ०सत्ये अप्रवर्त्तनादिति, c e ०सत्ये प्रवर्त्तनादिति।

दुर्विवेकत्वेन[१], "मया मृषावादः प्रत्याख्यातो, ऽयं तु कूटलेखो[२], न मृषावादनम्" इति भावयत इति ॥ ५ ॥ वाचनान्तरे तु कन्या-स्त्रियं गवाश्वित्रं भूम्यालियं न्यासापहारे कूटसक्ष्ये सन्धिकरणे त्ति पठ्यते। आवश्यकादौ पुनरिमे स्थूलमृषावादभेदा उक्ताः। ततो ऽयमर्थः सम्भाव्यते। एत[३] एव प्रमादमहसाकारानाभोगैरभिधीयमाना मृषावादविरतेरतिचारा[४], भवन्त्या कुथ्या च भङ्गा इति। एतेषां चेदं स्वरूपम्। कन्या अपरिणीता स्त्री, तदर्थमलीकं कन्यालीकम्। तेन वा[५] लोके ऽतिगर्हितत्वादिहोपात्तेन सर्वत्र मनुष्यजातिविषयमलीकमुपलक्षितम्। एवं गवालीकमपि चतुष्पदजात्यलीकोपलक्षणम्। भूम्यलीकमपादानां[६] सचेतनाचेतनवस्तूनामलीकस्योपलक्षणम्। न्यासो द्रव्यस्य निक्षेपः परैः समर्पितं द्रव्यमित्यर्थस्तस्यापहारो ऽपलपनं न्यासापहारः। तथा कूटमसद्भूतमसत्यार्थसंवादनेन साक्ष्यं साक्षिकर्म कूटसाक्ष्यं, कस्मिन्नित्याह सन्धिकरणे द्वयोर्विवदमानयोः सन्धानकरणे विवादच्छेद इत्यर्थः। इह च न्यासापहारादिद्वयस्य आद्यत्रयान्तर्भावे[७] ऽपि प्रधानविवक्षयापक्षवसाक्षिदानक्रिययोर्भेदेनोपादानं[८] द्रष्टव्यमिति ॥

॥ ४७ ॥ तेणाहडे त्ति स्तेनाहृतं[९] चौरानीतं, तत्समर्थ्य[१०] मितिलोभात्काणक्रयेण गृह्णतो ऽतिचरति तृतीयव्रतमित्यतिचारहेतु-

---

१ c adds वा after it. २ a c कूटलेखे। ३ a एते, c e एतद्। ४ a °विरतिर्°। ५ e तत्तु for तेन वा। ६ c °लीकोपादानं, e °लीकमपादानं। ७ c आदि°। ८ a अपह्नुव°। ९ a c e तेनाहृतं। १० c तत्सर्वमिति-लोभात्, e तत्सामर्थ्यमितिलोभात्।

त्वात्स्तेनाहृतमतिचार उक्तम्[१]। अतिचारता चास्य साक्षाच्चौर्यप्रवृत्तेः[२] ॥ १ ॥ तक्करप्पओगे[३] त्ति तस्करप्रयोगश्चौरव्यापारणं[४], "हरत यूयम" इत्येवमभ्यनुज्ञानमित्यर्थः[५]। अस्याप्यतिचारतानाभोगादिभिरिति ॥ २ ॥ विरुद्धरज्जाइक्कमे त्ति विरुद्धनृपयो राज्यं विरुद्धराज्यं, तस्यातिक्रमोऽतिलङ्घनं[६] विरुद्धराज्यातिक्रमः। न हि ताभ्यां तत्रातिक्रमोऽनुज्ञातश्चौर्यबुद्धिरपि तस्य तत्र नास्तीत्यतिचारतास्यानाभोगादिना[७] चेति ॥ ३ ॥ कूडतुलकूडमाणे[८] त्ति तुला प्रतीता, मानं कुडवादि[९], कूटत्वं न्यूनाधिकत्वम्। ताभ्यां न्यूनाभ्यां ददतोऽधिकाभ्यां गृह्णतोऽतिचरति व्रतमित्यतिचारहेतुत्वादतिचारः कूटतुलाकूटमानमुक्तम्[१०]। अतिचारत्वं चास्यानाभोगादेः, अथवा "नाहं चौरः खननादेरकरणाद्[११]" इत्यभिप्रायेण व्रतसापेक्षत्वात् ॥ ४ ॥ तप्पडिरूवगववहारे[१२] त्ति तेनाधिकृतेन[१३] प्रतिरूपकं सदृशं तत्प्रतिरूपकं, तस्य विविधमवहरणं[१४] व्यवहारः प्रक्षेपस्तत्प्रतिरूपकव्यवहारः। यद्यत्र घटते व्रीहिघृतादिषु पलञ्जीवसादि[१५] तस्य प्रक्षेप इति यावत्, तत्प्रतिरूपकेण वा वसादिना[१६] व्यवहरणं तत्प्रतिरूपकव्यवहारः। अतिचारता चास्य पूर्ववत् ॥ ५ ॥

॥ ४८ ॥ सदारसन्तोसीए[१७] त्ति स्वदारसन्तुष्टेरित्यर्थः॥ इत्तरियपरिग्गहियागमणे[१८] त्ति इत्वरकालपरिगृहीता, कालशब्दलोपादि-

---

१ a om. अतिचार उक्तः c e उक्तः। २ a चौर्यप्रवृत्तेः। ३ a c e तक्करपयोग त्ति। ४ c e तस्करः प्र०। ५ a ०र्थो ऽस्या०, c ०र्थो सा०, e ०र्थे सा०। ६ c अभिलङ्घनं। ७ c e ०अतिचारता तस्या०। ८ a कूडतुलकूडमाणे, e कूडतुले कूडमाणे। ९ c कुंडवादि। १० a c e कूडतुलाकूडमानम्। ११ c e चाच०। १२ e om. अधिकृतेन। १३ e विवधम्। १४ a c e ०वशादि। १५ c e वशादिना। १६ a c e ०सन्तोसिय त्ति। १७ a इत्तरिय०।

स्वपरिग्रहीता, भाटीप्रदानेन कियन्तमपि कालं दिवसमासादिकं स्ववशीकृतेत्यर्थः, तस्यां गमनं मैथुनासेवनमित्वरपरिग्रहीतागमनम्। अतिचारता चास्यातिक्रमादिभिः ॥ १ ॥ अपरिग्रहियागमणे त्ति अपरिग्रहीता नाम वेश्यान्यसत्कापरिग्रहीतभाटिका[1] कुलाङ्गना वा अनाथेति। अस्याप्यतिचारतातिक्रमादिभिरेव ॥ २ ॥ अणङ्गकीड[2] त्ति अनङ्गानि मैथुनकर्मापेक्षया कुचकुचोरुवदनादीनि, तेषु क्रीडनमनङ्गक्रीडा। अतिचारता चास्य स्वदारेभ्यो ऽन्यत्र मैथुनपरिहारेणानुरागादालिङ्गनादि विदधतो व्रतमालिन्यादिति ॥ ३ ॥ परविवाहकरणे[3] त्ति परेषामात्मन[4] आत्मीयापत्येभ्यश्च व्यतिरिक्तानां विवाहकरणं परविवाहकरणम्। अयमभिप्रायः। स्वदारसन्तोषिणो हि न युक्तः[5] परेषां विवाहादिकरणेन मैथुननियोगोऽनर्थको विशिष्टविरतियुक्तत्वादित्येवमनाकलयतः परार्थकरणोद्यततयातिचारोऽयमिति ॥ ४ ॥ कामभोगा[6] तिव्वाभिलासे त्ति कामो शब्दरूपे[7], भोगा गन्धरसस्पर्शास्तेषु तीव्राभिलाषो ऽत्यन्तं तदध्यवसायित्वं कामभोगतीव्राभिलाषः। अयमभिप्रायः। स्वदारसन्तोषी हि विशिष्टविरतिमान्, तेन च तावत्येव[8] मैथुनासेवा[9] कर्तुमुचिता यावत्या वेदजनिता[10] बाधोपशाम्यति। यस्तु वाजिकरणादिभिः कामशास्त्रविहितप्रयोगैश्च तामधिकामुत्पाद्य सततं सुरतसुखमिच्छति, स मैथुनविरतिव्रतं परमार्थतो मलिनयति। को हि नाम सकर्णकः

---

१ वैश्या° ; a °आन्यसत्का°, e आन्यारुत्ता° ; i. e. वेश्यानि असत्का अपरि° २ a c e अनङ्गकीड त्ति। ३ a c °वीवाह°। ४ a आतान, e आत्मान। ५ e युक्तं (scl. परविवाहकरणम्) ; a c युक्तः (scl. मैथुननियोगः)। ६ a c e कामभोगतिव्वभिलासे। ७ c e शब्दरूपौ। ८ c e तावत्येव। ९ c e only मैथुनकर्तुं om. आ°वा। १० c तेद्जनितबाधो ऽपशाम्यति।

पामासुत्पाद्याग्निसेवाजनितसुखं वाञ्छेदिति। अतिचारत्वं कामभोग-तीव्राभिलाषस्येति ॥ ५ ॥

॥ ४९ ॥ खेत्तवत्थुपमाणाइक्कमे[1] त्ति क्षेत्रवस्तुनः प्रमाणातिक्रमः। प्रत्याख्यानकालगृहीतमानोल्लङ्घनमित्यर्थः। एतस्य चातिचारत्वमनाभोगादिनातिक्रमादिना वा। अथवा एकक्षेत्रादिपरिमानकर्तुस्तदन्यक्षेत्रस्य वृत्तिप्रभृतिसीमापनयनेन पूर्वक्षेत्रे[2] योजनात्क्षेत्रप्रमाणातिक्रमः। अतिचार एव व्रतसापेक्षत्वात्तस्येति[3] ॥ १ ॥ हिरण्णसुवण्णपमाणाइक्कमे त्ति प्राग्वत्। अथवा राजादेः सकाशाल्लब्धं[4] हिरण्याद्यभिग्रहावधिं[5] यावदन्यस्मै[6] प्रयच्छतः[7] "पुनरवधिपूर्त्तौ ग्रहीष्यामि" इत्यवसायवतो ऽयमतिचारस्तथैवेति ॥ २ ॥ धणधन्नपमाणाइक्कमे त्ति अनाभोगादेः। अथवा लभ्यमानं धनाद्यभिग्रहावधिं यावत्परगृह[8] एव बन्धनबद्धं कृत्वा धारयतो ऽतिचारो ऽयमिति ॥ ३ ॥ दुपयचउप्पयपमाणाइक्कमे त्ति अयमपि तथैव। अथवा गोवडवादिचतुष्पदयोषित्सु यथा अभिग्रहकालावधिपूर्त्तौ[9] प्रमाणाधिकवत्सादिचतुष्पदोत्पत्तिर्भवति, तथा खण्डादिकं प्रक्षिपतो ऽतिचारो ऽयम्। तेन हि। जातमेव वत्सादिकमपेक्ष्य[10] प्रमाणातिक्रमस्य परिहृतत्वाद्भङ्गतापेक्षया तस्य सम्पन्नत्वादिति ॥ ४ ॥ कुवियपमाणाइक्कमे त्ति कुप्यं गृहोपस्करः[11] थालकचोलकादि[12]। अयं चातिचारो ऽनाभोगा-

---

१ a e °प्पमना°, c °परिमाणा°। २ c e पूर्वक्षेत्रयोजनात्। ३ c अस्य for तस्य। ४ c e °लब्धहि°। ५ a अवधि, c अवधेर्, e अवधिर्। ६ e अन्यस्मिन्। ७ c प्रयच्छति। ८ a c e °गेह। ९ c °कालावधेः। १० a c अपेक्ष। ११ e गृहोपस्करं। १२ a थालक°; the words are modern; *thāla* (Skr. *sthāla*) is a large, and *kacholā* (or *kancholā*, Marāṭhī *kacholē*) is a small metal vessel.

दिना। अथवा पञ्चैव स्थालानि परिगृहीतव्यानीत्याद्यभिग्रहवतः कस्याप्यधिकतराणां तेषां सम्पत्तौ प्रत्येकं द्वयादिमेलनेन[1] पूर्वसङ्ख्यावस्थापनेनातिचारो ऽयमिति ॥ ५ ॥ आह च ।

१ २ ३ ४ ५
खेत्ताइहिरण्णाईधणाइदुपयाइकुप्पमाणकमे[2]।
१ २ ३ ४ ५
जोयणपयाणबन्धणकारणभावेहि नो कुज्जा ॥

॥ ५० ॥ दिग्व्रतं शिक्षाव्रतानि च यद्यपि पूर्वं नोक्तानि, तथापि तच्च तानि द्रष्टव्यानि। अतिचारभणनस्यान्यथा निरवकाशता स्यादिहेति। कथमन्यथा प्रागुक्तं "दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जिस्सामि" इति, कथं वा वक्ष्यति "दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जइ" इति[3]। अथवा सामायिकादीनामित्वरकालीनत्वेन प्रतिनियतकालकरणीयत्वान्न तदैव तान्यसौ प्रतिपन्नवान्, दिग्व्रतं च विरतेरभावाद्, उचितावसरे तु प्रतिपत्स्यत[4] इति। भगवतस्त्वतिचारवर्जनोपदेशनमुपपन्नं, यच्च वक्ष्यति "द्वादशविधं श्रावकधर्मं प्रतिपद्यते", तद्यथाकालं तत्करणाभ्युपगमनादनवद्यमवसेयमिति ॥ तच्च उड्ढदिसिपमाणाइक्कमे त्ति[5] क्वचिदेवं पाठः, क्वचित्तु उड्ढदिसाइक्कमे त्ति ॥ एते चोर्ध्वदिगाद्यतिक्रमा अनाभोगादिनातिचारतयावसेयाः ॥ १-३ ॥ खेत्तवुड्ढि त्ति एकतो योजनशतपरिमाणमभिगृहीतमन्यतो दशयोजनान्यभिगृहीतानि, ततश्च यस्यां दिशि दशयोजनानि तस्यां दिशि समुत्पन्ने कार्ये योजनशतमध्यादपनीयान्यानि

---

१ a c e मीलनेन। २ a c खेत्तादि, धणादि, दुपयादि। ३ a c e त्ति। ४ a c e प्रतिपत्स्यते। ५ a om.

दशयोजनानि तत्रैव स्वबुध्या प्रक्षिपति संवर्धयत्येकत इत्यर्थः। अयं चातिचारो व्रतसापेक्षत्वादवसेयः ॥ ४ ॥ सइअन्तरद्ध त्ति स्मृत्यन्तर्धा[१] स्मृत्यन्तर्धानं[२] स्मृतिभ्रंशः। "किं मया व्रतं गृहीतं, शतमर्यादया[३] पञ्चाशन्मर्यादया वा" इत्येवमस्मरणे योजनशतमर्यादायामपि पञ्चाशतमतिक्रामतो ऽयमतिचारो ऽवसेय इति ॥ ५ ॥

॥ ५१ ॥ भोयणओ कम्मओ य त्ति भोजनतो[४] भोजनमाश्रित्य वाह्याभ्यन्तरभोजनीयवस्तून्यपेक्ष्येत्यर्थः[५]। कर्मतः क्रीयां जीवनवृत्तिं वाह्याभ्यन्तरभोजनीयवस्तुप्राप्तिनिमित्तभूतामाश्रित्येत्यर्थः ॥ सचित्ताहारे त्ति सचेतनाहारः पृथिव्यप्कायवनस्पतिजीवशरीराणां सचेतनानामभ्यवहरणमित्यर्थः। अयं चातिचारः कृतसचित्ताहारप्रत्याख्यानस्य कृततत्परिमाणस्य वानाभोगादिना प्रत्याख्यातं सचेतनं भक्षयतस्तद्वा प्रतीत्यातिक्रमादौ वर्तमानस्य ॥ १ ॥ सचित्तपडिबद्धाहारे त्ति सचित्ते वृक्षादौ प्रतिबद्धस्य गुन्दादेरभ्यवहरणम्। अथवा सचित्ते ऽस्थिके प्रतिबद्धं यत्पक्वमचेतनं खर्जूरफलादि तस्य "सास्थिकस्य कटाहमचेतनं भक्षयिष्यामीतरत्परिहरिष्यामि" इति भावनया मुखक्षेपणमिति। एतस्य चातिचारत्वं व्रतसापेक्षत्वादिति ॥ २ ॥ अपउलिओसहिभक्खणय त्ति[६] अपक्वाया[७] अग्निनासंस्कृताया ओषधेः[८] शाल्यादिकाया भक्षणता भोजनमित्यर्थः। अस्याप्यतिचारतानाभोगादिनैव, न तु सचित्ताहारातिचारेणैव। अस्य सङ्गृहीतत्वात्किं भेदोपादानेनेति।

---

१ e om. २ a om. ३ e adds वा after it. ४ e om. ५ c अपेक्षयेति। ६ e अपक्वोसहि०। ७ The reading of e is utterly corrupt here. ८ e औषधेः।

उच्यते, पूर्वोक्तपृथिव्यादिसचित्तसामान्यापेक्षया, ओषधीनां सदाभ्यवहरणत्वेन प्राधान्यख्यापनार्थं, दृश्यते च सामान्योपादाने सत्यपि प्राधान्यापेक्षया विशेषोपादानमिति ॥ २ ॥ दुप्पउलिओसहिभक्खणया[1] दुःपक्का अखिन्ना[2] ओषधयस्तद्भक्षणता। अतिचारता चास्य पक्वबुध्या भक्षयतः ॥ ३ ॥ तुच्छोसहिभक्खणय त्ति तुच्छा असारा ओषधयो ऽनिष्पन्नमुद्गफलीप्रभृतयः। तद्भक्षणे हि महती विराधना स्वल्पा च तत्कार्यदग्निरिति। विवेकिनाचित्ताग्निना ता[3] अचित्तीकृत्य न भक्षणीया भवन्ति। तत्करणेनापि भक्षणे ऽतिचारो भवति व्रतसापेक्षत्वात्तस्येति ॥ ५ ॥ इह च पञ्चातिचारा इत्युपलक्षणमात्रमेवावसेयं, यतो मधुमद्यमांसरात्रिभोजनादिव्रतिनामनाभोगातिक्रमादिभिरनेके ते[4] सम्भवन्तीति ॥ कम्मओ णं इत्यादि कर्मतो यदुपभोगव्रतं[5] "खरकर्मादिकं कर्म प्रत्याख्यामि" इत्येवंरूपं, तत्र श्रमणोपासकेन पञ्चदशकर्मादानानि वर्जनीयानि ॥ इङ्गालकम्मे त्ति अङ्गारकरणपूर्वकस्तद्विक्रय एवं यदन्यदपि वह्निसमारम्भपूर्वकं जीवनमिष्टकाभाण्डकादिपाकरूपं तदङ्गारकर्मेति ग्राह्यं समानस्वभावत्वात्। अतिचारता चास्य कृतैतत्प्रत्याख्यानस्यानाभोगादिना, अत्रैव वर्त्तनादिति। एवं सर्वत्र भावना कार्या ॥ १ ॥ नवरं वनकर्म वनस्पतिच्छेदनपूर्वकं तद्विक्रयजीवनम् ॥ २ ॥ शकटकर्म शकटानां घटनविक्रयवाहनरूपम् ॥ ३ ॥ भाटककर्म मूल्यार्थं गन्त्र्यादिभिः

---

१ e दुपक्कोसहि०। २ c अचित्ता, e अग्निना अचित्ता। ३ a e om. ४ e om. ५ So c; but a उपभोगपरिभोगव्रतं, e उपरिभोगव्रतं। ६ See note 66 in the Translation.

परकीयभाण्डवहनम् ॥ ४ ॥ स्फोटकर्म कुद्दालहलादिभिर्भूमिदारणेन जीवनम् ॥ ५ ॥ दन्तवाणिज्यं[1] हस्तिदन्तशङ्खपूतिकेशादीनां तत्कर्मकारिभ्यः क्रयेण तद्विक्रयपूर्वकं जीवनम् ॥ ६ ॥ लाक्षावाणिज्यं[1] सञ्जातजीवद्रव्यान्तरविक्रयोपलक्षणम् ॥ ७ ॥ रसवाणिज्यं[1] सुरादिविक्रयः ॥ ८ ॥ विषवाणिज्यं[1] जीवघातप्रयोजनशस्त्रादिविक्रयोपलक्षणम् ॥ ९ ॥ केशवाणिज्यं[1] केशवतां दासगवोष्ट्रहस्त्यादिकानां विक्रयरूपम् ॥ १० ॥ यन्त्रपीडनकर्म यन्त्रेण तिलेक्षुप्रभृतीनां यत्पीडनरूपं कर्म तत् ॥ ११ ॥ तथा निर्लाञ्छनकर्म वर्धितकरणम् ॥ १२ ॥ दवाग्नेर्दानाग्नेर्दानं[2] वितरणं क्षेत्रादिशोधननिमित्तं दवाग्निदानमिति[3] ॥ १३ ॥ सरोह्रदतडागपरिशोषणता, तत्र सरः स्वभावनिष्पन्नं, ह्रदो नद्यादीनां निम्नतरः प्रदेशः, तडागं खननसम्पन्नमुत्तानविस्तीर्णजलस्थानम्। एतेषां शोषणं गोधूमादीनां वपनार्थम् ॥ १४ ॥ असतीजनपोषणता असतीजनस्य दासीजनस्य पोषणं, तद्भाटिकोपजीवनार्थं यत्तत्। तथा एवमन्यदपि क्रूरकर्मकारिणः प्राणिनः पोषणमसतीजनपोषणमेवेति ॥ १५ ॥

॥ ५२ ॥ कन्दर्पे त्ति कन्दर्पः कामस्तद्धेतुर्विशिष्टो वाक्प्रयोगोऽपि कन्दर्प उच्यते। रागोद्रेकात्प्रहासमिश्रं मोहोद्दीपकं नामेति भावः। अयं चातिचारः प्रमादाचरितलक्षणानर्थदण्डभेदव्रतस्य[4] सहसाकारादिनेति ॥ १ ॥ कुक्कुए[5] त्ति कौक्कुच्यमनेकप्रकारा मुख-

---

१ a c e वाणिज्यं। २ e inserts दवग्गिदाणं before it. ३ e दावाग्निदानम् ४ c e °लक्षणो ऽनर्थ°। ५ e कुकुद्द त्ति, either an error for कुक्कए त्ति, or shortened for कुक्कुए त्ति।

नयनादिविकारपूर्विका परिहासादिजनिका[1] भाण्डानामिव विडम्बनक्रिया। अयमपि तथैव ॥ २ ॥ मोहरिए त्ति मौखर्यं धार्ष्ट्यप्रायमसत्या सम्बद्धप्रलापित्वमुच्यते। अयमतिचारः प्रमादव्रतस्य पापकर्मोपदेशव्रतस्य वानाभोगादिनैव ॥ ३ ॥ सञ्जुत्ताहिगरणे त्ति संयुक्तमर्थक्रियाकरणत्वममधिकरणमुदूखलमुसलादि। तदतिचारहेतुत्वादतिचारो हिंस्रप्रदाननिवृत्तिविषयः, यतो ऽमौ साक्षाद्यद्यपि हिंस्रं शकटादिकं न समर्पयति परेषां, तथापि तेन संयुक्तेन ते याचित्वार्थक्रियां कुर्वन्ति, विसंयुक्ते तु तस्मिंस्ते स्वत एव विनिवारिता भवन्ति ॥ ४ ॥ उवभोगपरिभोगाइरित्ते[2] त्ति उपभोगपरिभोगविषयभूतानि द्रव्याणि। स्नानप्रक्रमे उष्णोदकोद्वर्तनकामलकादीनि। भोजनप्रक्रमे अशनपानादीनि। तेषु यदतिरिक्तमधिकमात्मादीनामर्थक्रियासिद्धावप्यवशिष्यते तदुपभोगपरिभोगातिरिक्तम्। तदुपचारादतिचारः, तेन ह्यात्मोपभोगातिरिक्तेन परेषां स्नानभोजनादिभिरनर्थदण्डो भवति। अयं च प्रमादव्रतस्येवातिचार इति ॥ ५ ॥

उक्ता गुणव्रतातिचाराः। अथ शिक्षाव्रतानां तानाह ॥

॥ ५३ ॥ सामाइयस्स त्ति समो रागद्वेषवियुक्तो[3] यः सर्वभूतान्यात्मवत्पश्यति, तस्य[4] यः प्रतिक्षणमपूर्वापूर्वज्ञानदर्शनचारित्रपर्यायाणां निरुपमसुखहेतुभूतानामधःकृतचिन्तामणिकल्पद्रुमोपमानां[5] लाभः समायः सः। प्रयोजनमस्यानुष्ठानस्येति सामायिकं, तस्य

---

१ c ०जनिता। २ a c ०परिभोगातिरित्ते, e ०परिभोग om. अइरित्ते। ३ c ०विप्रमुक्तो। ४ a c तस्या। ५ e ०मोपमानलाभः।

सावद्ययोगनिषेधरूपस्य निरवद्ययोगप्रतिषेधास्वभावस्य[१] च ॥ मण-दुप्पणिहाणे त्ति मनसो दुष्टं प्रणिधानं प्रयोगो मनोदुःप्रणिधानम्। कृतसामायिकस्य गृहे ऽतिकर्तव्यतायां सुकृतदुःकृतपरिचिन्तनमिति[२] भावः॥१॥ वयदुप्पणिहाणे[३] त्ति कृतसामायिकस्य निष्ठुरसावद्यवाक्-प्रयोगः[४] ॥२॥ कायदुप्पणिहाणे त्ति कृतसामायिकस्याप्रत्युपेक्षिताद्यभृतलादौ करचरणादीनां देहावयवानामनिभृतस्थापनमिति ॥३॥ सामाइयस्स सइअकरणय त्ति सामायिकस्य सम्बन्धिनी[५] या स्मृतिः "अस्यां वेलायां मया सामायिकं कर्तव्यं, तया कृतं तन्न[६] वा०" इत्येवंरूपं स्मरणं, तस्याः[७] प्रबलप्रमादतयाकरणं स्मृत्यकरणम् ॥४॥ अणवट्ठियस्स करणय त्ति अनवस्थितस्याल्पकालीनस्यानियतस्य वा सामायिकस्य करणमवस्थितकरणमल्पकालकरणानन्तरमेव[८] त्यजति यथाकथञ्चिद्वा तत्करोतीति[९] भावः ॥५॥ इह चाद्यत्रयस्यानाभोगादिनातिचारत्वमितरद्वयस्य तु प्रमादबहुलतयेति ॥

॥५४॥ देसावगासियस्स त्ति दिग्व्रतगृहीतदिक्परिमाणस्यैकदेशो देशस्तस्मिन्नवकाशो गमनादिचेष्टास्थानं देशावकाशस्तेन निर्वृत्तं देशावकाशिकं, पूर्वगृहीतदिग्व्रतसङ्क्षेपरूपं सर्वव्रतसङ्क्षेपरूपं चेति ॥ आणवणप्पओगे[१०] त्ति इह विशिष्टावधिके भूदेशाभिग्रहे[११] परतः स्वयंगमनायोगाद्यदन्यः सचित्तादिद्रव्यानयने प्रयुज्यते, सन्देशकप्रदाना-

---

१ c ०प्रतिषेधाभावस्य, e ०प्रतिषेधस्वभावस्य। २ e दुःकृतचिन्तनम्। ३ a वइदु०। ४ e निष्ठर०; c ०वाक्ययोगः। (a c spell निष्ठुर०)। ५ c e सम्बन्धनी। ६ a तन्ने, e तच। ७ e च। ८ c तस्य, e तस्या। ९ a ०करणानांतरमेव, c ०करणांतरमेव। १० e om तत्। ११ a c e ०पच्चए। १२ c च्चवग्रहे।

दिना "त्वयेदमानेयम्" इत्यानयनप्रयोगः ॥१॥ पेसवसप्पओगे[1] त्ति बलाद्विनियोज्यः प्रेष्यस्तस्य प्रयोगो, यथाभिगृहीतप्रविचारदेशव्यतिक्रमभयात्[2] "त्वयाऽवश्यमेव[3] गत्वा मम गवाद्यान्येयमिदं वा तत्र कर्तव्यम्" इत्येवंभूतः प्रेष्यप्रयोगः ॥२॥ सद्दाणुवाए त्ति स्वगृहवृत्तिप्राकाराद्यवच्छिन्नभूप्रदेशाभिग्रहे[4] बहिः प्रयोजनोत्पत्तौ, तत्र स्वयंगमनायोगाद्वृत्तिप्राकारादिप्रत्यासन्नवर्तिनो बुद्धिपूर्वकमभ्युक्काशिताद्यशब्दकरणेन[5] समवसितकान्बोधयतः[6] शब्दानुपातः शब्दस्यानुपातनमुच्चारणं तादृग्येन परकीयश्रवणविवरमनुपतत्यसाविति ॥ ३ ॥ रूवाणुवाए त्ति अभिगृहीतदेशाद्बहिः प्रयोजनभावे शब्दमनुच्चारयत एव परेषां स्वसमीपानयनार्थं स्वशरीररूपदर्शनं रूपानुपातः ॥ ४ ॥ बहियापोग्गलपक्खेवे त्ति अभिगृहीतदेशाद्बहिः प्रयोजनसद्भावे परेषां प्रबोधनाय लेष्ट्वादिपुद्गलप्रक्षेप इति भावना ॥ ५ ॥ इह चाद्यद्वयस्यानाभोगादिनातिचारत्वं, इतरस्य तु व्रतसापेक्षत्वादिति ॥

॥ ५५ ॥ पोसहोववासस्स त्ति इह पोषधशब्दो ऽष्टम्यादिपर्वसु रूढः, तत्र पोषधे उपवासः पोषधोपवासः, स चाहारादिविषयभेदाच्चतुर्विध इति, तस्य ॥ अप्पडिलेहियेत्यादि अप्रत्युपेक्षितो जीवरक्षार्थं चक्षुषा न निरीक्षितः। दुःप्रत्युपेक्षित उद्भ्रान्तचेतोवृत्तितयासम्यग्निरीक्षितः। शय्या शयनं तदर्थं संस्तारकः कुशकम्बलफलकादिः शय्यासंस्तारकः। ततः पदत्रयस्य कर्मधारये भवत्यप्रत्युपेक्षितदुःप्रत्युपेक्षितशय्यासंस्तारकः[7]। एतदुपभोगश्चातिचारहेतुत्वादयमतिचार

---

१ a c e ॰पयोगे। २ a c e ॰प्रवीचार॰। ३ a c e ॰वश्यम्। ४ a प्रकाराद्य॰। ५ e ॰भ्युल्काशिता॰। ६ e बोधयन्। ७ a om. दुःप्रत्युपेक्षित।

उक्तः ॥ १ ॥ एवम प्रमार्जितदुःप्रमार्जितशय्यासंस्तारकोऽपि, नवरं प्रमार्जनं वसनाञ्चलादिना ॥ २ ॥ एवमितरौ द्वौ, नवर मुच्चारः पुरीषं, प्रस्रवणं मूत्रं, तयोर्भूमिः[1] स्थण्डिलम् ॥ ३, ४ ॥ एते चत्वारोऽपि प्रमादितयातिचाराः ॥ पोसहोववासस्स सम्मं अणुपालणया त्ति कृतपोषधोपवासस्यास्थिरचित्ततयाहारशरीरसत्काराब्रह्मव्यापाराणामभिलषणादननुपालना पोषधस्येति। अस्य चातिचारत्वं भावतो विरतेर्बाधितत्वादिति[2] ॥

॥ ५६ ॥ अहासंविभागस्स त्ति अह त्ति यथासिद्धस्य स्वार्थं[3] निर्वर्तितस्येत्यर्थः, अशनादेः समितिसङ्गतत्वेन पश्चात्कर्मादिदोषपरिहारेण विभजनं साधवे दानद्वारेण विभागकरणं यथासंविभागः। तस्य ॥ सचित्तनिक्खेवणेत्यादि[4] सचित्तेषु व्रीह्यादिषु निक्षेपणमन्नादेरदानबुध्या माढष्टानतः सचित्तनिक्षेपणम् ॥ १ ॥ एवं सचित्तेन फलादिना स्थगनं सचित्तपिधानम् ॥ २ ॥ कालातिक्कमः कालस्य साधुभोजनकालस्यातिक्रम उल्लङ्घनं कालातिक्रमः। अयमभिप्रायः, "कालमूनमधिकं वाज्ञात्वा[5] साधवो न ग्रहीष्यन्ति[6], ज्ञास्यन्ति च यथायं ददाति" एवं विकल्पतो दानार्थमभ्युत्थानमतिचार इति ॥ ३ ॥ तथा परव्यपदेशः "परकीयमेतत्तेन साधुभ्यो न दीयते" इति साधुसमक्षं भणनं, "जानन्तु साधवो यद्यस्यैतद्भक्तादिकं भवेत्तदा कथमस्मभ्यं न दद्याद्" इति साधुसम्प्रत्ययार्थम्[7]। अथवा "अस्माद्दानान्मम मात्रादेः

---

१ c e insert निमित्तं after तयोर्। २ c बोधित्वाद्। ३ a स्वर्थं। ४ a °निक्खिवणेत्यादि, c e °निक्खेवणेत्यादि। ५ c चाज्ञात्वा। ६ a गृहीष्यन्ते, c e गृह्णीष्यन्ति। ७ c °सम्प्रत्ययार्थभणनम्

पुण्णमस्सि" इति भणनमिति ॥ ४ ॥ मत्सरिता[1] "अपरेणेदं दत्तं, किमहं तस्मादपि कृपणो हीनो वातोऽहमपि ददामि" इत्येवंरूपो दानप्रवर्तकविकल्पो मत्सरिता ॥ ५ ॥ एते चातिचारा एव, न भङ्गा, दानार्थमभ्युत्थानपरिणतेश्च[2] दूषितत्वाद्भङ्गस्वरूपस्य चेहैवमभिधानाद्, यथा ।

दाणन्तराय दोसा न देइ, दिज्जन्तयं च वारेइ ।
दिन्ने[3] वा परितप्पइ इति किवणत्ता भवे भङ्गो ॥

आवश्यकटीकायां हि न भङ्गातिचारयोर्विशेषो[4] ऽस्माभिरवबुद्धः, केवलमिह भङ्गादिवेकं कुर्वद्भिरस्माभिरतिचारा व्याख्याताः। सम्प्रदायान्नवपदादिषु तथा दर्शनात् ।

जारिसओ जइभेओ जह जायइ जह व तत्थ[5] दोसगुणा ।
जयणा जह अइयारा भङ्गा तह भावणा नेया ॥

इत्यस्या आवश्यकचूर्ण्या पूर्वगतगाथाया दर्शनादतिचारशब्दस्य सर्वभङ्गे प्रायो ऽप्रसिद्धत्वाच्च। ततो नेदं[6] भङ्गनीयं[7], य एते ऽतिचारा उक्तास्ते भङ्गा एवेति। तथा[8] यं[9] एते प्रतिव्रतं पञ्चपञ्चातिचारास्तं[9] उपलक्षणमतिचारान्तराणामवसेया, न त्ववधारणम्। यदाहुः पूज्याः।

पञ्चपञ्चाइयारा ओ सुत्तम्मि जे पदंसिया ।
ते नावहारणट्ठाए किन्तु ते उवलक्खणं ॥

इति[10]। इदं चेह तत्त्वं। यत्र व्रतविषये ऽनाभोगादिनातिक्रमा-

---

१ c मत्स्यारिता, e मत्सरिता। २ c e दानार्थमभ्युत्थानं दानपरिणतेश्च। ३ a c e दिन्ने। ४ c e नवभङ्ग०। ५ c वइच्छ for व तत्थ। ६ c नैवं। ७ c e भङ्गनीये एते। ८ c e यथा। ९ c e ये, तें। १० a e ति, c om. ति।

द्विपदत्रयेण वा स्वबुद्धिकल्पनया वा व्रतमापेक्षतया व्रतविषयं परिहरतः[१] प्रवृत्तिः सेा ऽतिचारेा, विपरीततायां तु भङ्ग इत्येवं सङ्कीर्णातिचारपदगमनिका कार्या। अथ सर्वविरतावेवातिचारा भवन्ति, देशविरतौ तु भङ्गा एव। यदाह।

सव्वे वि य अइयारा सञ्जलणाणं तु उदयओ जन्ति।
मूलच्छेज्जं पुण होइ बारसण्हं कसायाणं॥

अत्रोच्यते इयं हि गाथा सर्वविरतावेवातिचारभङ्गोपदर्शनार्था[२], न देशविरत्यादिभङ्गदर्शनार्था। तथैव वृत्तौ व्याख्यातत्वात्। तथा सञ्ज्वलनोदयविशेषे सर्वविरतिविशेषस्यातिचारा एव भवन्ति, न मूलच्छेद्यम्। प्रत्याख्यानावरणादीनां हृदये पश्चानुपूर्व्या सर्वविरत्यादीनां मूलतः छेदो भवतीत्येवंभूतव्याख्यानान्तरे ऽपि न देशविरत्यादावतिचाराभावः सिध्यति। यतो यथासंयतस्य चतुर्थानामुदये यथाख्यातचारित्रं भ्रश्यति, इतरचारित्रं[३] सम्यक्त्वं च सातिचारमुदयविशेषान्निरतिचारं च[४] भवतीति। एवं तृतीयोदये सरागचरणं[५] भ्रश्यति, देशविरतिरुभयत्र सातिचारे निरतिचारे[६] च प्रत्येकं तथैव स्याताम्। द्वितीयोदये देशविरतिर्भ्रश्यति, सम्यक्त्वं तु तथैव द्विधा स्यात्। प्रथमोदये तु सम्यक्त्वं भ्रश्यतीति। एवं चैतत्, कथमन्यथा सम्यक्त्वातिचारेषु दैशिकेषु प्रायश्चित्तं तप एव निरूपितं, सार्विकेषु तु[७] मूलमिति। अथानन्तानुबन्ध्यादयो द्वादश कषायाः सर्वघातिनः, सञ्ज्वलनास्तु देशघातिन इति। ततश्च सर्वघातिना-

---

१ e परिहारः। २ e ०दर्शनार्थं। ३ e इरतचारित्रं। ४ e om. च। ५ e सरागावरणं प्रणश्यति। ६ e निरतिचारेषु om. च। ७ e om. तु।

मुदये मूलमेव, देशघातिनां त्वतिचार इति सत्यं, किन्तु यदे-तत्सर्वघातित्वं द्वादशानां कषायाणां, तत्सर्वविरत्यपेक्षमेव शतक-चूर्णिकारेण व्याख्यातं, न तु सम्यक्त्वाद्यपेक्षमिति। तथा हि तद्वाक्यं "भगवप्पणीयं[1] पञ्चमहव्वयमइयं अट्ठारससीलङ्गसहस्सकलियं चारित्तं घाएन्ति त्ति सव्वघाइणो" त्ति। किञ्च प्रागुपदर्शिताया:[2] "जारि-सओ" इत्यादि गाथाया: सामर्थ्यादतिचारभङ्गौ देशविरतिसम्य-क्त्वयो: प्रतिपत्तव्याविति ॥

॥ ५७ ॥ **अपच्छिमे**त्यादि पश्चिमैवापश्चिमा, मरणं प्राणत्याग-लक्षणं, तदेवान्तो मरणान्त:, तत्रभवा मारणान्तिकी[3], संलिख्यते कृशीक्रियते शरीरकषायाद्यनयेति **संलेखना** तपोविशेषलक्षणा, तत: पदत्रयस्य कर्मधारय:, तस्या **जोषणा**[4] सेवना, तस्या **आराधना** अखण्डकालकरणमित्यर्थ:, अपश्चिममारणान्तिकसंलेखनाजोषणाारा-धना, तस्या:॥ **इहलोगे**त्यादि इहलोको मनुष्यलोक:, तस्मिन्नाशंसा-भिलाष:, तस्या: प्रयोग इहलोकाशंसाप्रयोग:। "अहो स्यां जन्मान्तरे ऽमात्यो वा" इत्येवंरूपा[5] प्रार्थना ॥ १ ॥ एवं **परलोकाशंसाप्रयोगो**, "देवो ऽहं स्याम्" इत्यादि ॥ २ ॥ **जीविताशंसाप्रयोगो** जीवितं प्राणधारणं तदाशंसायास्तदभिलाषस्य प्रयोगो, "यदि बहुकालमहं जीवेयम्" इति। अयं हि संलेखनावान्कश्चिद्वस्त्रमाल्यपुस्तक-वाचनादिपूजादर्शनाद्दृढपरिवारावलोकनाल्लोकश्लाघाश्रवणाच्चैवं मन्येत, यथा "जीवितमेव श्रेय:, प्रतिपन्नानशनस्यापियत एवंविधा महद्वैभवेन

---

१ a भगवयाप्पणीयं, c e भगवतप्पणीयं। २ c प्रागुक्तोपिदर्शितायाः, e प्रागुक्तोप-र्शितायाः। ३ e °न्तिका। ४ e झोषणा। ५ a एवंरूपप्रार्थना।

विभूतिर्वर्तते" इति ॥ ३ ॥ मरणाशंसाप्रयोग उक्तस्वरूपपूजाद्यभावे भावयत्यसौ "यदि शीघ्रं म्रियेऽहम्" इति स्वरूप इति ॥ ४ ॥ कामभोगाशंसाप्रयोगो, "यदि मे मानुष्यकामभोगादिव्यापाराः[१] सम्पद्यन्ते तदा साधु" इति विकल्परूपः[२] ॥ ५ ॥

॥५८॥ नो खलु इत्यादि नो खलु मम भदन्त भगवन्कल्पते युज्यते। अद्यप्रभृति इतः सम्यक्त्वप्रतिपत्तिदिनादारभ्य निरतिचारसम्यक्त्वपरिपालनार्थं तद्यतनामाश्रित्य। अन्नउत्थिए व त्ति जैनव्यूथाद्यदन्यद्यूथं सङ्घान्तरं तीर्थान्तरमित्यर्थः, तदस्ति येषां ते अन्ययूथिकाश्वरकादिकुतीर्थिकाः, तान्। अन्ययूथिकदेवतानि वा हरिहरादीनि। अन्ययूथिकपरिग्रहीतानि वा चैत्यानि[३] अर्हत्प्रतिमालक्षणानि, यथा भौतपरिग्रहीतानि वीरभद्रमहाकालादीनि। वन्दितुं वा अभिवादनं कर्तुम्। नमस्तितुं[४] वा प्रणामपूर्वकं प्रशस्तध्वनिभिर्गुणोत्कीर्तनं कर्तुम्। तद्भक्तानां मिथ्यात्वस्थिरीकरणादिदोषप्रसङ्गादित्यभिप्रायः॥ तथा पूर्वं प्रथममनालपनेन सता अन्यतीर्थिकैः, तानेव। आलपितुं वा सकृत्सम्भाषितुम्। संलपितुं वा पुनःपुनः संलापं कर्तुम्। यतस्ते तन्नतरायोगोलकल्पाः[५] खल्वासनादिक्रियायां नियुक्ता भवन्ति, तत्प्रत्ययश्च कर्मबन्धः स्यात्। तथालापादेः सकाशात्परिचयेन तस्यैव तत्परिजनस्य वा मिथ्यात्वप्राप्तिरिति। प्रथमालपनेन त्वसम्भ्रमं लोकापवादभयात् "कीदृशस्त्वम्" इत्यादि वाच्यमिति॥ तथा तेभ्योऽन्ययूथिकेभ्यो अशनादि दातुं वा सकृत्, अनुप्रदातुं वा पुनःपुनरित्यर्थः ॥

---

१ a मानुष्यकाः कामभोगादिव्यावा सम्पद्यन्ते। २ a विकल्परूप, c e विकल्परूपा। ३ c e चरचैत्यानि। ४ a नमःस्तुतं, c नमयितुं, e नमस्यतुं। ५ c e ०योगोलककल्पाः।

अयं च निषेधो धर्मबुध्यैव, करुणया तु दद्यादपि॥ किं सर्वथा न कल्पत इत्याह। नन्नत्थ रायाभिओगेणं ति न इति न कल्पत इति यो ऽयं निषेधः, सो ऽन्यत्र राजाभियोगात्, तृतीयायाः पञ्चम्यर्थत्वाद्राजाभियोगं वर्जयित्वेत्यर्थः। राजाभियोगस्तु राजपरतन्त्रता। गणः समुदायस्तदभियोगो वश्यता गणाभियोगस्तस्मात्। बलाभियोगो नाम राजगणव्यतिरिक्तस्य बलवतः पारतन्त्र्यम्। देवताभियोगो देवपरतन्त्रता। गुरुनिग्रहो मातापितृपारवश्यं, गुरूणां वा चैत्यसाधूनां निग्रहः प्रत्यनीककृतोपद्रवो गुरुनिग्रहः, तत्रोपस्थिते तद्रक्षार्थमन्ययूथिकादिभ्यो ददपि[1] नातिक्रामति सम्यक्त्वमिति॥ वित्तिकन्तारेणं[2] ति वृत्तिर्जीविका, तस्याः कान्तारमरण्यं तदिव कान्तारं क्षेत्रं कालो वा वृत्तिकान्तारं निर्वाहाभाव इत्यर्थः। तस्मादन्यत्र निषेधो दानप्रणामादेरिति प्रकृतमिति॥ पडिग्गहं ति पात्रम्। पीढं ति पट्टादिकम्। फलगं ति अवष्टम्भादिकं फलकम्। भेसज्जं[3] ति पथ्यम्॥ अट्ठाइं ति उत्तरभूतानर्थानाददाति॥

॥ ५९ ॥ लहुकरण इत्यत्र यावत्करणाल्लहुकरणजुत्तजोइयमित्यादिर्यानवर्णको व्याख्यास्यमानसप्तमाध्ययनवदवसेयः॥

॥ ६६ ॥ महावीरस्स अन्तियं ति अन्तेभवा आन्तिकी[4] महावीरसमीपाभ्युपगतेत्यर्थः[5]। तां धम्मपण्णत्तिं ति धर्मप्रज्ञापनामुपसम्पद्याङ्गीकृत्यानुष्ठानद्वारतः[6]। जहा पूरणो त्ति भगवत्यभिहितो

---

१ e ददपि। २ a c e वित्तीकन्तारेणं। ३ a भेसज्ज त्ति। ४ c आन्तिका ५ a ०पाभ्युपगमेत्य०। ६ c प्रज्ञापनम्।

बलतपस्वी[1]। स यथा स्वस्थाने पुचादिस्थापनमकरोत्, तथायं कृतवानित्यर्थः। एवं चासौ कृतवान्, विउलं असणपाणखाइमसाइमं उवक्खडावित्ता, मित्तनाइनियगसम्बन्धिपरिजणं आमन्तेत्ता, तं मित्तनाइनियगसम्बन्धिपरिजणं विउलेणं ४ वत्थगन्धमल्लालङ्कारेण य[2] सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता, तस्सेव मित्तनाइनियगसम्बन्धिपरिजणस्स पुरओ जेट्ठपुत्तं कुडुम्बे[3] ठावित्त त्ति॥ नायकुलंसि त्ति स्वजनगृहे॥

॥६८॥ उवक्खडेउ[4] त्ति उपस्करोतु राध्यतु। उवकरेउ त्ति उपकरोतु, सिद्धं सद्[5] द्रव्यान्तरैः कृतोपकारमाहितगुणान्तरं विदधातु॥

॥७०॥ पढमं ति एकादशानामाद्यामुपासकप्रतिमां श्रावकोचितामभिग्रहविशेषरूपामुपसम्पद्य विहरति। तस्यास्येदं स्वरूपम्।

सङ्कादिसल्लविरहियसम्मद्दंसणजुओ[6] उ[7] जो जन्तु[8]।
से सगुणविप्पमुक्को, एसा खलु होइ पढमा ओ[9]॥

सम्यग्दर्शनप्रतिपत्तिश्च तस्य पूर्वमप्यासीत्। केवलमिह शङ्कादिदोषराजाभियोगाद्यपवादवर्जितत्वेन तथाविधसम्यग्दर्शनाचारविशेषपालनाभ्युपगमेन च प्रतिमात्वं समाश्रयते। कथमन्यथासावेकमासं प्रथमायाः प्रतिमायाः[10] पालनेन, द्वौ मासौ द्वितीयायाः पालनेन, एवं[11] यावदेकादश मासानेकादश्याः पालनेन पञ्चसार्धानि वर्षाणि

---

१ c e बालतपस्वी। २ e om. य। ३ c कुटम्बे, e कुटुम्बे। ४ See footnote to the translation. ५ a सत (error for सत्), c तु e स च। ६ a c e ०विरहित०। ७ e om. उ; see Hemachandra ii, 203, 211; it is a shorter form of ओ or उअ। ८ c जुत्ता, om. जो। ९ a उ; see footnote ७। १० a om. ११ a om.

पूरितवानित्यर्थतो[1] वक्ष्यतीति। न चायमर्थो दशाश्रुतस्कन्धादावुपलभ्यते श्रद्धामात्ररूपायास्तत्र तास्याः प्रतिपादनात्॥ अहासुत्तं ति सूत्रानतिक्रमेण। यथाकल्पं प्रतिमाचारानतिक्रमेण। यथामार्गं क्षायोपशमिकभावानतिक्रमेण। अहातच्चं ति यथातत्त्वं दर्शनप्रतिमेति शब्दस्यान्वर्थानतिक्रमेण। फासेइ त्ति स्पृशति प्रतिपत्तिकाले विधिना प्रतिपत्तेः। पालेइ त्ति सततोपयोगप्रतिजागरणेन रक्षति। सोहेइ त्ति शोभयति गुरुपूजापुरस्सरपारणकरणेन सोधयति वा निरतिचारतया। तीरेइ त्ति पूर्णेऽपि कालावधावनुबन्ध्यात्यागात्[2]। कीर्तयति तत्समाप्तौ "इदमिदं चेहादिमध्यावसानेषु कर्तव्यं तच्च मया कृतम्" इति कीर्तनात्। आराधयति एभिरेव प्रकारैः सम्पूर्णैर्निष्ठां नयतीति॥ दोच्चं ति द्वितीयां व्रतप्रतिमाम्। इदं चास्याः स्वरूपम्।

दंसणपडिमाजुत्तो पालेन्तो[3] ऽणुव्वए निरइयारे।
अणुकम्पाइगुणजुओ जीवो[4], इह होइ वयपडिमा॥

तच्चं ति तृतीयां सामायिकप्रतिमाम्। तत्स्वरूपमिदम्।

वरदंसणवयजुत्तो सामइयं[5] कुणइ जो उ सज्झासु।
उक्कोसेण तिमासं, एसा सामाइयप्पडिमा॥

चउत्थं ति चतुर्थीं[6] पोषधप्रतिमामेवंरूपाम्।

पुव्वोदियपडिमजुओ पालइ जो पोसहं तु सम्पुण्णं[7]।
अट्ठमिचउद्दसाइसु चउरो मासे[8], चउत्थी[9] सा॥

---

१ e अर्थः ततो। २ a ०त्यागन्। ३ c e पालन्तो। ४ c ०जुत्तजीवो। ५ c e सामाइयं। ६ e चतुर्थी पोषधप्रतिमैवंरूपा। ७ e सम्पन्नम्। ८ e मासा। ९ a चउत्थे।

पञ्चमं ति पञ्चमीं प्रतिमाप्रतिमां[1] कायोत्सर्गप्रतिमामित्यर्थः। स्वरूपं चास्याः।

सम्ममणुव्वयगुणवयसिक्खावयवं थिरो य नाणी य।
अट्ठमिचउद्दसीसुं पडिमं ठा एगराईयं[2] ॥
असिणाणवियडभोई[3] मउलिकडो[4] दिवसबम्भयारी य।
रादं परिमाणकडो पडिमावज्जेसु दियहेसु ॥
झायइ पडिमादिठिओ[5] तिलोयपुज्जो[6] जिणे[7] जियकसाओ।
नियदोसपच्चणीयं अहं वा पञ्च जा मासा ॥

अज्ञानो ऽरात्रिभोजी चेत्यर्थः। मुकुलकच्छ[8] इत्यर्थः ॥

छट्ठं ति षष्ठीं अब्रह्मवर्जनप्रतिमाम्। एतत्स्वरूपं चैवम्।

पुव्वोदियगुणजुत्तो विसेसओ विजियमोहणिज्जो[9] य।
वज्जइ अबम्भमेगन्तओ उ रादं पि थिरचित्तो ॥
सिङ्गारकहाविरओ इत्थीए समं रहम्मि[10] नो ठाइ।
चयइ य अइप्पसङ्गं तहा विभूसं च उक्कोसं ॥
एवं जा[11] छम्मासा एसो हि गओ उ[12] दूयरहा दिट्ठं।
जावज्जीवं पि इमं वज्जइ एयम्मि लोगम्मि ॥

सत्तमं ति सप्तमीं सचित्ताहारवर्जनप्रतिमामित्यर्थः। इयं चैवम्।

सचित्तं आहारं वज्जइ असणाइयं निरवसेसं।
सेसपयसमाउत्ता[13] जा मासा सत्त विहिपुव्वं ॥

---

१ c has only प्रतिमां omitting प्रतिमा, e प्रतिमां प्रातिमं। २ e गएगराइयम्। ३ e मउडीकलो। ४ a मुक्कलकच्छ, c e मुत्कलकच्छ; cf. मुक्तकच्छ। ५ a पडिमा-एट्ठिउ। ६ a e ०पुज्जो, ०कसाए। ७ e om. जिणे। ८ c e विजय०। ९ e रहंसि। १० c e जावच्छम्मा। ११ c e om. उ। १२ c ०वय०।

अट्ठमं ति अष्टमीं स्वयमारम्भवर्जनप्रतिमाम्। तद्रूपमिदम्।

वज्जइ सयमारम्भं सावज्जं, कारवेइ पेसेहिं।
वित्तिनिमित्तं पुव्वयगुणजुत्तो अट्ठ जा मासा॥

नवमं ति नवमां भृतकप्रेष्यारम्भवर्जनप्रतिमाम्[१]। सा चेयम्।

पेसेहिं आरम्भं सावज्जं कारवेइ नो गुरुयं।
पुव्वोइयगुणजुत्तो नव मासा जाव विहिणा ओ[२]॥

दसमं ति दशमीं उद्दिष्टभक्तवर्जनप्रतिमाम्। सा चैवम्।

उद्दिट्ठकडं भत्तं पि वज्जए किमुय सेसमारम्भं।
सेा हेाइ य[३] खुरमुण्डो सिहलिं वा धारए[४] केाइ॥
दव्वं पुट्ठो जो[५] णं जाणेइ वयइ[६] नेा वेइ (?)।
पुव्वोदियगुणजुत्तो दस मासा कालमाणेणं[७]॥

एक्कारसमं ति एकादशीं श्रमणभूतप्रतिमाम्। तत्स्वरूपं चैतत्।

खुरमुण्डो लोए णं[८] रयहरणं[९] ओग्गहं[१०] च घेत्तूणं।
समणब्भूओ विहरइ धम्मं काएण फासेन्तो[११]॥
एवं उक्कोसेणं एक्कारस मास[१२] जाव विहरेइ।
एक्काहाइपरेणं[१३] एवं सव्वत्थ पाएणं॥

इति॥

॥ ७२ ॥ उराले णमित्यादिवर्णको मेघकुमारतपोवर्णक इव व्याख्येयः। यावदनवकाङ्क्षन्विहरतीति॥

---

१ The reading of this clause and verse is very corrupt in e. २ a उ। ३ e om. य। ४ a e धारते कोति, c धारए कोवि। ५ c जाणं, e जाणे। ६ a इवयइनोवेति, c वयइतोयनोवेइ, e वयइनोवेति। ७ c °मासेणं। ८ a ण च, c ण, e om. ९ c यरहरणं, e यवरहरण। १० a c उग्गहं, e पडिग्गहं। ११ c e फासन्तो। १२ a मासल जाव। १३ c एक्काहाईणं।

॥ ८३ ॥ गिहमज्झा वसन्तस्स त्ति गृहमध्यावसतः, गेहे वर्तमानस्येत्यर्थः ॥

॥ ८५ ॥ सन्नाणमित्यादय[1] एकार्थाः शब्दाः ॥

॥ ८६ ॥ गोयमा इ त्ति हे गौतम इत्येवमामन्त्रेति ॥

निक्खेवओ त्ति निगमनं, यथा "एवं खलु जम्बू समणेणं जाव उवासगदसाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्ति बेमि" ॥

॥ उपासकदशानां प्रथमाध्ययनं समाप्तम् ॥

---

१ a सन्नाणम्, c e सन्नाणम ।

अट्ठमं ति अष्टमीं स्वयमारम्भवर्जनप्रतिमाम् । तद्रूपमिदम् ।

वज्जइ सयमारम्भं सावज्जं, कारवेइ पेसेहिं ।

वित्तिनिमित्तं पुव्वयगुणजुत्तो अट्ठ जा मासा ॥

नवमं ति नवमां भृतकप्रेष्यारम्भवर्जनप्रतिमाम्[१] । सा चेयम् ।

पेसेहिं आरम्भं सावज्जं कारवेइ नो गुरुयं ।

पुव्वोइयगुणजुत्तो नव मासा जाव विहिणा ओ[२] ॥

दसमं ति दशमीं उद्दिष्टभक्तवर्जनप्रतिमाम् । सा चैवम् ।

उद्दिट्ठकडं भत्तं पि वज्जए किमुय सेसमारम्भं ।

सो होइ य[३] खुरमुण्डो सिहलिं वा धारए[४] कोइ ॥

दव्वं पुट्ठो जो[५] णं जाणेइ वयइ[६] नो वेइ (?) ।

पुव्वोदियगुणजुत्तो दस मासा कालमाणेणं[७] ॥

एक्कारसमं ति एकादशीं श्रमणभूतप्रतिमाम् । तत्स्वरूपं चैतत् ।

खुरमुण्डो लोए णं[८] रयहरणं[९] ओग्गहं[१०] च घेत्तूणं ।

समणब्भूओ विहरइ धम्मं काएण फासेन्तो[११] ॥

एवं उक्कोसेणं एक्कारस मास[१२] जाव विहरेइ ।

एक्काहाइपरेणं[१३] एवं सव्वत्थ पाएणं ॥

इति ॥

॥ ७२ ॥ उराले णमित्यादिवर्णको मेघकुमारतपोवर्णक इव व्याख्येयः । यावदनवकाङ्क्षन्विहरतीति ॥

---

१ The reading of this clause and verse is very corrupt in e. २ a उ । ३ e om. य । ४ a e धारते कोति, c धारए कोवि । ५ c जा णं, e जाणे । ६ a इवयइनोवेति, c वयइतोयनोवेइ, e वयइनोवेनि । ७ c °मासेणं । ८ a ण च, c ण, e om. ९ c यरहरणं, e यवरहरण । १० a c उग्गहं, e पडिग्गहं । ११ c e फासन्तो । १२ a मासस्स जाव । १३ c एक्काहाईण ।

॥ ८३ ॥ गिहमज्झा वसन्तस्स त्ति गृहमध्यावसतः, गेहे वर्तमानस्येत्यर्थः ॥

॥ ८५ ॥ सन्नाणमित्यादय[1] एकार्थाः शब्दाः ॥

॥ ८६ ॥ गोयमा इ त्ति हे गौतम इत्येवमामन्त्र्येति ॥

निक्खेवओ त्ति निगमनं, यथा "एवं खलु जम्बू समणेणं जाव उवासगदसाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्ति बेमि" ॥

॥ उपासकदशानां प्रथमाध्ययनं समाप्तम् ॥

## द्वितीयमध्ययनम् ॥

अथ द्वितीये किमपि लिख्यते ॥

॥ ८३ ॥ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि त्ति पूर्वरात्रश्चासावपररात्रश्चेति पूर्वरात्रापररात्रः[2], स एव कालसमयः[3] कालविशेषः ॥

॥ ८४ ॥ तत्र इमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते त्ति वर्णकव्यासो वर्णकविस्तरः ॥ मोमं ति शिरः । से तस्य । गोकिलञ्ज[4] त्ति गवां चरणार्थं यद्दारुमयं[5] महद्भाजनं, तद्गोकिलञ्जं उच्चे त्ति यदुच्यते, तस्याधोमुखीकृतस्य यत्संस्थानं, तेन संस्थितं तदाकारमित्यर्थः ॥ पुस्तकान्तरे विशेषान्तरमुपलभ्यते । विगयकप्पयनिभं ति विकृतो

---

१ a सव्वाणम्, c e सत्ताणम । २ e पूर्वरात्रापररात्रः । ३ e कालः समयः । ४ a e f गोकिलिंज, but immediately afterwards गोकिलंज as in A B D E F; Skr. गोकिलिञ्ज or गोकिलिञ्च, cf. Marāṭhī किलच or किलीच । ५ e °दलमयमहद्भाजनं ।

थोऽलञ्झराद्दीनां[1] कल्प एव कल्पकः क्लेदः खण्डं कर्परमिति तात्पर्यं, तन्निभं तत्सदृशमिति॥ क्वचित्तु वयडकोप्परनिभं ति दृश्यते, तच्चोपदेशगम्यम्॥ माखिभमेलसरिसा व्रीव्हिकणिशशूकसमाः[2] से तस्य केसा बालाः। एतदेव व्यनक्ति, कविलतेएणं दिप्पमाणे[3] पिङ्गलदीप्त्या[4] रोचमानाः॥ उट्टियाकभल्लसंठाणसंठियं उष्ट्रिका मृण्मयो महाभाजनविशेषस्तस्याः कभल्लं कपालं, तस्य[5] यत्संस्थानं तत्संस्थितम्। निडालं ति ललाटम्॥ पाठान्तरे। महल्लउट्टियाकभल्लसरिसोवमे[6] महोष्ट्रिकाकपालसदृशमित्येवमुल्लेखेनोपमा[7] उपमानवाक्यं यत्र तत्तथा॥ सुगंसपुंछं[8] व भुजपरिसर्पविशेषो सुगुंमा, सा[9] च खाडहिल्ल त्ति सम्भाव्यते, तत्पुच्छवत्। तस्सेति पिशाचरूपस्य भुमगाओ[10] त्ति भ्रुवौ प्रस्तुतोपमार्थमेव व्यनक्ति, फुग्गफुग्गाओ[11] त्ति परस्परासम्बद्धरोमिके विकीर्णविकीर्णरोमिके[12] इत्यर्थः॥ पुस्तकान्तरे तु जडिलजडिलाओ[13] त्ति प्रतीतम्॥ विगयबीभच्छदंसणाओ त्ति विकृतं बीभत्सं च दर्शनं रूपं ययोस्ते तथा॥ सीसघडिविणिग्गयाणि शीर्षमेव घटी तदाकारत्वात् शीर्षघटी[14], तस्या विनिर्गते इव विनिर्गते शिरोघटीमतिक्रम्य व्यवस्थितत्वात्। अक्खिणी लोचने, विकृतबीभत्सदर्शने प्रतीतम्॥ कर्णौ श्रवणौ यथा शूर्प-

---

१ a e f अरञ्झरादीनां। २ e f व्रीही०। ३ a f दिप्पमाणे, apparently intended as a nom. plur. ending in ए, see E. Müller's *Beiträge zur Jaina Grammatik*, p. 50, Bhag., p. 418. ४ a f पिंपल०। ५ e तत्संस्थानं। ६ e महल्ल०। ७ e °सदृशमित्येव समुल्लेखेनोपमा। ८ e मगुंसपुच्छं, f मुंगुंस०। ९ e om. सा। १० e भूमगाउ, f भुमगाउ। ११ a फुग्गाओ। १२ e om. one विकीर्ण। १३ a f जडिलजडिलाउ, e जटिलजटिलाउ। १४ e °घटिः।

कर्त्तरमेव शूर्पखण्डमेव नान्ययाकारौ टप्पराकाराविति यर्थः। विकृतेत्यादि तथैव॥ उरब्भपुडसन्निभा उरभ्र उरणस्तस्य[1] पुटं नासापुटं, तत्सन्निभा तत्सदृशौ नासा नासिका॥ पाठान्तरेण[2] ऊरब्भपुडसंठाणसंठिया, तत्र ऊरब्भा[3] वाद्यविशेषस्तस्याः पुटं पुष्करं तत्संस्थानसंस्थिता[4] अतिचिपिटत्वेन[5] ममत्वादिति॥ झुसिर त्ति महारन्ध्रा, जमलचुल्लीसंठाणसंठिया यमलयोः समस्थितद्वयरूपयो चुल्ल्योर्यत्संस्थानं[6] तत्संस्थिते द्वे अपि तस्य नासापुटे नासिकाविवरे॥ वाचनान्तरे महल्लकुब्बसंठिया[7] दो वि से[8] कवोला, तत्र चौणमांसत्वादुन्नतास्थिलाच्च[9] कुब्बं[10] ति निम्नं चाममित्यर्थः। तत्संस्थितौ द्वावपि से तस्य कपोलौ गण्डौ॥ तथा घोडय[11] त्ति घोटकपुच्छवदश्ववालधिवत्तस्य पिशाचरूपस्य श्मश्रूणि[12] कूर्चकेशाः। तथा कपिलकपिलानि अतिकडाराणि विकृतानीत्यादि तथैव॥ पाठान्तरेण घोडयपुंछं[13] व तस्स कविलफरुसाओ उद्धलोमाओ[14] दाढियाओ[15], तत्र फरुसे[16] कर्कशस्पर्शे ऊर्ध्वरोमिके[17] न तिर्यगवनते इत्यर्थः। दंष्ट्रिके उत्तरौष्ठरोमाणि[18]॥ ओष्ठौ[19] दशनच्छदौ

---

१ a e f जरण०। २ e पाठान्तरे। ३ e ऊरब्भो। ४ e ०संस्थाने संस्थिता। ५ e चिपटत्वेन। ६ a f तुल्योर्, e चुल्लोर्। ७ So e here, while afterwards it has कुब्बं; but a f have ०कुच० here, but afterwards कुब्बं; Skr. कुब्जम् 'a hole', 'a cavity'; the Marāṭhī has a word कुचा or कुचा (or मुचा) 'a dint', 'a depression'. ८ e ते। ९ a e f ०मांसत्वात् उन्नता०। १० a f कुब्बं, e कुचं। ११ a f om. घोडय त्ति। १२ a झूलाणि, f झूलाणि। १३ a e f ०पुछं। १४ e उडलोमाओ, f उडलोमा। १५ So e; but a f दाडियाओ (see Hem. II, 139). १६ e फरुषे। १७ a e f कडै०। १८ a e f उत्तरौष्ठ०। १९ a e f ओष्ठौ।

उष्ट्रस्येव लम्बौ[1] प्रलम्बमानौ ॥ पाठान्तरेण उट्टा से घोडगस्स जहा दो वि लम्बमाणा ॥ तथा फाला[2] लोहमयकुशाः, तत्सदृशा दीर्घत्वात्, से तस्य दत्ता दशनाः[3] ॥ जिह्वा यथा शूर्पकर्त्तरमेव नान्यथाकारा, विकृतेत्यादि तदेव ॥ पाठान्तरे हिङ्गुलुयधाउकन्दरविलं व[4] तस्स वयणं इति दृश्यते । तत्र हिङ्गुलुको वर्णद्रव्यं तद्रूपो धातुर्यत्र तत्, तथाविधं यत्कन्दरविलं गुहालक्षणं रन्ध्रं तदिव तस्य वदनम् ॥ हलकुड्डाल[5] हलस्योपरि ततो भागः, तत्संस्थिते तदाकारे अतिवक्रदीर्घे से तस्य हणुय त्ति दंष्ट्राविशेषौ[6] ॥ गल्लकडिल्लं च तस्स त्ति गल्ल एव कपोल एव कडिल्ल मण्डकादिपचनभाजनं गल्लकडिल्लं, चः[7] समुच्चये, तस्य पिशाचरूपस्य । खड्ड[8] ति गर्त्ताकारं[10] निम्नमध्यभागमित्यर्थः । फुट्टं ति विदीर्णं, अनेनैव साधर्म्येण[11] कडिल्लमित्युपमानं कृतम् । कविलं ति वर्णतः । फरुसं ति स्पर्शतः । महल्लं ति महत् ॥ तथा मृदङ्गाकारेण मर्दलाकृत्या उपमा यस्य स मृदङ्गाकारोपमः । से तस्य स्कन्धोऽग्रदेशः ॥ पुरवरे[12] त्ति पुरवरकपाटोपमं से तस्य वच्च उरःस्थलं विस्तीर्णत्वादिति ॥ तथा कोट्ठिका[13] लोहादिधातुघमनार्थं मृत्तिकामयी कुशूलिका[14], तस्या यत्संस्थानं तेन संस्थितौ तस्य द्वावपि बाहू भुजौ स्थूलावित्यर्थः ॥ तथा निसापाहाणे त्ति मुद्गा-

---

१ e inserts प्रलंबौ। २ a f फालाः। ३ a f दशनं। ४ a e f व। ५ a f कुड्डा, e कुद्दाल त्ति। ६ e विशेषो। ७ a व। ८ e च। ९ e खटं, Marāṭhī खड्डा। १० e गर्त्ता रंध्राकारं। ११ e f साधर्म्मेण। १२ a f om. १३ a e f कोट्टिका। १४ a e f कुक्कुलिका।

दिदलनशिला, तत्संस्थितौ पृथुलत्वस्थूलत्वाभ्यां, द्वावपि अग्रहस्तौ भुजयोरग्रभूतौ करावित्यर्थः[१]। तथा निसालोढे[२] त्ति शिलापुत्रकः, तत्संस्थानसंस्थिता हस्तयोरङ्गुल्यः स्थूलत्वदीर्घत्वाभ्याम्॥ तथा सिप्पिपुडं ति शुक्तिसम्पुटस्यैकं दलं, तत्संस्थितास्तस्य नक्ख त्ति नखा हस्ताङ्गुलिसम्बन्धिनः॥ वाचनान्तरे तु इदमपरमधीयते। अडयालगसंठिओ[३] उरो तस्स रोमगुविलो[४] त्ति अत्र अडयालग[५] त्ति अट्टालकः प्राकारावयवः[६] सम्भाव्यते तत्साधर्म्यं चोरसः क्षामत्वादिनेति॥ तथा णहाविद्यपसेवओ[७] व्व त्ति नापितप्रसेवक[८] इव नखशोधकक्षुरादिभाजनमिव, उरसि वक्षसि, लम्बते[९] प्रलम्बमानौ तिष्ठतः[१०], द्वावपि तस्य स्तनकौ वक्षोजौ॥ तथा पोट्टं जठरं, अयःकोष्ठकवल्लोहकुशूलवद्वृत्तं[११] वर्तुलम्॥ तथा पानं धान्यरससंस्कृतं जलं येन कुविन्दाश्चीवराणि पाचयन्ति तस्य कलन्दं कुण्डं पानकलन्दं, तत्सदृशी गम्भीरतया से तस्य नाभिर्जठरमध्यावयवः॥ वाचनान्तरेऽधीतं भग्गकडी विगयवंकपट्ठी[१२] असरिसा दो वि तस्स फिसगा। तत्र भग्नकटिर्विकृतवक्रपृष्ठः[१३], फिसकौ[१४] पुतौ॥ तथा सिक्कयं[१५] दध्यादिभाजनानां दोरकमयमाकाशे[१६] ऽवलम्बनं[१७] लोकप्रसिद्धं[१८], तत्संस्थानसंस्थितं से तस्य नेत्रं मथिदण्डा-

---

१ a f करौ इत्यर्थः। २ e निसालोढो। ३ e अडालग०। ४ e रोम विलो। ५ a e f अडयाल। ६ e प्रकारावयवः। ७ a f ०पसेवउ ल त्ति, e ०पसेवउ त्ति। ८ e नापित तत्प्रसेवक। ९ e लंवि त्ति। १० a f तिष्ठतः। ११ a e f ०कोष्ठक०। १२ e ०पिट्ठी (see Hem. I, 35, 129). १३ a f ०ष्टः, e ष्टिः। १४ Skr. properly स्फिचौ। १५ a f सिक्कयं, e सिक्कं। १६ a e f दवरकमयम्। १७ a f अवलंवनं। १८ e लोके प्रसिद्धं।

कर्षणरज्जुः[१], तद्वद्दीर्घतया[२] तन्नेत्रं शेफ[३] उच्यते ॥ तथा किसपुडसंठाणसंठिय त्ति सुरागोणकरूपतण्डुलकिण्वभृतगोणी-पुटद्वयसंस्थानसंस्थिताविति[४] सम्भाव्यते । द्वावपि तस्य वृषणौ पोत्रकौ ॥ तथा अमलकोट्ठिय त्ति समतया व्यवस्थापितकुशू-लिकाद्वयसंस्थानसंस्थितौ[५] द्वावपि तस्य ऊरू[६] जङ्घे ॥ तथा अज्जुणगुट्ठं[७] व त्ति अर्जुनतृणविशेषस्तस्य गुट्ठं[८] स्तम्बस्तद्वत्तस्य[९] जानुनी । अनन्तरोक्तोपमानस्य[१०] साधर्म्यं व्यनक्ति । कुटिलकुटिले अतिवक्रे विकृतबीभत्सदर्शने ॥ तथा जङ्घे जानुनोरधोवर्तिन्यौ[११] । करकडीओ[१२] त्ति कठिने निर्मांसे इत्यर्थः । तथा रोमभिरुप-चिते ॥ तथा अधरी पेषणशिला, तत्संस्थानसंस्थितौ द्वावपि तस्य पादौ ॥ तथा अधरीलोट्ठः शिलापुत्रकः, तत्संस्थानसंस्थिताः पाद्यो-रङ्गुष्ठाः ॥ तथा[१३] शुक्तिपुटसंस्थिताः से तस्य पादाङ्गुलिनखाः ॥

॥ ९५ ॥ केशाग्रान्नखाग्रं यावद्वर्णितं पिशाचरूपमधुना सामान्येन तद्वर्णनायाह । लडहमडहजाणुए[१४] त्ति दृढप्रस्तावे लडहशब्देन गन्त्र्याः पश्चाद्भागवर्ति तदुत्तराङ्गरक्षणार्थं[१५] यत्काष्ठं[१६] तदुच्यते, तच्च गन्त्र्यां स्रथबन्धनं भवति, एवं च स्रथसन्धिबन्धनत्वाल्लडह[१७] इव, लडहे मडहे च स्थूलत्वान्यदीर्घत्वाभ्यां जानुनी यस्य तत्तथा ॥ विकृते

---

१ e सियि०। २ a f तद्वद्दीर्घतया। ३ a f सेफा। ४ a ०तंडुलं; a f विह्न०। ५ a f अवस्थापित०। ६ a f ऊरूजंघे, e उरू जंघे। ७ a f उज्जुण०; a f ०गुंठं, e ०गुच्छं। ८ a f गुंठं, e गुच्छं। ९ e स्तवकः। १० e ०पमानसाधर्म्यं। ११ e जान्वोरधो०। १२ a e f करकडीउ त्ति। १३ a e f om. १४ a f ०जाणुए। १५ a f तदुत्तंगनरक्षणार्थं, e तदुत्तंगरक्षणार्थं। १६ a f यत्काष्टं। १७ e स्रथसंबंध-धनत्वाल्लडह।

विकारवत्यौ, भग्ने[१] विसंष्ठुलतया[२], भुग्ने[३] वक्रे भ्रुवौ यस्य पिशाचरूपस्य तत्तथा॥ इहान्यदपि विशेषणचतुष्टयं वाचनान्तरे[४]ऽधीयते। मसि[५]मूमगमहिसकालए[६] मघोमूषिकामहिषवत्कालकम्। भरियमेहवन्ने[७] जलभृतमेघवर्णं कालमेवेत्यर्थः। लम्बोष्ठे निर्गतदन्ते प्रतीतमेव[८] तथा॥ अवदारितं विवृतीकृतं वदनलक्षणं विवरं येन तत्तथा। तथा निर्ब्भालिता निष्कासिता[९] अग्रजिह्वा जिह्वाया अग्रभागो येन तत्तथा। ततः कर्मधारयः॥ तथा शरटैः[१०] कृकलासैः कृता[११] मालिका स्रक् मुण्डे वर्त्मनि वा येन तत्तथा॥ तथा[१२] उन्दुरमालया[१३] मूषिकस्रजा[१४] परिणद्धं परिगतं सुकृतं सुष्ठु[१५] रचितं चिह्नं स्वकीयलाञ्छनं येन तत्तथा॥ तथा नकुलाभ्यां बभ्रुभ्यां कृते कर्णपूरे आभरणविशेषौ येन तत्तथा॥ तथा[१६] सर्पाभ्यां कृतं वैकक्षमुत्तरासङ्गो येन तत्तथा[१७]॥ पाठान्तरेण मूमगकयचुंभलए[१८] विच्छुयकयच्छे[१९] सप्पकयजण्णोवइए[२०], तत्र चुंभलए त्ति[२१] शेखरः[२२], विच्छुय त्ति वश्चिकाः, यज्ञोपवीतं ब्राह्मणकण्ठसूत्रम्। तथा अभिन्नमुहनयणनक्खवरवग्घचित्तकत्तिनिवसणे[२३] अभिन्नाः अविशीर्णा मुखनयन-

---

१ e भुग्ने। २ a f विसंस्थुलतया, e विसंस्थुलतया। ३ e मुग्ने। ४ a f °तरे अधीयते, e °तरे तु अधीयते। ५ a f यत्काष्टं। ६ e °मूसंग० (see Hem. I, 88); e °माहिस०। ७ a f °मेहे वन्ने, e °मेहवन्ने। ८ e प्रतीतं तत्तथा। ९ a f निःकाशिता। १० a f सरटैः। ११ a कृता मालिका स्रक् मुंडे वा वर्त्मनि वा, e कृतमालिस्रग्मुंडे वर्त्मनि वा। १२ e om. १३ e उंदर०, a f °माला। १४ e मूषक०। १५ a e f सुष्ठु। १६ e om. १७ e om. तत्। १८ a f °भंभलए, e °भूंभलए, but see afterwards; the Marāṭhī has चुंभल or चुंबल। १९ e विच्छुयच्छे। २० a e f °जन्नोवइए। २१ a f चंभलउ त्ति, e भंभुलउ त्ति। २२ a e f शेषरः। २३ e °किन्ति (see Nām. 110).

नखा यस्यां सा तथा, सा चासौ वरव्याघ्रस्य चित्रा कर्बुरा क्षत्तिश्च चर्मेति कर्मधारयः, सा निवसनं परिधानं यस्य तत्तथा। सरसरुधिरमांसावलिप्तगात्रे सरसाभ्यां रुधिरमांसाभ्यामवलिप्तं गात्रं यस्य तत्तथा॥ आस्फोटयन् करास्फोटं कुर्वन्। अभिगर्जन् घनध्वनिं मुञ्चन्। भीमो मुक्तः कृतो ऽट्टहासो हासविशेषो येन तत्तथा॥ नानाविधपञ्चवर्णैरोमभिरुपचित[1] एकं महन्नीलोत्पलगवलगुलिकातसीकुसुमप्रकाशमसिं क्षुरधारं गृहीत्वा, यत्र पोषधशाला[2] यत्र कामदेवः श्रमणोपासकस्तत्रोपागच्छतिस्मेति। इह गवलं महिषशृङ्गं, गुलिका नीली, अतसी धान्यविशेषः, असिः[3] खड्गः, क्षुरस्येव धारा यस्यातिच्छेदकत्वादसौ क्षुरधारः॥ आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चण्डिक्किए मिसिमिसीयमाणे[4] त्ति एकार्थाः शब्दाः कोपातिशयप्रदर्शनार्थाः॥ अप्पत्थियपत्थिया अप्रार्थितप्रार्थिक[5]॥ दुरन्तानि दुष्टपर्यवसानानि प्रान्तान्यसुन्दराणि लक्षणानि यस्य स तथा॥ हीणपुण्णचाउद्दसि[6] त्ति हीना असम्पूर्णा पुण्या चतुर्दशी तिथिर्जन्मकाले यस्य स हीनपुण्यचतुर्दशीकः, तदामन्त्रणं ओह्रीधृतिकीर्त्तिवर्जितेति व्यक्तम्॥ तथा धर्मं श्रुतचारित्रलक्षणं कामयतेऽभिलाषयति यः स धर्मकामः, तस्यामन्त्रणं हे धम्मकामया। एवं सर्वपदानि। नवरं पुण्यं शुभप्रकृतिरूपं कर्म, स्वर्गस्तत्फलं, मोक्षो धर्मफलं, काङ्क्षा अभिलाषातिरेकः[7], पिपासा काङ्क्षाति-

---

१ a उपचितं एकं, e उपचितमेकं। २ e पौषधशालायां। ३ e असिं खड्गं। ४ a f मिसिमिसेमाणे। ५ a f °प्रार्थक, e °प्रार्थिकः। ६ a f °चाउद्दसि त्ति, e °चाउद्दस त्ति। ७ e °अतिरेकाः।

रेकः[१]। एवमेतैः पदैरुत्तरोत्तरो[२]ऽभिलाषप्रकर्ष एवोक्तः॥ नो खलु इत्यादि न खलु नैव कल्पन्ते शीलादीनि चलयितुमिति वस्तुस्थितिः[३]। केवलं यदि त्वं तान्यद्य न चलयसि, ततोऽहं त्वां खण्डाखण्डिं करोमीति वाक्यार्थः॥ तत्र शीलान्यणुव्रतानि, व्रतानि दिग्व्रतादीनि, विरमणानि रागादिविरतयः, प्रत्याख्यानानि नमस्कारसहितादीनि, पोषधोपवासान् आहारादिभेदेन चतुर्विधान्। चालित्तए भङ्गकान्तरकरणतः, क्षोभयितुं एतत्पालनविषयं क्षोभं कर्तुं, खण्डयितुं देशतो, भङ्क्तुं सर्वतः[४], उज्झितुं सर्वस्मा[५] देशविरतेस्त्यागतः, परित्यक्तुं सम्यक्त्वस्यापि त्यागादिति॥ अट्टदुहट्टवसट्टे त्ति आर्तस्य ध्यानविशेषस्य यो दुहट्ट त्ति दुर्घटो दुःस्थागो[६] दुर्निरोधो वशः पारतन्त्र्यं तेन ऋतः पीडितः आर्तदुर्घटवशार्तः। अथवा आर्तेन दुःखार्तः आर्तदुःखार्तः, तथा वशेन[७] विषयपारतन्त्र्येण ऋतः परिगतो वशार्तः, ततः कर्मधारय इति॥

॥ ८६॥ अभीते[८] इत्यादीन्येकार्थान्यभयप्रकर्षप्रदर्शनार्थानि[९]॥

॥ ८८॥ तिवलियं ति त्रिवलीकां भ्रूकुटिं[१०] दृष्टिरचनाविशेषम्॥ ललाटे संहृत्य विधायेति॥

---

१ e ०अतिरेकाः। २ e उत्तरोत्तराभिलाष०। ३ Instead of वस्तुस्थितिः e reads मेयितुं देशतो भंक्तुं सर्वतः, which has probably wrongly crept in here from the subsequent part of the comm. ४ a f सर्वतः। उज्झितुं; but e सर्वत उज्झितुं, evidently, though wrongly, constructing सर्वतः with the preceding clause. ५ e सर्वस्व। ६ e दुस्थगो। ७ e adds च। ८ a f अभीत। ९ c अतिभय for उभय। १० a f भ्रुकुटिं, e भ्रुकुटीं।

॥१०१॥ चलयितुमन्यथा[1] कर्तुम्। चलनं च द्विधा संशयद्वारेण विपर्ययद्वारेण च। तत्र क्षोभयितुमिति संशयतो, विपरिणमयितुमिति[2] च विपर्ययतः॥ श्रान्तादयः समानार्थाः॥ सत्तङ्गपइट्ठियं ति सप्ताङ्गानि चत्वारः पादाः करः पुच्छं शिश्नं[3] चेति, एतानि प्रतिष्ठितानि[4] भूमौ लग्नानि यस्य तत्तथा॥ सम्मं[5] मांसोपचयात्संस्थितम्॥ गजलक्षणोपेतसकलाङ्गोपाङ्गत्वात्सुजातमिव। सुजातं पूर्णदिनजातम्॥ पुरतोऽग्रत[6] उदग्रं उच्चं समुच्छ्रितशिर इत्यर्थः॥ पृष्ठतः[7] पृष्ठदेशे[8] वराहः शूकरः, स इव वराहः। प्राकृतत्वान्नपुंसकलिङ्गता॥ अजाया इव कुक्षिर्यस्य[9] तदजाकुक्षि॥ अलम्बकुक्षि[10] बलवत्त्वेन[11]॥ प्रलम्बो दीर्घो, लम्बोदरस्येव गणपतेरिव, अधरः[12] ओष्ठः, करश्च हस्तो यस्य तत्प्रलम्बलम्बोदराधरकरम्॥ अभ्युद्गतमुकुला आयातकुड्मला या[13] मल्लिका विचकिलस्तद्वत्, विमलधवलौ[14] दन्तौ। अत्र[15] वा प्रकृतत्वान्मल्लिकामुकुलवदभ्युद्गतावुन्नतौ विमलधवलौ[16] च दन्तौ यस्य तदभ्युद्गतमुकुलमल्लिकाविमलधवलदन्तम्॥ काञ्चनकोशीप्रविष्टदन्तं,[17] कोशी[18] प्रतिमा॥ आनामितमीषन्नामितं यच्चापं धनुस्तद्वद्या ललिता च विलासवती, संवेल्लिता च वेल्लन्ती सङ्कोचिता वा, अग्रशुण्डा शुण्डाग्रं यस्य तत्तथा॥ कूर्मवत्कूर्माकाराः प्रतिपूर्णाश्चरणा यस्य तत्तथा॥ विंशतिनखम्॥ आलीनप्रमाणयुक्तपुच्छमिति कण्ठ्यम्॥

---

१ e चालयितुम्। २ e विपरिणामयितुम्। ३ a f सिन्नं, e सिन्न। ४ a f प्रतिष्ठितानि। ५ a e f समं। ६ a f पुरंतो। ७ a f पृष्ठतः। ८ a f पृष्ठिदेशे। ९ a e f कुक्षौ यस्य। १० e अलंबकुक्षौ। ११ e प्रलंबत्वेना। १२ e अधरौष्ठः। १३ e यो। १४ e विमलोधवलौ। १५ e अथवा for अत्र वा। १६ a e विमलधवलदन्तौ। १७ e ०प्रतिष्ठ०। १८ e कोशीति।

॥१०७॥ उग्गविसं इत्यादीनि सर्परूपविशेषाणि क्वचिद्याव-च्छब्दोपात्तानि, क्वचित्साक्षादुक्तानि[1] दृश्यन्ते॥ तत्र उग्रविषं दुरधिसह्यविषम्। चण्डविषं अल्पकालेनैव दष्टशरीरव्यापकविषत्वात्। घोरविषं मारकत्वात्। महाकायं महाशरीरम्। मषीभूषाकालकम्। नयनविषेण दृष्टिविषेण रोषेण च पूर्णं नयनविषरोषपूर्णम्। अञ्जन-पुञ्जानां कज्जलोत्करणानां यो निकरः समूहस्तद्वत्प्रकाशो यस्य तदञ्जनपुञ्जनिकरप्रकाशम्। रक्तांतं लोहितलोचनम्। यमलयोः समश्रयोर्युगलं द्वयं चञ्चलं[2] चलन्त्योरत्यर्थं चपलयोर्जङ्घयोर्यस्य तद्यमलयुगलचञ्चलजङ्घम्। धरणीतलस्य वेणीव केशबन्धविशेष इव क्षीणत्वदीर्घत्वाभ्यामिति धरणीतलवेणिभूतम्। उत्कटो ऽनभिभव-नीयत्वात्, स्फुटो व्यक्तो भासुरतया दृश्यत्वात्, कुटिलो वक्रत्वात्, जटिलः केशसटायोगात्, कर्कशो निष्ठुरो[3] नम्रताया अभावात्, विकटो विस्तीर्णो यः स्फुटाटोपः फणाडम्बरं तत्करणे दक्ष उत्कट-स्फुटकुटिलजटिलकर्कशविकटस्फुटाटोपकरणदक्षम्॥

॥१०८॥ तथा लोहागरधम्ममाणधमधमेन्तघोसं[4] लोहाकरस्येव ध्मायमानस्य भस्त्राका[5] तेनोद्दीप्यमानस्य धमधमायमानस्य धम-धमेत्येवं शब्दायमानस्य घोषः शब्दो यस्य तत्तथा। इह च विशेष्यस्य[6] पूर्वनिपातः प्राकृतत्वादिति॥ अणागलियतिव्वपयण्डरोसं अनाकलितो ऽपरिमितो[7] ऽनर्गलितो वा निरोद्धुमशक्यस्तीव्रः प्रचण्डो ऽतिप्रकृष्टो रोषो यस्य तत्तथा॥ सरसरस्स त्ति लौकिकानुकरणभाषा॥ पच्छि-

---

१ a f om. क्वचित्साक्षादुक्तानि। २ e f चंचलंत्योः। ३ a f निष्ठुरो। ४ a f °धमधमधमेंत°। ५ a f भस्त्रावा, e भस्त्रावा। ६ e विशेषणस्य। ७ f चप्रमितो।

मेणं भाएणं[१] ति पुच्छेनेत्यर्थः॥ निकुट्टेमि त्ति निकुट्टयामि प्रहणिम॥

॥ १११॥ उज्जलं ति उज्ज्वलां विपक्षलेशेनाप्यकलङ्कितां। विपुलां शरीरव्यापकत्वात्। कर्कशां कर्कशद्रव्यमिवानिष्टां। प्रगाढां प्रकर्षवतीम्। चण्डां रौद्राम्। दुःखां[२] दुःखरूपां, न सुखामित्यर्थः। किमुक्तं भवति, दुरहियासं ति दुरधिसह्यामिति॥

॥ ११२॥ हारविराइयवच्छमित्यादौ[३] यावत्करणादिदं दृश्यम्[४]। कडगतुडियथम्भियभुयं[५] अङ्गदकुण्डलमट्ठगण्डतलकण्णपीढधारिं [विचित्तहत्थाभरणं[६]] विचित्तमालामउलिं कल्लाणगपवरवत्थपरिहियं [कल्लाणगपवरमल्लाणुलेवणधरं[७]] भासुरबोन्दिं[८] पलम्बवणमालाधरं दिव्वेणं वण्णेणं दिव्वेणं गन्धेणं दिव्वेणं फासेणं दिव्वेणं सङ्घयणेणं दिव्वेणं संठाणेणं दिव्वाए इड्ढीए दिव्वाए जुईए दिव्वाए पभाए[९] दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेणं तेएणं दिव्वाए लेसाए त्ति कण्ठ्यम्। नवरं कटकानि कङ्कणविशेषास्त्रुटितानि बाहुरक्षकास्ताभिरतिबद्धत्वात्स्तम्भितौ[१०] स्तब्धीकृतौ भुजौ यस्य तत्तथा। अङ्गदे च केयूरे, कुण्डले च प्रतीते[११], मृष्टगण्डतले घृष्टगण्डे[१२] ये कर्णपीठाभिधाने कर्णाभरणे ते च धारयति यत्तत्तथा। तथा[१३]

---

१ a f भागेणं। २ e दुक्ख। ३ a e ०वत्थम्। ४ Compare Ov. §33 on this passage. ५ a f ०भुजं। ६ Probably an interpolation, as it is omited in the following interpretation. ७ Possibly an interpolation, as it is omitted in the version of the interpretation given by MS. f, see below, note २ on pg. ४२। ८ a f भासरबोंदिं। ९ e पहाए। १० a f ०रक्षिकाः। ११ e प्रतीक्षौ। १२ e reads घृष्टगण्डोपक कर्ण०। १३ e तत्र।

विचित्रमालाप्रधानो मौलिर्मुकुटं मस्तकं वा यस्य तत्तथा । कल्याणकमनुपहतं[१] प्रवरं वस्त्रं परिहितं येन तत्तथा । [[१]कल्याणकानि प्रवराणि माल्यानि कुसुमानि अनुलेपनानि च धारयति यत्तत्तथा]। भास्वरबोन्दीकं[२] दीप्तशरीरम् । प्रलम्बा या वनमाला आभरणविशेषस्तां धारयति यत्तत्तथा । दिव्येन वर्णेन युक्तमिति गम्यते । एवं सवत्र, नवरं ऋध्या विमानवस्त्रभूषणादिकया । युत्या इष्टपरिवारादियोगेन । प्रभया प्रभावेन । छायया प्रतिबिम्बेन । अर्चिषा दीप्तिज्वालया । तेजसा कान्त्या । लेश्यया आत्मपरिणामेन ॥ उद्योतयत्प्रकाशयच्छोभयदिति ॥ प्रासादीयं चित्ताह्लादकं, दर्शनीयं यत्पश्यश्चक्षुर्न श्राम्यति, अभिरूपं मनोज्ञं, प्रतिरूपं दृष्टारं २ प्रति रूपं यस्य ॥

॥ ११३ ॥ विकुर्व्य वैक्रियं कृत्वा ॥ अन्तरिक्षप्रतिपन्न आकाशस्थितः ॥ सकिङ्किणीकानि क्षुद्रघण्टिकोपेतानि ॥ सक्के देविन्दे इत्यादौ यावत्करणादिदं दृश्यम्[४] । वज्रपाणी पुरन्दरे सयक्कऊ सहस्सक्खे मघवं पागसासणे दाहिणड्ढलोगाहिवई बत्तीसविमाणसयसहस्साहिवई एरावणवाहणे सुरिन्दे[५] अरयम्बरवत्थधरे[६] आलइयमालमउडे नवहेमचारुचित्तचञ्चलकुण्डलविलिहिज्जमाणगण्डे भासुरबोन्दी[७] पलम्बवणमाले[८] सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडिंसए[९] विमाणे सभाए सोहम्माए त्ति शक्रादिशब्दानां च व्युत्पत्त्यर्थभेदेन भिन्नार्थता द्रष्ट-

---

१ a f अनुपंहतं । २ f omits this passage entirely. ३ a ०बोदीकं । ४ Compare Kap. § 14. ५ a f सुरेन्दे । ६ e अयरम्ब० ७ a f भासरबोंदी । ८ e ०मालधरे । ९ a f ०वडंसए ।

व्या। तयाहि। शक्तियोगाच्छक्रः। देवानां परमेश्वरत्वाद्देवेन्द्रः। देवानां मध्ये राजमानत्वाच्छोभमानत्वाद्देवराजः[1]। वज्रपाणिः कुलिशकरः। पुरोऽसुरादिनगरविशेषस्तस्य दारणात्पुरन्दरः। तथा क्रतुशब्देनेह[2] प्रतिमा विवक्षितास्ततः कार्त्तिकश्रेष्ठित्वे शतं क्रतूनामभिग्रहविशेषाणां यस्यासौ शतक्रतुरिति चूर्णिकारव्याख्या। तथा पञ्चानां मन्त्रिशतानां सहस्रमन्त्रणं भवतीति तद्योगादसौ सहस्राक्षः। तथा मघशब्देनेह मेघा विवक्षितास्ते यस्य वशवर्त्तिनः सन्ति स मघवान्। तथा पाको नाम बलवांस्तस्य रिपुस्तच्छासनात्पाकशासनः। लोकस्यार्द्धमर्द्धलोको, दक्षिणो योऽर्द्धलोकः, तस्य[3] योऽधिपतिः स तथा। एरावणः ऐरावतो[4] हस्ती, स वाहनं यस्य स तथा। सुष्ठु[5] राजन्ते ये[6] ते सुरास्तेषामिन्द्रः प्रभुः सुरेन्द्रः, सुराणां देवीनां वा इन्द्रः सुरेन्द्रः। पूर्वत्र देवेन्द्रत्वेन प्रतिपादितत्वादन्यथा वा पुनरुक्तपरिहारः कार्यः। अरजांसि निर्मलानि, अम्बरमाकाशं, तद्वदच्छत्वेन यानि तान्यम्बराणि तानि वस्त्राणि, तानि[7] धारयति यः स तथा। आलिङ्गितमालमारोपितस्रग्मुकुटं[8] यस्य स तथा। नवे इव नवे[9] हेम्नः सुवर्णस्य सम्बन्धिनौ चारुणी शोभने चित्रे चित्रवती चञ्चले ये कुण्डले[10] ताभ्यां विलिख्यमानौ गण्डौ यस्य स तथा। शेषं प्रागिवेति॥ सामाणियसाहस्सीणमिह[11] यावत्करणादिदं दृश्यम्। तायत्तीसाए[12] तायत्तीसगाणं[12] चउण्हं लोगपालाणं अट्ठण्हं अग्ग-

---

१ a f राजानाच्छो०। २ e शतक्रतु०। ३ e om. ४ e एरावणः। ५ a e f सुष्ठु। ६ e रास्ते for ये ते। ७ e om. ८ e सुकुटो। ९ e नव। १० a f कुडलो। ११ Compare Kap. § 14. १२ a f तावत्तीस०।

महिसीणं सपरिवाराणं तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्हं अणियाहिवईणं चउण्हं चउरासीणं[१] आयरक्खदेवसाहस्सीणं[२] ति।[३] तत्र चायस्त्रिंशाः पूज्या महत्तरकल्पाः। लोकपालाः पूर्वादिदिगधिपतयः सोमयमवरुणवैश्रवणाख्याः[४]। अग्रमहिष्यः प्रधानभार्याः, तत्परिवारः प्रत्येकं पञ्चसहस्राणि, सर्वमीलने[५] चत्वारिंशत्सहस्राणि। तिस्रः परिषदोऽभ्यन्तरा मध्यमा बह्वी च। सप्तानीकानि पदातिगजाश्वरथवृषभभेदात्पञ्चधाङ्गरक्षामिकाणि गन्धर्वानीकं नाट्यानीकं चेति सप्त। अनीकाधिपतयश्च सप्तैवं, प्रधानः पत्तिः प्रधानो गज एवमन्येऽपि॥ आत्मरक्षा[६] अङ्गरक्षास्तेषां चतस्रः सहस्राणां चतुरशीत्यः॥ आख्याति सामान्यतो, भाषते विशेषतः, एतदेव प्रज्ञापयति प्ररूपयतीति पदद्वयेन क्रमेणोच्यत इति॥ देवेण वेत्यादौ यावत्करणादेवं द्रष्टव्यम्। जक्खेण वा रक्खसेण वा किन्नरेण वा किंपुरिसेण[७] वा महोरगेण वा गन्धव्वेण वा इति॥ इड्ढी इत्यादि यावत्करणादिदं दृश्यम्। जुई जसो बलं वीरियं पुरिसक्कारपरक्कमे त्ति॥ नाइं भुज्जो करणयाए, नं[८] नैव, आइं[९] ति निपातो वाक्यालङ्कारे ऽवधारणे वा, भूयः करणतायां पुनराचरणे न प्रवर्त्तिष्ये इति गम्यते॥

॥ ११६ ॥ जहा सङ्खो त्ति यथा सङ्खः श्रावको भगवत्यामभिहितस्तथायमपि वक्तव्यः। अयमभिप्रायः[११]। अन्ये, पञ्चविधमभिगमं

---

१ Kap. § 14 has चउरासिइए as well as var. lec. चउरासीणं। २ e °साहस्सीएणं। ३ e om. ४ e वैश्रमण°। ५ a f om. पञ्च° सर्व°। ६ e आत्मरक्षार्थमङ्गरक्षाः। ७ e किंपुरुसेण। ८ e नाथं। ९ e om. १० e आर्थं। ११ a e f °प्रायोऽन्ये।

सचित्तद्रव्यव्युत्सर्गादिकं ममत्वमरणप्रवेशे विदधति शङ्खः, पुनः पोषधिकत्वेन[१] सचेतनादिद्रव्याणामभावात्तत्र कृतत्रानयमपि[२] पोषधिक[३] इति शङ्खेनोपमितः॥ यावत्करणादिदं द्रष्टव्यम्। जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, २त्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ, २त्ता[४] वन्दइ नमंसइ, २त्ता[५] नच्चासन्ने नाइदूरे सुस्सूसमाणे[६] नमंसमाणे[७] अभिमुहे पञ्जलिउडे[८] पज्जुवासइ त्ति॥

॥११७॥ तए णं समणे२ कामदेवस्स समणोवासयस्स तीसे य[९] इत आरभ्य औपपातिकाधीतं[१०] सूत्रं तावद्वक्तव्यं यावद्धर्मकथा समाप्ता परिषच्च प्रतिगता। तच्चैवं सविशेषमुपदर्श्यते[११]। तए णं समणे भगवं महावीरे कामदेवस्स समणोवासयस्स तीसे य महइ-महालीयाए,[१२] ताम्राश्च महतिमहत्या[१३] इत्यर्थः। इसिपरिसाए मुणि-परिसाए जइपरिसाए, तत्र पश्यन्तीति ऋषयो ऽवध्यादिज्ञानवन्तः, मुनयो वाच्यमाः, यतयो धर्मक्रियासु प्रयतमानाः अणेगसयाए अणे-गसयवन्दपरिवाराए,[१४] अनेकशतप्रमाणानि यानि वृन्दानि तानि[१५] परिवारो यास्याः सा[१६] तया। तस्या धर्मं परिकथयतीति सम्बन्धः। किम्भूतो भगवान्, ओहबले अइबले[१७] महब्बले, ओघबलोऽव्यव-

---

१ a f पौषधिक०, e पौषधक०। २ a f ०भावार्त्तनकृतवान्। ३ a f पौषधिक। ४ a f एवं २ for २ त्ता। ५ e सुस्सूसमाणे। ६ e om. ७ a f पंजलियडे। ८ After this, e adds महइमहालीयाए परिसाए। ९ See Ov. § 56. १० a e only परि-षत्। ११ e सकलशेषम्। १२ a f ०महालयाए। १३ e महाम्नी०। १४ a f ०चन्द्र० for ०वन्द०। १५ e om. १६ The reading of e is confused ओहबले ओघबले यावत्करणादवच्छिन्नबलः।

च्छिन्नबलः, अतिबलो ऽतिक्रान्ताः[१] शेषपुरुषाः, सरति तिर्यग्बलः, महाबलो ऽप्रमितबलः। एतदेव प्रपञ्चयते। [२]अपरिमियबलविरियतेयमाहप्पकंतिजुत्ते, [अपरिमितानि[३] यानि बलादीनि तैर्युक्तो यः स तथा, तत्र] बलं शारीरः प्राणः, वीर्यं जीवप्रभवः, तेजो दीप्तिः, माहात्म्यं महानुभावता, कान्तिः काम्यता। सारयनवठणियमङ्गरनिग्घोसदुन्दुभिसरे[४] शरत्कालप्रभवाभिनवमेघशब्दवद्गम्भीरो निर्घोषो यस्य दुन्दुभेरिव च[५] स्वरो यस्य स तथा। उरे वित्थडाए[६] सरस्वत्येति सम्बन्धः। कण्ठे[७] पवट्टियाए[८] [गलविवरस्य[९] वर्तुलत्वात्। सिरे सङ्किण्णाए मूर्धनि सङ्कीर्णया आयामस्य मूर्ध्ना स्खलितत्वात्], अगरलाए[१०] व्यक्तवर्णयेत्यर्थः[११], अमम्मणाए[१२] अनवरवच्यमानयेत्यर्थः[१३]। सव्वक्खरसन्निवाइयाए[१४] सर्वाक्षरसंयोगवत्या। पुण्णरत्ताए परिपूर्णमधुरया। सव्वभासाणुगामिणीए सरस्सईए भणित्य। जोयणनीहारिणा सरेणं योजनातिक्रामिणा शब्देन॥ अद्धमागहाए भासाए भासइ अरहा धम्मं परिकहेइ। अर्धमागधी भाषा यस्यां रसोर्लशौ मागध्यामित्यादिकं मागधभाषालक्षणं[१५] परिपूर्णं नास्ति। भाषते सामान्येन

---

१ a e f अतिकांता (e अतिक्रांता) शेषपुरुषा सरति (f सरति) तिर्यग्बलः। २ From here the text of a e f is exceedingly confused and incorrect; I have restored it, as well as possible, according to the text of Ov. § 56. ३ The portion in brackets in omitted is a and f. ४ e ०घणणिग्घायर०, f ०वणिय० for ०ठणिय०। ५ e om. च। ६ After this e inserts wrongly the portion गलविवरस्य etc. in brackets. ७ a f कंठ, e कंट। ८ e पोवट्टीयाए (Skr. प्रवेष्टित)। ९ a f आगरलाए, e अगरभाए। १० e व्यक्तवर्णघोसेत्यर्थः। ११ a e f अम्मणाए। १२ e अनवरवंचमान०, f अनवरवंचमान०। १३ a e f ०सन्निवायाए। १४ e मागधी० (See Hem. IV, 288)।

भणति[1]। किंविधो भगवान्, अर्हन् पूजितो[2] पूजोचितः[3], अरहस्यो वा सर्वज्ञत्वात्। कं धर्मं श्रद्धेयज्ञेयानुष्ठेयवस्तु[4] श्रद्धानज्ञानानुष्ठानरूपम्[5]। तथा परिकथयति अशेषविशेषं कथनेनेति। तथा तेसिं सव्वेसिं आरियमणारियाणं[6] अगिलाए धम्ममाइक्खइ। न केवलं ऋषिपर्षदादीनां ये वन्दनाद्यर्थमागतास्तेषां च सर्वेषामार्याणामार्यदेशोत्पन्नानामनार्याणां म्लेच्छानामग्लान्या अखेदेनेति॥ सा वि य णं अद्धमागहा भासा तेसिं आरियमणारियाणं[7] अप्पणो भासाए परिणामेणं परिणमइ[8]। स्वभाषापरिणामेनेत्यर्थः[9]। धर्मकथामेव दर्शयति॥ अत्थि लोए अत्थि अलोए, एवं जीवा अजीवा, बन्धे मोक्खे, पुण्णे पावे, आसवे संवरे, वेयणा[10] निज्जरा[11]। एतेषामस्तित्वदर्शनेन शून्यज्ञाननिरात्माद्वैतैकान्तक्षणिकनित्यवादिनास्तिकादिकुदर्शननिराकरणात् परिणामिवस्तुप्रतिपादनेन[12] सकलैहिकामुष्मिकक्रियाणामनवद्यत्वमावेदितम्॥ तथा अत्थि अरहन्ता[13] चक्कवट्टी, बलदेवा वासुदेवा, नरगा[14] नेरइया, तिरिक्खजोणिया तिरिक्खजोणिणीओ, मायापिया रिसओ, देवा देवलोया, सिद्धी सिद्धा, परिणिव्वाणे[15] परिणिव्वुया[16]। सिद्धिः[17] कृतकृत्यता, परिनिर्वाणं सकलकर्मकृतविकारविरहादतिस्वास्थ्यमेव, सिद्धपरिनिर्वृतानामपि

---

१ e भणनमिति। २ a f पजितपूजो°। ३ a पूजोचितः। ४ a f ज्ञेय°, °ज्ञाने°। ५ e आयरियमणायरियाणं। ६ f om. ७ f om. स्वभाषा। ८ a e f om., supplied from Ov § 56. ९ e निज्जरे। १० e परिणामवस्तु°। ११ e अरिहंता। १२ a f नरका, e om. १३ a e f परिनिव्वाणे। १४ e परिनिव्वया। १५ e सिद्धा।

विशेषो ऽवसेयः॥ तथा अत्थि पाणादवाए मुसावाए अदिन्नादाणे[१] मेहुणे परिग्गहे, अत्थि[२] कोहे[३] माणे[४] माया लोभे पेज्जे[५] दोसे कलहे अब्भक्खाणे अरइरई पेसुन्ने परपरिवाए मायामोसे[६] मिच्छादंसणसल्ले, अत्थि पाणादवायवेरमणे जाव[७] कोहविवेगे जाव मिच्छादंसणसल्लविवेगे। किं बहुना[८]। सव्वं अत्थिभावं अत्थि त्ति वयइ, सव्वं नत्थिभावं नत्थि त्ति वयइ। सुचिण्णा कम्मा सुचिण्णफला भवन्ति, सुचरिताः क्रियादानादिकाः सुचीर्णफलाः पुण्यफला भवन्तीत्यर्थः। दुचिण्णा[९] कम्मा दुचिण्णफला[९] भवन्ति। फुसइ पुण्णपावे, बध्नात्यात्मा शुभाशुभकर्मणी न पुनः साङ्ख्यमतेनैव न बध्यते। पच्चायन्ति जीवा, प्रत्यायन्ते[१०] उत्पद्यन्ते इत्यर्थः। सफले कल्लाणपावए, दृष्टानिष्टफलं शुभाशुभं कर्मेत्यर्थः॥ धम्ममाइक्खइ, अनन्तरोक्तं ज्ञेयश्रद्धेयज्ञानश्रद्धानरूपमाचष्टे[११] इत्यर्थः॥ तथा इणमेव[१२] निग्गन्थे पावयणे सच्चे, इदमेव प्रत्यक्षं नैर्ग्रन्थं प्रवचनं जिनशासनं सत्यं सद्भूतं कषायादिशुद्धत्वात्सुवर्णवत्[१३]। अणुत्तरे अविद्यमाणप्रधानतरम्[१४]। केवलिए अद्वितीयम्। संसुद्धे[१५] निर्दोषम्। पडिपुण्णे सद्गुणभृतम्। नेयाउए नैयायिकं न्यायनिष्ठम्। सल्लगत्तणे[१६] मायादिशल्यकर्त्तनम्। सिद्धिमग्गे[१७] हितप्राप्तिपथः। मुत्तिमग्गे अहितविच्युतेरुपायः[१८]।

---

१ a f अदत्तादाणे, e अदिन्नादाणे। २ f om. ३ a f om. ४ e पिज्जे। ५ a f om. ६ a e f om., but required by Ov. § 56. ७ e बहुणा, as if it were part of the Prākrit quotation. ८ a f दुचिन्न०। ९ a f प्रत्याजायते। १० e om. ०अदान०। ११ a f इणामेव। १२ a f कषादि०। १३ e ०माणं प्रधान०। १४ a e f संशुद्धे। १५ a f सत्तगत्तणे। १६ e सिद्धमग्गे। १७ e ०विच्युतेर्।

निव्वाणमग्गे[1] सिद्धिक्खेत्तावाप्तिपथः। परिनिव्वाणमग्गे कर्माभावप्रभवसुखोपायः। सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे, सकलदुःखक्षयोपायः, इदमेव प्रवचनं फलतः प्ररूपयति॥ इत्थं[2] ठिया जीवा सिज्झन्ति, निष्ठितार्थतया, बुज्झन्ति केवलितया[3], मुच्चन्ति कर्मभिः, परिणिव्वायन्ति[4] स्वस्थीभवन्ति। किमुक्तं भवति[5]। सव्वदुक्खाणमन्तं करेन्ति[6]। एगच्चा पुण एगे[7] भयन्तारो, एकार्च्चा अद्वितीयपूज्याः[8] संयमानुष्ठाने[9] वा अप्रदृश्यौ अर्चा शरीरं येषं ते एकार्चाः, ते पुनरेकैकेन[10] वाक्येन सिध्यन्ति, ते भक्तारो निर्ग्रन्थप्रवचनसेवका भदन्ता वा भट्टारका भयत्रातारो वा॥ पुव्वकम्मावसेसेणं अन्नतरेसु देवलोगेसु देवत्ताए उववत्तारो भवन्ति महिड्ढिएसु महज्जुइएसु[11] महाजसेसु महाबलेसु महाणुभावेसु महासुक्खेसु दूरङ्गएसु चिरट्ठिएसु[12]। ते णं तत्थ देवा भवन्ति महिड्ढिया[13] जाव चिरट्ठिइया हारविराइयवक्खा[14] कडगतुडियथम्भियभुया[15] अङ्गदकुण्डलमट्ठगण्डतलकण्णपीढधारी[16] विचित्तहत्थाभरणा विचित्तमालामउली,[17] विचित्तानि विचित्राणि वा मउलि त्ति मुकुटविशेषः, [कल्लाणपवरवत्थपरिहिया[18]], कल्लाणगपवरमल्लाणुलेवणधरा[19] भासुरबोन्दी[20] पलम्बवणमालाधरा दिव्वेणं

---

१ a f निव्वाण°। २ a f इहं। ३ e केवलतया। ४ a f परिनिव्वांति, e परिनिव्वायते। ५ e भवतीति। ६ e करेइ। ७ e एग°। ८ a f चद्वितीयाः पू°। ९ e °नुष्ठानं १० a f पुनरेके केचन ये न सिध्यन्ति। ११ e महज्जुएसु। १२ a चिरट्ठितेसु। १३ a f om. १४ a e f °वत्था। १५ Compare the commentary f to § 112. १६ a f °गंडयल्ल°। १७ e विचित्त°; a e °मउलिमउडा, f °मउलि। १८ a f om. १९ a e f °वत्थाणु° for °मल्लाण°। २० a f भासरबांदी।

वसेणं दिव्वेणं गन्धेणं दिव्वेणं फासेणं दिव्वेणं सङ्घयणेणं दिव्वेणं संठाणेणं दिव्वाए इड्ढीए दिव्वाए जुईए दिव्वाए[१] पभाए[१] दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेणं तेएणं दिव्वाए लेसाए दसदिसाओ[२] उज्जोएमाणा पभासेमाणा गइकल्लाणा[३] ठिइकल्लाणा आगमेसिभद्दा पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा॥ तमाइक्खइ, यदिह धर्मफलं तदाख्याति॥ तथा एवं खलु चउहिं ठाणेहिं जीवा नेरइयत्ताए कम्मं पकरेन्ति। एवमिति वक्ष्यमाणप्रकारेणेति। नेरइयत्ताए कम्मं पकरेत्ता नेरइएसु उववज्जन्ति। तं जहा। महारम्भयाए महापरिग्गहयाए[४] पञ्चेन्दियवहेणं कुणिमाहारेणं, कुणिमं ति मांसम्॥ एवं च एएणं अभिलावेणं, तिरिक्खजोणिएसु, माइल्लयाए अलियवयणेणं उक्कञ्चणयाए वञ्चणयाए। तत्र माया वञ्चनबुद्धिः, उत्कञ्चनं मुग्धवञ्चनप्रवृत्तस्य[५] समीपवर्त्ति विदग्धचित्तरञ्जनार्थं[६] क्षणमव्यापारतया अवस्थानं, वञ्चनं प्रतारणम्[७]॥ मणुस्सेसु[८], पगइभद्दयाए पगइविणीययाए साणुक्कोसयाए अमच्छरियाए। प्रकृतिभद्रकता स्वभावत एवापरोपतापिता, अनुक्रोशो दया॥ देवेसु, सरागसंजमेणं संजमासंजमेणं अकामनिज्जराए बालतवोकम्मेणं॥ तमाइक्खइ। यदेवमुक्तरूपं नारकत्वादिनिबन्धनं तदाख्यातीत्यर्थः॥ तथा

जह नरया गम्मन्ती[९] जे नरया जायवेयणा नरए।
सारीरमाणसाइं दुक्खाइं[१०] तिरिक्खजोणीए।१।

---

१ e om. २ e ०दिसाए। ३ a e f गईं०। ४ e परिग्गहाए। ५ e मुग्धवञ्चनं प्र०। ६ e om. चित्त। ७ e विप्रतारणं। ८ So a e f for the usual मणुस्सेसु। ९ e गमन्ती। १० a f सुक्खाइं, e दुक्खाइं।

माणुस्सं च अणिचं वाहिजरामरणवेयणापउरं।
देवे[1] य देवलोए देवेहिं देवसोक्खाइं ।२।

देवांश्च देवलोकान्देवेषु देवसौख्यान्याख्यातीति।

नरगं तिरिक्खजोणिं माणुसभावं च देवलोगं च।
सिद्धिं च सिद्धवसहिं[2] कुज्जीवणियं परिकहेइ ।३।

जह जीवा बज्झन्ती मुचन्ती जह य संकिलिस्सन्ति।
जह दुक्खाणं अन्तं करेन्ति केई अपडिबद्धा।४।

अट्टा[3] अट्टियचित्ता[4] जह जीवा दुक्खसागरमुवेन्ति।
जह वेरग्गमुवगया कम्ममुग्गं[5] विहाडेन्ति। ५।

आर्त्ताः शरीरतो दुःखिताः, आर्त्तितचित्ताः शोकादिपीडिताः, आर्त्तादाध्यानविशेषादार्त्तितचित्ता इति॥

जह रागेण कडाणं कम्माणं पावओ फलविवागो।
जह य परिहीणकम्मा सिद्धा सिद्धालयमुवेन्ति।६।

अथानुष्ठेयानुष्ठानलक्षणं धर्ममाह॥ तमेव धम्मं दुविहमाइक्खियं। येन धर्मेण सिद्धाः सिद्धालयमुपयान्ति[6] स एव धर्मो द्विविध आख्यात इत्यर्थः॥ तं जहा। अगारधम्मं[7] च[7] अणगारधम्मं च[7]। अणगारधम्मो। इह खलु सव्वओ, सर्वान्धनधान्यादिप्रकारानाश्रित्य, सव्वत्ताए सर्वात्मना सर्वैरात्मपरिणामैरित्यर्थः। अगाराओ[8] अण-

---

१ e देवा। २ e सिद्धिसहिं। ३ a f अट्टा, e अट्ठा। ४ a f अट्टिय०, e अट्ठिय०। ५ a f द्रुमुग्गं। ६ a f उपयन्ति। ७ e om. ८ e आगार०।

गारियं पव्वइयस्स[१] सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं, एवं मुसावाय-अदिन्नादाणमेहुणपरिग्गहराईभोयणाओ[२] वेरमणम्॥ एवं अयमाउसो[३] अणगारसामाइए धम्मे पण्णत्ते। एयस्स धम्मस्स सिक्खाए उवट्ठिए निग्गन्थे वा निग्गन्थी वा[४] विहरमाणे[५] आणाए[६] आराहए[७] भवइ॥ अगारधम्मं[८] दुवालसविहं आइक्खइ। तं जहा। पञ्चाणुव्वयाइं तिन्नि गुणव्वयाइं चत्तारि सिक्खावयाइं। पञ्च अणुव्वयाइं[९]। तं जहा। थूलाओ पाणाइवायाओ वेरमणं, एवं मुसावायाओ[१०] अदिन्नादाणाओ[१०] सदारसन्तोसे इच्छापरिमाणे। तिन्नि गुणव्वयाइं। तं जहा। अणट्ठादण्डवेरमणं दिसिव्वयं उवभोगपरिभोगे[११] परिमाणं। चत्तारि सिक्खावयाइं। तं जहा। सामाइयं देसावगासियं पोसहोववासो अतिहिसंविभागो[१२]। अपच्छिममारणन्तियसंलेहणाझूसणाराहणा॥ अयमाउसो अगारसामाइये धम्मे पण्णत्ते। एयस्स धम्मस्स सिक्खाए[१३] उवट्ठिए समणोवासए समणोवासिया वा विहरमाणे आणाए आराहए भवइ॥ तए णं सा[१४] महइमहालिया मणूसपरिसा समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ[१५] जाव हियया उट्ठाए उट्ठेइ, २त्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ, २त्ता वन्दइ नमंसइ, २त्ता

---

१ e पव्वइयस्संति। २ e मुसावायाओ वेरमणं अदिन्नादाणाओ वेरमणं मेहुणाओ वेरमणं परिग्गहराईभोयणाओ वेरमणं। ३ a अयमाओसो। ४ e adds २ after वा। ५ a विहरमाणा। ६ f om. ७ a f आहारए। ८ e अंगार०। ९ e add ति after अणुव्वयाइं। १० e adds वेरमणं। ११ a f ०परिभोगमाणं। १२ a f अहासंविभागो। १३ e सिक्खावए। १४ a e f से। १५ a f हट्ठतुट्ठा।

अत्थेगइया मुण्डा[1] भवित्ता अगाराओ अणगारियं एव्वइया, अत्थेगइया पञ्चाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवन्ना॥ अवसेसा णं[2] परिसा समणं भगवं[3] महावीरं[3] वन्दित्ता नमंसित्ता[4] एवं वयासी। "सुयक्खाए णं, भन्ते, निग्गन्थे पावयणे, एवं सुपन्नत्ते, भेदतः, सुभासिए, वचनव्यक्तितः, सुविणीए, सुष्ठु शिष्येषु विनियोजनात्, सुभाविए तत्त्वभणनात्, अणुत्तरे, भन्ते, निग्गन्थे पावयणे। धम्मं[5] तं आइक्खमाणा[6] उवसमं[7] आइक्खह, क्रोधादिनिग्रहमित्यर्थः, उवसमं आइक्खमाणा विवेगं आइक्खह, बाह्यग्रन्थत्यागमित्यर्थः, विवेगं आइक्खमाणा वेरमणं आइक्खह, मनोनिवृत्तिमित्यर्थः, वेरमणं आइक्खमाणा अकरणं पावाणं कम्माणं आइक्खह, धर्मसुपशमादिरूपं ब्रूयेति[8] हृदयम्[9]। नत्थि णं अन्ने केइ समणे वा माहणे वा जे एरिसं धम्ममाइक्खित्तए, प्रभुरिति शेषः। किमङ्ग पुण एत्तो उत्तरतरं"। एवं वन्दित्ता जामेव दिसं[10] पाउब्भूया, तामेव दिसं[10] पडिगय त्ति॥

॥११८॥ अट्ठे[11] समट्ठे त्ति। अस्त्येषोऽर्थ इत्यर्थः, अथवा अर्थः[12] मयोदितवस्तुसमर्थः सङ्गतः॥ हन्ता इति कोमलामन्त्रणवचनम्॥

॥११९॥ अज्जो त्ति आर्या[13] इत्येवमामन्त्र्यैवमवादीदिति॥ सद्दहन्ति त्ति यावत्करणादिदं दृश्यम्। खमन्ति तिइक्खन्ति।

---

१ a f मुंडे। २ e om. ३ a f only ३। ४ a f only २। ५ e adds एवं सुपन्नो before धम्मं। ६ e आइक्खमाणे। ७ e adds तं after उवसमं। ८ e ब्रूसेति। ९ a f हृदवं। १० e दिसिं। ११ a f अत्थे समट्ठे। १२ e om. १३ a f आर्याः। इति रेवम०, e आर्या इति एवम०।

एकार्थाश्चैते विशेषव्याख्यानमप्येषामस्ति, तदन्यतोऽवसेयमिति ॥

निक्खेवओ त्ति निगमनवाक्यं वाच्यम् । तच्चेदं "एवं खलु, जम्बू, समणेणं जाव सम्पत्तेणं दोच्चस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्ति बेमि" इति ॥

॥ उपासकदशानां द्वितीयाध्ययनविवरणं समाप्तम् ॥

अत्थेगइया मुण्डा[1] भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया, अत्थेगइया पञ्चाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवन्ना॥ अवसेसा णं[2] परिसा समणं भगवं[3] महावीरं[3] वन्दित्ता नमंसित्ता[4] एवं वयासी। "सुयक्खाए णं, भन्ते, निग्गन्थे पावयणे, एवं सुपण्णत्ते, भेदतः, सुभाविए, वचनव्यक्तितः, सुविणीए, सुष्ठु शिष्येषु विनियोजनात्, सुभाविए तत्त्वभणनात्, अणुत्तरे, भन्ते, निग्गन्थे पावयणे। धम्मं[5] तं आइक्खमाणा[6] उवसमं[7] आइक्खह, क्रोधादिनिग्रहमित्यर्थः, उवसमं आइक्खमाणा विवेगं आइक्खह, बाह्यग्रन्थत्यागमित्यर्थः, विवेगं आइक्खमाणा वेरमणं आइक्खह, मनोनिवृत्तिमित्यर्थः, वेरमणं आइक्खमाणा अकरणं पावाणं कम्माणं आइक्खह, धर्मसुपशमादिरूपं ब्रूथेति[8] हृदयम्[9]। नत्थि णं अन्ने केइ समणे वा माहणे वा जे एरिसं धम्ममाइक्खित्तए, प्रभुरिति शेषः। किमङ्ग पुण एत्तो उत्तरतरं"। एवं वन्दित्ता जामेव दिसं[10] पाउब्भूया, तामेव दिसं[10] पडिगय त्ति॥

॥११८॥ अस्त्येषोऽर्थ इत्यर्थः, अथवा अर्थः[11] मयोदितवस्तुसमर्थः सङ्गतः॥ इति कोमलामन्त्रणवचनम्॥

॥११९॥ आर्या[12] इत्येवमामन्त्र्यैवमवादीदिति॥ यावत्करणादिदं दृश्यम्। खमन्ति तिइक्खन्ति।

---

१ a f मुंडे। २ e om. ३ a f only ३। ४ a f only २। ५ e adds एवं सुपन्नो before धम्मं। ६ e आइक्खमाणे। ७ e adds तं after उवसमं। ८ e ब्रूसेति। ९ a f हृदयं। १० e दिसिं। ११ a अत्थे समट्ठे। १२ e om. १२ a f आर्याः। इति रेवम०, e आर्या इति एवम०।

एकार्थाश्चैते विशेषव्याख्यानमप्येषामस्ति, तदन्यतो ऽवसेयमिति ॥

निक्खेवओ त्ति निगमनवाक्यं वाच्यम् । तच्चेदं "एवं खलु, जम्बू, समणेणं जाव सम्पत्तेणं दोच्चस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्ति बेमि" ॥

॥ इति उपासकदशानां द्वितीयाध्ययनविवरणं समाप्तम् ॥

## तृतीयमध्ययनम् ॥

अथ तृतीयं व्याख्यायते । तत्सुगममेव ॥ नवरं उक्खेवो त्ति उपक्षेप उपोद्घातः तृतीयाध्ययनस्य वाच्यः । स चायम् । "जइ णं, भन्ते, समणेणं भगवया जाव सम्पत्तेणं उवासगदसाणं दोच्चस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, तच्चस्स[१] णं, भन्ते, के अट्ठे पण्णत्ते" इति कण्ठ्यश्चायम् ॥

॥ १२६ ॥ तथा[२] क्वचित्कोष्ठकं चैत्यमधीतं, क्वचिन्महाकामवनमिति[३] ॥

॥ १२७ ॥ श्यामा[४] नाम भार्या ॥

॥ १२८ ॥ तओ मंसखोल्ले[५] त्ति त्रीणि मांसशूल्यकानि, शूले पच्यन्ते इति शूल्यानि, त्रीणि मांसखण्डानीत्यर्थः ॥

---

१ a f उक्खेवउ, e उक्खेवो । २ a f om. from तच्चस्स up to पण्णत्ते । ३ e adds कोट्ठए त्ति । ४ a e f ०धनम् ; the error is due to the great similarity of the old Nāgarī signs for *dh* and *v*. ५ e prefixes सामा नामं त्ति । ६ a f सोल्लए ।

अद्दि त्ति आदाणमार्द्रहणं[1], यदुदकतैलादिकमन्यतरद्रव्यपाकाया-ग्नावुत्ताप्यते[2] तद्भृते॥ कडाहेंसि त्ति कटाहे लोहमयभाजनविशेषे॥ आर्द्रहयाम्युत्काथयामि[3]॥ आदक्खामि त्ति आमिक्षामि॥

॥ १४१ ॥ एस ण तए[4] विदंसिए दिट्ठे त्ति एतच्च त्वया विदर्शनं विरूपाकारं[5] विभीषिकादि दृष्टमवलोकितमिति॥ भग्ग-व्वए[6] त्ति भग्नव्रतः, स्थूलप्राणातिपातविरतेर्भावतो भग्नत्वात्, तद्वि-नाशार्थं कोपेनोद्भावनात्, सापराधस्यापि व्रतविषयीकृतत्वात्॥ भग्गनियमः कोपोदयेनोत्तरगुणस्य क्रोधाभिग्रहरूपस्य भग्नत्वात्॥ भग्गपोसधो ऽव्यापारपौषधभङ्गत्वात्॥ एयस्स त्ति द्वितीयार्थत्वात् षष्ठ्याः, एतमर्थमालोचय गुरुभ्यो निवेदय। यावत्करणात्पडि-क्कमाहि निवर्त्तस्व, निन्दाहि आत्मसाक्षिकां कुत्सां कुरु, गरिहाहि गुरुसाक्षिकां कुत्सां विधेहि, विउट्टाहि वित्रोटय तद्भावानुबन्धच्छेदं विधेहि, विसोहेहि अतिचारमलक्षालनेन, अकरणयाए अभ्युट्ठेहि तदकरणाभ्युपगमं कुरु, अहारिहं तवोकम्मं पायच्छित्तं पडिवज्जाहि त्ति प्रतीतम्। एतेन[7] च निशीथादिषु[8] गृहिणः प्रतिप्रायश्चित्तस्या-प्रतिपादनान्न तेषां प्रायश्चित्तमस्तीति ये प्रतिपद्यन्ते, तन्मतम-पास्तां[9] साधूद्देशेन गृहिप्रायश्चित्तस्य जीवितव्यवहारानुपातित्वात्[10]॥

॥ इति उपासकदशानां[11] तृतीयाध्ययनस्य[12] विवरणं समाप्तम्[13]॥

---

१ a e f ॰माद्रहणं। २ a ॰पाकायानांवुत्ताप्यते, f ॰पाकायानावुत्ताप्यते। ३ a f आद्रहयाम्यु॰, e आद्रयाम्यु॰। ४ e तु, text तुमे (Hem. III, 94). ५ f नि-रूपाकारं। ६ e भग्गवइ। ७ a f एतेनिच। ८ e निशीथा॰। ९ e अपास्तं। १० a जीतव्यव॰, e जीवतव्यव॰, f जीजव्यव॰। ११ a f ॰दशा। १२ a f ॰ध्ययन। १३ a f om.

चतुर्थमध्ययनम् ॥

॥ १४५ ॥ अथ चतुर्थमारभ्यते[1]। तदपि सुगमम् ॥ नवरं चैत्यं कोष्ठकं, पुस्तकान्तरे काममहावनम्[2]। धन्या च भार्या ॥

॥ १४८ ॥ जमगसमगं ति यौगपद्येनेत्यर्थः ॥ सासे इत्यादौ यावत्करणादिदं दृश्यम्। सासे १, कासे २, जरे ३, दाहे ४, कुच्छिसूले ५, भगन्दरे ६, अरिसा ७, अजीरए[3] ८, दिट्ठी ९, मुद्धसूले १०, अकारए ११, अच्छिवेयणा १२, कण्णवेयणा १३, कण्डू १४, उदरे १५, कोढे १६। अकारकः अरोचकः ॥

॥ इति चतुर्थाध्ययनविवरणं[4] समाप्तम्[5] ॥

पञ्चममध्ययनम् ॥

पञ्चमं कण्ठ्यम् ॥

षष्ठमध्ययनम् ॥

षष्ठे किमपि लिख्यते ॥

॥ १६६ ॥ धम्मपण्णत्ति त्ति श्रुतधर्मप्ररूपणादर्शनं मतं सिद्धान्त इत्यर्थः ॥ उत्थानं उपविष्टः सन् यदूर्द्ध्वी भवति ॥ कर्म गमनादिकम् ॥ बलं शारीरम् ॥ वीर्यं जीवप्रभवम् ॥ पुरुषकारः[6] पुरुषत्वाभिमानः, पराक्रमः स एव ॥ सम्पादितस्वप्रयोजनः इतिउपदर्शनैवा-

---

१ e चतुर्थमध्ययनमारभ्यते। २ a f ०धनम्। ३ e अजीरये। ४ a f चतुर्थं। ५ a f om. ६ e पुरुषाकारः।

विकल्पे[१], नास्ति तदुत्थानादि जीवानां, एतस्य पुरुषार्थाप्रसाधकत्वात्[२], तदसाधकत्वं[३] च पुरुषकारसद्भावे ऽपि पुरुषार्थसिध्यनुपलम्भात् ॥ एवं च नियताः सर्वभावाः । यैर्यथा भवितव्यं, ते तथैव भवन्ति, न पुरुषकारबलादन्यथा[४] कर्तुं शक्यन्ते[५] इति । आह च ।

प्राप्तव्यो नियतिबलाश्रयेण योऽर्थः
सो ऽवश्यं भवति नृणां शुभो ऽशुभो वा ।
भूतानां महति कृते ऽपि हि प्रयत्ने
नाभाव्यं भवति न भाविनो ऽस्ति नाशः ॥

तथा ।

नहि भवति यन्नभाव्यं, भवति च भाव्यं विनापि यत्नेन ।
करतलगतमपि[६] नश्यति यस्य तु भवितव्यता नास्ति ॥

इति ॥ मङ्गुलि[७] त्ति असुन्दरा धर्मप्रज्ञप्तिः श्रुतधर्मप्ररूपणा । किंस्वरूपासावित्याह णत्थी त्यादि ॥ अनियताः सर्वभावाः उत्थानादेर्भवन्ति, तदभावान्न भवन्तीति कृत्वेत्येवंस्वरूपा ॥

॥ १६७–१६९ ॥ ततो ऽसौ कुण्डकोलिकः तं देवमेवमवादीत् । यदि गोशालकस्य[८] सुन्दरो धर्मो, "नास्ति कर्मादीत्यतो नियताः सर्वभावा" इत्येवंरूपो, मङ्गुलस्य महावीरधर्मो "ऽस्ति कर्मादीत्यनियताः सर्वभावा" इत्येवं स्वरूपः, इत्येवं तन्नयमनूद्य

---

१ a f इतिरूपदर्शनेऽविकल्पे । २ e ०र्थप्रसाध० । ३ e तदसाधकं च । ४ e पुरुषाकारः । ५ e शक्यन्ते इति । ६ e reads करतलगतमिव न पश्यति यस्य तु भवि० ना० । ७ a f मंगुल त्ति । ८ a e f गोसालकस्य ।

कुण्डकौलिकस्तन्मतदूषणाय विकल्पद्वयं कुर्वन्नाह। तुमे णमित्यादिपूर्ववाक्ये[१] यदीति पदोपादानादेतस्य वाक्यस्यादौ तदेति पदं द्रष्टव्यं इति। त्वयायं दिव्यो देवर्ध्यादिगुणः केन हेतुना लब्धः, किमुत्थानादिना, उदाहु त्ति अहोस्वित्[२] अनुत्थानादिना तपोब्रह्मचर्यादीनामकरणेनेति भावः। यद्युत्थानादेरभावेनेति पक्षो गोशालकमताश्रितत्वाद् भवतः, तथा येषां जीवानां नास्त्युत्थानादि तपश्चरणकरणमित्यर्थः, ते इति जीवाः किं न देवाः?। पृच्छतोऽयमभिप्रायः। यथा त्वं पुरुषकारं विना देवः संवृत्तः स्वकीयाभ्युपगमतः, एवं सर्वजीवा ये उत्थानादिवर्जितास्ते देवाः प्राप्नुवन्ति, न चैतदेवमिष्टमित्युत्थानाद्यपलापपक्षे दूषणम्। अथ त्वयेयं ऋधिरुत्थानादिना[३] लब्धा। ततो यद्वदसि "सुन्दरा गोशालकप्रज्ञप्तिरसुन्दरा[४] महावीरप्रज्ञप्तिः" इति, तत्ते तव मिथ्यावचनं भवति[५] तस्य व्यभिचारादिति॥

॥ १७० ॥ ततोऽसौ देवस्तेनैवमुक्तः सन् शङ्कितः संशयवान् जातः, "किं गोशालकमतं[६] सत्यमुत महावीरमतम्"?। महावीरमतस्य[७] युक्तितोऽनेन प्रतिष्ठितत्वादेवंविधविकल्पवान् संवृत्त इत्यर्थः॥ काङ्क्षितो महावीरमतमपि[८] साध्वेतद्युक्त्युपेतत्वादिति[९] विकल्पवान् संवृत्त इत्यर्थः॥ यावत्करणाद्भेदमापन्नो[१०] मतिभेदमुपागतो गोशालकमतमेव[११] साध्विति निश्चयादपोढत्वात्॥ तथा कलुषं समापन्नः

---

१ a f णमित्यादौ पू०। २ e f ०त्यित्। ३ a f ऋधिरुत्थानादिना। ४ e गोसालक०। ५ a f भवतैव। ६ e महावीरस्य, Om. मतं। ७ e ममापि। ८ a f ०क्त्युपपेतत्वादिति। ९ e ०भेदसमापन्नो।

प्राक्तननिश्चयविपर्ययलक्षणं गोशालमतानुसारिणां मतेन मिथ्यात्वं प्राप्त इत्यर्थः । अथवा कलुषभावं जितो अहमनेनेति खेदरूपमापन्न इति ॥ नो संचाएइ[1] त्ति न शक्नोति । पामोक्खं ति प्रमोक्षमुत्तरमाख्यातुं भणितुमिति ॥

॥ १७४ ॥ गिहिमज्झावसन्ता[2] णं ति गृहं[3] अध्यावसन्तो, णमिति वाक्यालङ्कारे[4] । अन्ययूथिकान् अन्यैर्जीवादिभिः सत्पदाभिधेयैर्वा । हेतुभिश्चान्वयव्यतिरेकलक्षणैः । प्रश्नैश्च परप्रश्नानीयपदार्थैः[5] । कारणैरुपपत्तिमात्ररूपैः । व्याकरणैश्च परेण प्रश्नितस्योत्तरदानरूपैः ॥ निप्पट्ठपसिणवागरणे[6] त्ति निरस्तानि स्पष्टानि व्यक्तानि[7] प्रश्नव्याकरणानि येषां, ते निःस्पष्टप्रश्नव्याकरणाः[8], प्राक्तनत्वाद्वा निष्पिष्टप्रश्नव्याकरणास्तान् कुर्वन्ति ॥ सक्का पुण त्ति शक्या एव ॥ हे आर्याः श्रमणैरन्ययूथिका निःस्पष्टप्रश्नव्याकरणाः कर्तुम् ॥

॥ इति षष्ठं विवरणतः समाप्तम् ॥

## सप्तममध्ययनम् ।

॥ १८१ ॥ सप्तमं सुगममेव, नवरं आजीविओवासए त्ति आजीविका गोशालकशिष्याः, तेषामुपासक आजीविकोपासकः ॥ लद्धट्ठे श्रवणतो, गृहीतार्थो बोधतः, पुट्ठट्ठे संशये सति, विनिच्छियट्ठे उत्तरलाभे सति ॥

---

१ a f संचाइए । २ f गिहिमज्झा० । ३ e गृहमध्यावसंतो । ४ a f om. वाक्य । ५ e °प्रश्नीय० । ६ e निप्पिट्ठपसिण० । ७ e adds वागरणानि after व्यक्तानि । ८ e निस्पट्ठ० ।

॥ १८४ ॥ दिण्णभइभत्तवयण[1] त्ति दत्तं भृतिभक्तरूपं द्रव्यभोजनलक्षणं[2] वेतनं मूल्यं येषां ते तथा ॥ कल्लाकल्लिं[3] ति प्रतिप्रभातम् ॥ बहूग्करकान्वार्घटिकाः, वारकांश्च गडुकान्, पिठरकान्स्थालीः, घटकान्प्रतीतान्, अर्द्धघटकांश्च घटार्द्धमानान्, कलशकानाकारविशेषवतो[4] वृहद्घटकान्, अलिञ्जराणि[5] च महदुदकभाजनविशेषान्, जम्बूलकांश्च लोकरूढ्यावसेयान्,[6] उष्ट्रिकाश्च[7] सुरातैलादिभाजनविशेषान् ॥

॥ १८७ ॥ एहिइ त्ति[8] एष्यति ॥ इहं ति अस्मिन्नगरे ॥ महामाहणे त्ति 'मा[9] हन्मि' न हन्मीत्यर्थः, आत्मना वा हनननिवृत्तः परं प्रति 'मा हन' इत्येवमाचष्टे यः स माहनः । स एव मनःप्रभृतिकरणादिभिराजन्म सूक्ष्मादिभेदभिन्नजीवहनननिवृत्तत्वाद्महान्माहनो महामाहनः ॥ उत्पन्ने आवरणक्षयेणाविर्भूते ज्ञानदर्शने धारयति यः स तथा ॥ अत एवातीतप्रत्युत्पन्नानागतज्ञापकः[10] ॥ अरह त्ति अर्हन्महाप्रातिहार्यरूपपूजार्हत्वात्,[11] अविद्यमानं वा रह[12] एकान्तः सर्वज्ञत्वाद्यस्य सो ऽरहाः[13] ॥ जिनो रागादिजेतृत्वात् ॥ केवलानि परिपूर्णानि शुद्धान्यनन्तानि वा ज्ञानादीनि यस्य सन्ति स केवली ॥ अतीतादिज्ञानेऽपि सर्वज्ञानं प्रतिशङ्का स्यादित्याह, सर्वज्ञः साकारोपयोगसामर्थ्यात्, सर्वदर्शी अनाकारोपयोगसाम-

---

१ a e f दिन्न० । २ e द्रव्यं भोजन० । ३ a f ०कल्लि त्ति, e कल्लिं त्ति । ४ a e f कलसका० । ५ a f अरंजराणि । ६ e ०रूढ्यवसेयान् । ७ e उष्ट्रिकांश्च । ८ a e f एहि त्ति । ९ a f om. from मा हन्मि down to आजन्म incl., beginning with सूक्ष्मादि० । १० a f ०प्रत्युत्पन्नागत० ; a e f ज्ञायकः । ११ e reads अर्हन्नष्टमहाप्रातिहार्यरूपपूजा अर्हत्वात् । १२ e रहं । १३ e ऽरहा ।

र्थादिति ॥ तथा तेलोक्कवहियमहियपूएण त्ति त्रैलोक्येन त्रिलोकवासिना जनेन, वहिय त्ति समग्रैश्वर्याद्यतिशयसन्दोहदर्शनसमाकुलचेतसा[१] हर्षभरनिर्भरेण प्रवलकुतूहलबलादनिमिषलोचनेनावलोकितः, महिय त्ति सेव्यतया वाञ्छितः, पूजितश्च पुष्पादिभिर्यः स तथा ॥ एतदेव व्यनक्ति। सदेवा[२] मनुजासुरा[३] यस्मिन्स सदेवमनुजासुरस्तस्य लोकस्य प्रजायाः, अर्चनीयः पुष्पादिभिः,[४] वन्दनीयः स्तुतिभिः, सत्करणीय[५] आदरणीयः, सम्माननीयोऽभ्युत्थानादिप्रतिपत्तिभिः, कल्याणं मङ्गलं दैवतं चैत्यमित्येवं बुद्धा पर्युपासनीय इति ॥ तवकम्म[६] त्ति तथ्यानि सत्फलाव्यभिचारितया[७] यानि[८] कर्माणि क्रियास्तत्सम्पदा तत्सम्बुद्धा यः सम्पयुक्तो[९] युक्तः स तथा ॥

॥ १८८ ॥ कप्पमित्यत्र यावत्करणात्पाउप्पभायाए रयणीए इत्यादिर्जलन्ते[१०] सूरिए इत्येतदन्तः प्रभातवर्णको[११] दृश्यः, स चोत्क्षिप्तज्ञानबुद्धाख्येयः[१२] ॥

॥ १८५ ॥ वायाहयग[१३] त्ति वाताहतं वायुनेषच्छोषमानीतमि-

---

१ e समग्र ऐश्वर्या०। २ e सदेवमनुजा०। ३ a f मनुजासुराः। ४ e inserts पूजनीयः after पुष्पादिभिः। ५ e सत्कारणीयः। ६ a f तव्यकम्म। ७ e reads सत्यफलान्यव्यभिचारितया। ८ e om. ९ e संप्रयुक्तः, om. युक्तः। १० e इत्यादि जलन्ते। ११ The conclusion of the varṇaka, as here indicated, presupposes a somewhat different recension from that usually found in Jain works, e. g., in Kap. § 59, Nāy. § 34, where the conclusion runs thus: सूरे सहस्सरस्सिंमि दिणयरे तेयसा जलन्ते। १२ a f °ज्ञानवद्धा०, e °ज्ञानबुद्धा०। १३ a वाहयगं, e वायाहतगं।

त्यर्थः ॥ कोलालभण्डं ति कुलालाः कुम्भकाराः, तेषामिदं कौलालं, तच्च तद्भाण्डं च पण्यं भाजनं वा कौलालभाण्डम्[1] ॥

॥ १९८,१९९ ॥ "एतत्किं पुरुषकारेणेतरथा वा क्रियते" इति भगवता पृष्टे, स गोशालकमतेन नियतिवादलक्षणेन[2] भावितत्वात्पुरुषकारेणेत्युत्तरदाने च स्वमतच्युतिपरमताभ्यनुज्ञानलक्षणं दोषमाकलयन् "अपुरुषकारेण" इत्युवाच ॥

॥ २०० ॥ ततस्तदभ्युपगतनियतिमतनिरासाय पुनः प्रश्नयन्नाह "सद्दालपुत्त" इत्यादि । यदि तव कश्चित्पुरुषो वाताहतं वा आममित्यर्थः, पक्केल्लयं व त्ति पक्वं वा अग्निना कृतपाकं अपहरेद्या[3] चोरयेत्, विकिरेद्वा[4] इतस्ततो विक्षिपेत्, भिन्द्याद्वा[5] काणताकरणेन, आछिन्द्याद्वा[6] हस्तादुद्दालनेन, पाठान्तरेण विच्छिन्द्याद्वा विविधप्रकारैश्छेदं कुर्यादित्यर्थः, परिट्ठावेद्या बहिर्नीत्वा त्यजेदिति । वत्तेज्जासि[7] त्ति निर्वर्त्तयसि ॥ आउसेज्जा[8] व त्ति आक्रोशयामि वा 'मृतोऽसि त्वम्' इत्यादिभिः शापैरभिशपामि, हन्मि वा दण्डादिना, बध्नामि वा रज्ज्वादिना, तर्जयामि[9] वा 'ज्ञास्यसि रे दुष्टाचार' इत्यादिभिर्वचनविशेषैः, ताडयामि वा चपेटादिना, निच्छोटयामि[10] वा धनादित्याजनेन, निर्भर्त्सयामि वा परुषवचनैः,[11] अकाल एव च जीविताद्वा व्यपरोपयामि मार-

---

१ a f कौलालं भाण्डं । २ e नियतवाद० । ३ e अवहरेद्वा । ४ conjectural (or विच्छिरेद्), a e f विकरेद्वा । ५ e pref. भिंदिज्ज त्ति । ६ e pref. अच्छिंदज्ज त्ति । ७ e निवत्तेज्जासि । ८ a e f आउसेज्ज । ९ a f तार्जयामि । १० a e f निःच्छोटयामि । ११ e परपरुष० ।

यामीत्यर्थः ॥ इत्येवं भगवांस्तं सद्दालपुत्रं स्ववचनेन पुरुषकाराभ्युपगमं[1] ग्राहयित्वा तन्मतविघटनायाह "सद्दालपुत्त" इत्यादि । न खलु तव भाण्डं कश्चिदपहरति, न च त्वं तमाक्रोशयसि, यदि सत्यत[2] एव नास्त्युत्थानादि । अथ कश्चित्तदपहरति, त्वं च तमाक्रोशयसि । तत एवमभ्युपगमे सति यद्वदसि "नास्त्युत्थानादि" इति,[3] तत्ते मिथ्या असत्यमित्यर्थः ॥

॥ २०५, २०८ ॥ तए णं सा अग्गिमित्ता इत्यादि । ततः सा अग्निमित्रा भार्या सद्दालपुत्रस्य श्रमणोपासकस्य तथेति एतमर्थं[4] विनयेन प्रतिशृणोति । श्रुत्वा च स्नाता । कृतबलिकर्मा[5] बलिकर्म लोकरूढम् । कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्ता कौतुकं मषीपुण्ड्रादि मङ्गलं दध्यक्षतचन्दनादि, एते एव[6] प्रायच्छित्तमिव[7] प्रायश्चित्तं दुःस्वप्नादिप्रतिघातकत्वेनावश्यं कार्यत्वादिति । शुद्धप्पावेसाइं[8] वेषार्हाणि मङ्गल्याणि प्रवरवस्त्राणि परिहिता । अप्पमहग्घाभरणालङ्कियसरीरा॥ चेडिचक्कवालपरिकिण्णा ॥ पुस्तकान्तरे यानवर्णको दृश्यते । स चैवं सव्याख्यानोऽवसेयः । जेणेव करणजुत्तजोइयं लघुकरणेन दक्षत्वेन ये युक्ताः पुरुषास्तैर्योजितं यन्त्रयूपादिभिः[9] सम्बन्धितं यत्तत्तथा । तथा समखुरवालिहाणसमलिहियसिङ्गएहिं समखुरवालिधानौ तुल्यशफपुच्छौ समे लिखिते चोल्लिखिते[10] शृङ्गे ययोस्तौ तथा[11]

---

१ e पुरुषाकारा० । २ e सत्यमेव । ३ e om. इति । ४ e एतदर्थं । ५ a f om. ६ e च । ७ a e f प्रायच्छित्तमिव । ८ e वैषयिकाणि । ९ e यन्त्ररूपादिभिः । १० e ईषोल्लिखिते । ११ e adds तौ च यौ तौ after तथा ।

ताभ्यां गोयुवभ्यामिति[1] सम्बन्धः। जम्बूणयामयकलावजोत्तयहविसिट्ठएहिं[2] जाम्बूनदमयौ कलापौ ग्रीवाभरणविशेषौ योक्त्रे च कण्ठबन्धनरज्जू[3] प्रतिविशिष्टे शोभने ययोस्तौ तथा ताभ्याम्। रयणामयघण्टसुत्तरज्जुगवरकञ्चणखइयनत्थापग्गहोग्गहियएहिं[4] रजतमय्यौ रूप्यविकारौ घण्टे ययोस्तौ तथा, सूत्ररज्जुके कार्पासिकसूत्रमय्यौ ये वरकाञ्चनखचिते नस्ते नासारज्जू तयोः प्रग्रहेण रश्मिनावगृहीतकौ च बद्धौ यौ तौ तथा ताभ्याम्। नीलुप्पलकयामेलएहिं[5] नीलोत्पलकृतप्रेखराभ्याम्। पवरगोणजुवाणएहिं। नाणामणिकणगघण्टियाजालपरिगयम्। सुजायजुगजुत्तउज्जुगपसत्थसुविरइयनिम्मियं[6] सुजातं[7] सुजातदारुमयं युगं यूपः युक्तं मङ्गतं ऋजुकं सरलं सुविरचितं सुघटितं निर्मितं निवेशितं यत्र तत्तथा। जुत्तामेव धम्मियं जाणप्पवरं उवट्ठवेह युक्तमेव सम्बद्धमेव[8] गोयुवभ्यामिति[9] सम्बन्ध इति॥

॥ २१८॥ महागोवेत्यादि गोपो गोरक्षकः, स चेतरगोरक्षकेभ्यो ऽतिविशिष्टत्वान्महानिति महागोपः॥ मज्जत इति सन्मार्गाच्चयवमानान्। विनश्यत इत्यनेकशो ध्रियमाणान्। खाद्यमानान् मृगादिभावे व्याघ्रादिभिः। क्षिप्यमानान् मनुष्यादिभावे

---

१ e reads गोवायुवाभ्यामिति। २ a f ०घविसिट्ठएहिं। ३ e रज्जुप्रति० । ४ a e f ०खचियञ्चत्थ (e ञ्चच्छ) पग्गहोगहिएहिं। ५ a e f ०मेलएहिं। ६ e ०निम्मयं। ७ e pref. सुजायं। ८ e संबंधमेव। ९ a e f गोयुवाभ्यामिति।

खड्गादिना । भिद्यमानान्[१] कुन्तादिना[२] । लुप्यमानान् कर्णनासादिच्छेदनेन[३] । विलुप्यमानान् वाह्योपध्युपहारतः[४] । गा[५] इवेति गम्यते ॥ निव्वाणमहावाडं[६] ति सिद्धिमहागोस्थानविशेषम् ॥ साहत्थे त्ति स्वहस्तेनैव[७], स्वहस्तेन साक्षादित्यर्थः ॥ महासार्थवाहालापकानन्तरं पुस्तकान्तरे इदमपरमधीयते । "आगए णं, देवाणुप्पिया, इहं महाधम्मकही[८]" । "के णं, देवाणुप्पिया, महाधम्मकही[८] ?" । "समणे भगवं महावीरे महाधम्मकही" । "से केणट्ठेणं समणे भगवं महावीरे महाधम्मकही[८] ?" । "एवं खलु सद्दालपुत्ता, समणे भगवं महावीरे महइमहालयंसि[९] संसारंसि बहवे जीवे[१०] नस्समाणे जाव विलुप्पमाणे उम्मग्गपडिवन्ने सप्पहविप्पणट्ठे मिच्छत्तबलाभिभूए अट्ठविहकम्मतमपडलपडोच्छन्ने[११] अट्ठेहि य हेऊहि य पसिणेहि य कारणेहि[१२] य वागरणेहि य चाउरन्ताओ संसारकन्तारात्रो साहत्थिं नित्थारेइ । से तेणट्ठेणं, सद्दालपुत्ता, समणे भगवं महावीरे महाधम्मकहि[१३]" त्ति । कण्ठ्योऽयम्, नवरं जीवानां नश्यदादिविशेषणहेतुदर्शनायाह[१४] उम्मग्गेत्यादि । तत्रोन्मार्गप्रतिपन्नानाश्रितकुदृष्टिशासनात्, सत्पथविप्रनष्टान्यक्तजिनशासनात्[१५] । एतदेव कथमित्याह । मिथ्यात्वबलाभिभूतान्, तथाष्टविधकर्मैव तमः, पटलमन्धकारसमूहः, तेन प्रत्यवच्छन्-

---

१ e छिद्यमानान् । २ e adds भिद्यमानान् । ३ e कर्णनाशादि० । ४ e वाह्योपध्युपहारतः । ५ a f ना, e गाव । ६ e ०माहावाडं । ७ e स्वहस्तेनैव । ८ e ०धम्मकहा । ९ e ०महालियंहि । १० a f om. जीवे । ११ e पडाच्छन्ने । १२ a f करणेहि । १३ e ०धम्मकह । १४ e ०हेतुं दर्श० । १५ a ०त्युक्तजिन० ।

न्नानिति[1] ॥ तथा निर्यामकालापके बुड्डमाणे त्ति निमज्जतः। निवुड्डमाणे त्ति नितरां निमज्जतः, जन्ममरणादिजले इति गम्यते। उप्पियमाणे त्ति उत्प्लाव्यमानान् ॥

॥ २१९ ॥ पभु त्ति प्रभवः समर्थाः ॥ इतिच्छेकाः इत्येवमुपलभ्यमानाद्भुतप्रकारेण, एवमन्यत्रापि। छेकाः प्रस्तावज्ञाः[2] कलापण्डिता इति वृद्धा व्याचक्षते ॥ तथा इतिदक्षाः कार्याणामविलम्बितकारिणः ॥ तथा इतिप्रष्ठाः[3] दक्षाणां प्रधाना वाग्मिन इति वृद्धैरुक्तम् ॥ क्वचित्पत्तट्ठा इत्यधीयते[4]। तच प्राप्तार्थाः कृतप्रयोजनाः ॥ तथा इतिनिपुणाः सूक्ष्मदर्शिनः कुशला इति च वृद्धोक्तम् ॥ इतिनयवादिनो नीतिवक्तारः[5] ॥ तथा इत्युपदेशलब्धाः, लब्धाप्तोपदेशा ॥ वचनान्तरे इतिमेधाविनः अपूर्वश्रुतग्रहणशक्तिमन्तः ॥ इतिविज्ञानप्राप्ताः अवाप्तसद्बोधाः ॥ से जहेत्यादि अथ यथानाम कश्चित्पुरुषः ॥ तरुणे त्ति वर्धमानवयाः,[6] वर्णादिगुणोपचित इत्यन्ये ॥ यावत्करणादिदं दृश्यम्। बलवं सामर्थ्यवान्। जुगवं युगं[7] कालविशेषः, तत्प्रशस्तमस्यास्तीति युगवान्। दुष्टकालस्य[8] बलहानिकरत्वात्तद्व्यवच्छेदार्थमिदं विशेषणम्। जुवाणे त्ति युवा वयःप्राप्तः[9]। अप्पायङ्के[10] त्ति नीरोगः। थिरग्गहत्थे[11] त्ति सुलेखकवदस्थिराग्रहस्तो हि[12] न गाढग्रहो भवतीति विशेषणमिदम्। दृढपाणिणाए[13] त्ति

---

१ e प्रत्यवच्छिन्नानिति। २ e pref. प्रशस्तकाः। ३ a e ०प्रष्टाः। ४ e इत्यभिधियते। ५ e नीतेर्वक्तारः। ६ e प्रवर्द्धमान०। ७ a f जुगं, e जुगः। ८ e pref. न दुष्टकालवती (दुष्टकालवान्?)। ९ e युवावयः प्रायः (sic). १० Skr. अल्पातङ्कः। ११ e थिरग्गहे। १२ a f स्थितगाढ०। १३ e दृढ०।

प्रतीतम्। पासपिट्ठन्तरोरुपरिणए त्ति पार्श्वौ च पृष्ठान्तरे च तद्विभागौ ऊरू[1] च परिणतौ निष्पत्तिप्रकर्षावस्थां गतौ यस्य स तथा, उत्तमसंहनन इत्यर्थः। तलजमलजुयलपरिघनिभबाहू त्ति तलयोस्तालाभिधानवृक्षविशेषयोः यमलयोः[2] समश्रेणीकयोर्युगलं, परिघस्यार्गला तन्निभौ[3] तत्सदृशौ बाहू यस्य स तथा, आयतबाहुरित्यर्थः। घणनिचयवट्टपालिखन्धे त्ति घननिचितोऽत्यर्थं निविडो दृढश्च वृत्तश्च[4] वर्तुलः, पालिवत्तडागादिपालीव[5] स्कन्धो ऽंशदेशो यस्य स तथा। चम्मेट्ठगदुहणमोट्ठियसमाहयनिचियगायकाए[6] त्ति चर्मेष्टका दृष्टका[7] शकलादिभृतचर्मकुतपरूपा[8], यदाकर्षणेन धनुर्धरा व्यायामं कुर्वन्ति, द्रुघणो[9] मुद्गरो मौष्टिको मुष्टिप्रमाणः प्रोतचर्मरज्जुकः पाषाणगोलकस्तैः समाहतानि व्यायामकरणप्रवृत्तौ सत्यां ताडितानि निचितानि[10] गाचाण्यङ्गानि[11] तच्च स तथा, स एवंविधः कायो यस्य स तथा, अनेनाभ्यासजनितं सामर्थ्यमुक्तम्। लङ्घणपवणजइणवायामसमत्थे त्ति लङ्घनं चातिक्रमणं प्लवनं चोत्प्लवनं जविनव्यायामश्च तदन्यः शीघ्रव्यापारलेषु समर्थो यः स तथा। उरस्सबलसमागए त्ति अन्तरोत्साहवीर्ययुक्त[12] इत्यर्थः। छेए[13] त्ति प्रयोगज्ञः[14]। दक्खे

---

१ ऊरू। २ a f यमलयोः। ३ a f परिघ अर्गला०। ४ a f om. ५ e °पालीवत्स्कन्धो। ६ a f चम्मेट्ठदुह०; a e °निचितगाय०। ७ e इष्टिका। ८ e °कुतुप०। ९ e द्रुघनको। १० a f have only च for निचितानि। ११ a f गाचाणांगानि, e गाचान्यङ्गानि। १२ a अन्तरोत्साहचार्य्ययुक्त। १३ a f छए, e छेद्र। १४ a f प्रयोगज्ञा।

त्ति शीघ्रकारी[1]। पत्तट्ठे[2] त्ति अधिकृतकर्मणि निष्ठाङ्गतः प्राप्तार्थः, प्रज्ञ इत्यन्ये। कुसले त्ति आलोचितकारी। मेहावि[3] त्ति सकृद्दृष्ट-श्रुतकर्मज्ञः[4]। निउणे त्ति उपायारम्भकः। निउणमिप्पोवगए त्ति सूक्ष्मबुद्ध्यसमन्वित इति॥ अजं वा कुक्कुडं,[5] एलकं वा उरभं, सूकरं[6] वा वराहं,[7] कुक्कुटतित्तिरवर्तकलावकपोतकपिञ्जलवायस-श्येनकाः[8] पक्षिविशेषा लोकप्रसिद्धाः॥ हत्थंसि व त्ति यद्यथजादीनां हस्तो न विद्यते, तथाप्यग्रेतनपादो[9] हस्त इव, हस्त[10] इति कृत्वा हस्ते वेत्युक्तम्। यथासम्भवं चैषां हस्तपादखुरपिच्छशृङ्ग-विषाणरोमाणि योजनीयानि। पिच्छं पक्षावयवविशेषः। शृङ्ग-सिंहाजैडकयोः प्रतिपत्तव्यम्। विषाणशब्दो यद्यपि गजदन्ते रूढ-स्तथापीह शूकरदन्ते[12] प्रतिपत्तव्यः साधर्म्यविशेषादिति॥ निच्चल-मचलं सामान्यतो, निप्फन्दं किञ्चिच्चलनेनापि रहितम्॥

॥ २२२॥ आघवणाहि य त्ति आख्यानैः[13]। पन्नवणाहि-भेदतो[14] वस्तुप्ररूपणाभिः। सञ्ज्ञापनाभिः सञ्ज्ञानजननैः। विज्ञा-पनाभिरनुकूलभणितैः॥

इति सप्तमाध्ययनविवरणं[15] समाप्तम्[16]॥

---

१ a शीघ्रकारा, f शीघ्रकारो। २ a f पत्तट्ठि। ३ Skr. मेधाविन्। ४ a e om. श्रुत। ५ e ऽजगलं। ६ a f सूकरं। ७ e वाराहं। ८ a f ०कविंजल० ; a f ०सेल्हकाः, e ०सेपहकाः। ९ e ०पादो। १० e हस्त। ११ e हस्त इवेत्युक्तं। १२ a f सूकर०। १३ e ऽआख्यातैः। १४ e प्रज्ञापनादिभिर्। १५ a f सप्तमे-ध्ययन०, e सप्तममध्ययन०। १६ a f om.

## अष्टममध्ययनम् ॥

अष्टममपि सुगमं, तथापि किमपि तच्च लिख्यते ॥

॥ २३२ ॥ सकांसाओ त्ति सह कांस्येन द्रव्यमानविशेषेण यास्ताः सकांस्याः[१] ॥

॥ २३३ ॥ कोलघरियाओ त्ति कुलगृहात्पितृगृहादागताः कौलगृहिकाः[२] ॥

॥ २३८ ॥ अन्तराणि य त्ति अवसरान्[३] । छिद्राणि विरलपरिवारत्वानि । विरहान् एकान्तानिति ॥

॥ २४० ॥ मंसलोलेत्यादि मांसलोला मांसलम्पटा । एतदेव विशिष्यते । मांसमूर्छिता तद्दोषानभिज्ञत्वेन मूढेत्यर्थः । मांसग्रथिता मांसानुरागतन्तुभिः सन्दर्भिता । मांसगृद्धा तद्भोगेऽप्यजातकाङ्क्षाविच्छेदा । मांसाध्युपपन्ना मांसैकाग्रचित्ता ॥ ततश्च बहुविधैर्मांसैश्च[४] सामान्यैस्तद्विशेषैश्च । तथा चाह[५] । सोल्लिएहि य त्ति शूल्यकैश्च[६] शूलसंस्कृतकैः, तलितैश्च[७] घृतादिनाग्नौ संस्कृतैः, भर्जितैश्चाग्निमात्रपक्वैः । सहेति गम्यते ॥ सुरां च काष्ठपिष्टनिष्पन्नाम् । मधु च चौद्रम् । [illegible] धातकीभवम[८] ।

प्रकारैर्विश्रम्भेण वा खादयन्तीति। कदाचिदेव परिभाजयन्ती स्वपरिवारस्य। परिभुञ्जाना सामस्त्येन विवक्षिततद्विशेषान्॥

॥ २४१ ॥ अमाघातो रूढिशब्दत्वात्[1], अमारिरित्यर्थः॥

॥ २४२ ॥ कोलघरिए त्ति कुलगृहसम्बन्धिनः॥

॥ २४६ ॥ गोणपोतकौ गौपुत्रकौ॥ उद्वेह त्ति विनाश्रयत॥ मत्त त्ति सुरादिमदवती॥ खलिता मदवशेन घूर्णिता स्खलत्पदेत्यर्थः॥ विकीर्णाः विच्छिन्नाः केशा यस्याः सा तथा॥ उत्तरीयकं उपरितनवसनं विकर्षयन्ती॥ मोहोन्मादजनकान्[2] कामोद्दीपकान्[3]। शृङ्गारिकान् शृङ्गाररसवतः। स्त्रीभावान्[4] कटाक्षसन्दर्शनादीन्, उपसन्दर्शयन्ती॥ हं भो त्ति आमन्त्रणम्॥ महासवया इत्यादेर्विहरसीति पर्यवसानस्य रेवतीवाक्यस्यायमभिप्रायो, ऽयमेवास्य स्वर्गो मोक्षो वा यन्मया सह विषयसुखानुभवनं,[5] धर्मानुष्ठानं हि विधीयते स्वर्गाद्यर्थं, स्वर्गादिरिष्यते सुखार्थं, सुखं चैतावदेव तावद्दृष्टं यत्कामासेवनमिति। भणन्ति च।

जइ नत्थि तत्थ सीमंतिणीउ[6] मणहरपियङ्गुवण्णाओ।

[illegible][7] सो मोक्खो॥

तथा।

द्विरष्टवर्षा योषित्पञ्चविंशत्यादिकः[1] पुमान्।
अनयोर्निरन्तरा[2] प्रीतिः स्वर्ग इत्यभिधीयते॥

॥ २५५ ॥ अलसएणं ति विषूचिका[3] विशेषलक्षणेन। तल्लक्षणं चेदम्।

नोर्ध्वं व्रजति नाधस्तादाहारो न च पच्यते।
आमाशये[4] ऽलसीभूतस्तेन सो ऽलसकः स्मृतः॥

इति॥

॥ २५६ ॥ हीणे[5] त्ति प्रीत्या हीनः त्यक्तः॥ अवज्झाय त्ति अपध्याता[6] दुर्ध्यानविषयीकृता॥ कुमारेणं[7] ति दुःखमृत्युना॥

॥ २५९ ॥ नो खलु कप्पइ गोयमेत्यादि। सन्तेहिं ति सद्भिर्विद्यमानार्थैः। तच्चेहिं ति तथ्यैस्तत्त्वरूपैर्वानुपचारिकैः[8]। तहिएहिं ति तमेवोक्तं[9] प्रकारमापन्नैर्न मात्रयापि न्यूनाधिकैः किमुक्तं भवति। सद्भूतैरिति। अनिष्टैरवाञ्छितैः। अकान्तैः स्वरूपेणाकमनीयैः। अप्रियैरप्रीतिकारकैः। अमनोज्ञैर्मनसा न ज्ञायन्ते नाभिलष्यन्ते[10] वक्तुमपि यानि तैः। [illegible] च मद्यविशेषम्। मद्यं च [illegible] चिन्तयापि यानि तै[illegible] साधु[9] च तद्विशेषम्[10]। प्रसन्नां[11] च सुराविशेषम्॥ [illegible]र्थः॥ आस्वादयन्ती इषत्स्वादयन्ती। कदाचिद्विस्वादयन्ती[12] विविध-

---

१ a संकांस्याः। २ a f ०गृहिक्याः; ३ f pref. अवसराणि य त्ति। ४ e ०र्मांसैः om. च। ५ f वाह। ६ a f सूल्यकैश्च। ७ e सूलिभिश्च। ८ e ०प्रभवं। ९ e सौधुञ्च। १० e adds च। ११ a प्रथसन्नां, f प्रघसन्नां। १२ a e f कदाचित्स्वादयन्ती, but the following explanation of the term, as well as the form of the standing phrase (see footnote † on p. १४६) show that the correct reading must be विस्वादयन्ती।

प्राक्तननिश्चयविपर्ययलक्षणं गोशालमतानुसारिणां मतेन मिथ्यात्वं प्राप्त इत्यर्थः । अथवा कलुषभावं जितो अहमनेनेति खेदरूपमापन्न इति ॥ नो संचाएइ[1] त्ति न शक्नोति । पामोक्खं ति प्रमोक्षमुत्तरमाख्यातुं भणितुमिति ॥

॥ १७४ ॥ गिहमज्झावसमन्ता[2] णं ति गृहं[3] अध्यावसन्तो, णमिति वाक्यालङ्कारे[4] । अन्ययूथिकान् अन्यैर्जीवादिभिः सूत्राभिधेयैर्वा । हेतुभिश्चान्वयव्यतिरेकलक्षणैः । प्रश्नैश्च परप्रश्नानीयपदार्थैः[5] । कारणैरुपपत्तिमात्ररूपैः । व्याकरणैश्च परेण प्रश्नितस्योत्तरदानरूपैः ॥ निप्पट्ठपसिणवागरणे[6] त्ति निरस्तानि सृष्टानि व्यक्तानि[7] प्रश्नव्याकरणानि येषां, ते निःसृष्टप्रश्नव्याकरणाः[8], प्राकृतत्वाद्वा निष्पिष्टप्रश्नव्याकरणास्तान् कुर्वन्ति ॥ सक्का पुण त्ति शक्या एव ॥ हे आर्याः अमणैरन्ययूथिका निःसृष्टप्रश्नव्याकरणाः कर्तुम् ॥

॥ इति षष्ठं विवरणतः समाप्तम् ॥

LIBRARY OF THE BOMBAY BRANCH OF THE ROYAL ASIATIC SOCIETY

---

१ a f संचाइए । २ f गिहिमज्झा० । ३ e गेहमध्यावसंतो । ४ a f om. वाक्य । ५ e ०प्रश्नीय० । ६ e निप्पिट्ठपसिण० । ७ e adds वागरणानि after व्यक्तानि । ८ e निस्सट्ठ० ।

00044379

Digitized with financial assistance from the
Government of Maharashtra
on 23 January, 2019